وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ

तिब्ब-ए-पाकिस्तानी

(Tib-e-Pakistani)

कानून मुफर्द आज़ा (तिब्ब-ए-पाकिस्तानी) के छात्रों के लिए एक बुनियादी, आसान, संक्षिप्त मगर व्यापक प्रारंभिक चिकित्सा पुस्तक।

लेखक:
हकीम सैयद अब्दुल वहाब शाह शिराजी

واذا مرضت فهو يشفين

तिब्ब-ए-पाकिस्तानी

कानून मुफर्द आज़ा (तिब्ब-ए-पाकिस्तानी) के छात्रों के लिए एक बुनियादी, आसान, संक्षिप्त मगर व्यापक प्रारंभिक चिकित्सा पुस्तक।

लेखक:
हकीम सैयद अब्दुल वहाब शाह शिराजी

जरूरी नोट:

जेरे-नजर किताब "तिब्ब-ए-पाकिस्तानी" (طب پاکستانی) का असल मतन (Text) उर्दू में है, जिसे हिंदी भाषा में गूगल जेमिनाई (AI) के जरिए मुंतकिल (Transfer) किया गया है। तर्जुमे में गलती या असल मफहूम (Meaning) के तब्दील होने का एहतमाल (संभावना) मौजूद है। लिहाजा, किसी भी गलतफहमी से बचने के लिए असल उर्दू किताब का मुतालिया करें, उसे ही हतमी (Final) तसव्वुर किया जाएगा।

सूची

सूची _____ 2

प्रस्तावना _____ 5

कठिन शब्दावली _____ 8

इंसान की परिभाषा _____ 16

मानव शरीर की चिकित्सीय व्याख्या _____ 18

अंगों के प्रकार और उनके कार्य _____ 26

कानून मुफर्द आज़ा (LAW OF SINGLE ORGANS) _____ 29

पाकिस्तानी मेडिसिन के बेसिक प्रिंसिपल्स _____ 30

स्वास्थ्य और बीमारी की अवस्था _____ 31

आलम-ए-अकबर) Universe) और आलम-ए-असग़र) Human Body) में समानता _____ 38

कानून मुफर्द आज़ा (LAW OF SINGLE ORGANS) में रोग का स्थान क्या है? _____ 41

मुफर्द आज़ा (SIMPLE ORGANS) का एक-दूसरे से संबंध _____ 46

मुफर्द आज़ा के कार्य (Functions of Simple Organs) _____ 47

मरज़ के अस्बाब (Causes of Disease) _____ 50

मरज़ की अलामात (Symptoms of Disease) _____ 53

तशरीह-ए-अमराज़ (DIAGNOSIS OF DISEASES) _____ 56

1. नब्ज़ से तशरीह (Diagnosis by Pulse) _____ 57

मुफ़र्द नब्ज़) Simple Pulses) _____ 59

मुरक्कब नब्ज़ (Compound Pulse) _____ 60

कारूरा (पेशाब) से तशरीह _____ 67

मशीनी तहरीक और कीमियाई तहरीक के असरात (Effects of Mechanical and Chemical Stimulation)_____ 70

बराज़ (पाख़ाना) से तशरीह (Diagnosis via Stool) _____ 73

मुँह का ज़ायका और तशरीह (Diagnosis by Taste) _____ 75

ज़बान से तशरीह (Diagnosis by Tongue)_____ 75

जिस्म की रंगत से तशरीह (Diagnosis by Body Color)_____ 77

बलग़म से तशरीह (Diagnosis by Phlegm)_____ 77

बालों से तशरीह (Diagnosis by Hair) _____ 78

ग़िज़ाओं का मिज़ाज (TEMPERAMENT OF FOODS) _____ 79

इंसानी जिस्म पर तहरीक के असरात के मक़ामात (Locations of Stimulation Effects)_____ 87

इलाज का उसूल (PRINCIPLE OF TREATMENT)_____ 89

फ़ार्माकोपिया कानून मुफ़्रद अज़ा _____92

अदवियाती इस्तलाहात _____104

कुछ परीक्षित नुस्खे (सिद्ध औषधियाँ)_____107

औषधि की परिभाषा _____109

सिद्ध औषधियों (مجربات) की वास्तविकता _____120

आयुर्वेद में सिद्ध औषधियों का उपयोग _____122

होम्योपैथी में सिद्ध औषधियों का उपयोग _____124

चिकित्सा पद्धति कानून मुफ़्रेद अज़ा (طب پاکستانی) में सिद्ध औषधियों की विशेषता ____125

3. मिश्रित औषधियों द्वारा उपचार (علاج بالمرکبات)_____133

मानव शरीर के तीन विष_____136

प्रस्तावना

चिकित्सा (तिब्ब) के छात्रों के लिए इस प्रारंभिक पुस्तक का नाम "तिब्ब-ए-पाकिस्तानी" आपके लिए एक नया नाम होगा। वास्तव में यह नाम नया ही है, इससे पहले मैंने भी यह नाम नहीं सुना था। असल में, कुछ महीने पहले की बात है, एक दिन मैं सोच-विचार कर रहा था तो मेरे मन में यह बात आई कि 'तिब्ब-ए-यूनानी' यूनान (Greece) की ओर इशारा करती है और वहीं से आई है; इसी तरह 'तिब्ब-ए-नबवी' हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) की ओर संकेत करती है। दुनिया में चिकित्सा के और भी कई तरीके और सिद्धांत पाए जाते हैं, जैसे चीनी चिकित्सा, जापानी चिकित्सा आदि। इसलिए, 'कानून मुफर्द आज़ा' को भी हमें तिब्ब-ए-पाकिस्तानी (कानून मुफर्द आज़ा) कहना चाहिए, क्योंकि चिकित्सा का यह सिद्धांत पूरी तरह से एक पाकिस्तानी आविष्कार है।

हकीम साबिर मुल्तानी (रह.) एक पाकिस्तानी व्यक्तित्व थे, उन्होंने पाकिस्तान में ही शिक्षा प्राप्त की, फिर अपनी खोज और शोध (Research) पाकिस्तान में की, और हज़ारों वर्षों से चली आ रही यूनानी चिकित्सा को आधुनिक तरीके से संवारा। उन्होंने इस पर जितनी भी खोज की, शोध किया, वाद-विवाद किए और जितना कुछ भी लिखा, पढ़ा या पढ़ाया, वह सारा काम पाकिस्तान में ही किया। इसके बाद उन्होंने व्यावहारिक रूप से इस सिद्धांत का अभ्यास (Practice) किया और पिछले 40-50 वर्षों में यह सिद्धांत हज़ारों पाकिस्तानी हकीमों के व्यावहारिक अभ्यास में रहा है। आज स्थिति यह है कि यूनानी चिकित्सा कॉलेजों में केवल औपचारिकता के लिए प्रवेश लेकर चार साल का 'फाज़िल तिब्ब-वल-जराहत' (BAMS) करने वाले छात्र भी स्नातक होने के बाद व्यावहारिक रूप से इसी तिब्ब-ए-पाकिस्तानी (कानून मुफर्द आज़ा) के तहत अभ्यास करते हैं। उन्हें कॉलेजों से न तो वास्तविक ज्ञान मिलता है और न ही व्यावहारिक अनुभव, इसलिए वे तब तक दिशाहीन रहते हैं जब तक कि वे 'कानून मुफर्द आज़ा' को न सीख लें।

इन तमाम बातों को ध्यान में रखते हुए मेरे मन में यह विचार आया कि यह हम पाकिस्तानी कौम के लिए किसी सम्मान से कम नहीं है कि इतना बड़ा इंक़लाब और महान मार्गदर्शन हमें एक पाकिस्तानी ने दिया। इसलिए मैंने यह निर्णय लिया कि भविष्य में मैं इसे 'तिब्ब-ए-पाकिस्तानी' ही कहूँगा। इसके तुरंत बाद मैंने फेसबुक खोला और अपनी आईडी, अपने पेजों और चिकित्सा से संबंधित अन्य ग्रुपों में एक पोस्ट साझा की कि सभी हकीमों से अनुरोध है कि वे 'कानून मुफर्द आज़ा' को भविष्य में 'तिब्ब-ए-पाकिस्तानी' कहा करें। यह एक-दो महीने पहले की बात है, मुझे नहीं पता कि मेरी यह बात कितने लोगों को पसंद आई और उन्होंने इसे 'तिब्ब-ए-पाकिस्तानी' कहना शुरू किया या नहीं, लेकिन मैं तो इसके बाद से जहाँ भी 'कानून मुफ्र्द आज़ा' लिखता हूँ, साथ में ब्रैकेट में (तिब्ब-ए-पाकिस्तानी) भी लिखता हूँ। मुझे आशा है कि अगले कुछ वर्षों में यह नाम हर किसी की ज़बान पर होगा। इससे न केवल देश का नाम रोशन होगा, बल्कि यह सरकारी स्तर पर इसे मान्यता दिलाने में भी मददगार साबित होगा। अब जब मैं इस सिद्धांत के छात्रों के लिए यह छोटी सी प्रारंभिक पुस्तिका लिख रहा हूँ, तो मैंने सोचा कि इसका नाम भी 'तिब्ब-ए-पाकिस्तानी' ही रख लेना चाहिए ताकि कम से कम इस पुस्तक को पढ़ने वालों के मन में तो यह नाम पक्का हो जाए।

इस पुस्तक को लिखने का उद्देश्य बहुत ही सरल तरीके और संक्षिप्त शब्दों में तिब्ब-ए-पाकिस्तानी (कानून मुफर्द आज़ा) को समझाना है, ताकि न केवल हकीम बल्कि आम लोग भी यदि इसे समझना चाहें तो उनके लिए कोई कठिनाई न हो। मेरा अनुभव यह है कि एक आम व्यक्ति भी, जिसे चिकित्सा में थोड़ी भी रुचि हो, वह इस पुस्तक को पढ़ने और शिक्षकों से कुछ चीजें सीखने के बाद 'कानून मुफर्द आज़ा' को समझ सकता है। यह पुस्तक चिकित्सा का पूरा ज्ञान नहीं है, बल्कि इसकी हैसियत एक प्रारंभिक 'कायदे' (Primer) जैसी है। जैसे कोई व्यक्ति यदि सीधे कुरान सीखना चाहेगा तो उसके लिए यह बहुत कठिन, बल्कि असंभव होगा; पहले उसके लिए 'कायदा' पढ़ना ज़रूरी है। जब वह 'कायदा' पढ़

लेता है, तो उसे अक्षरों की पहचान और उन्हें आपस में जोड़ने की समझ आ जाती है, जिसके बाद कुरान सीखना आसान हो जाता है। या जैसे कोई अंग्रेजी की किताब सीधे नहीं सीख सकता, पहले उसे A, B, C सीखनी पड़ती है और अक्षरों को याद करना होता है, उसके बाद ही वह अंग्रेजी की किताब आसानी से समझ सकता है। इसी तरह, इस पुस्तक का उद्देश्य भी यही है कि चिकित्सा की बड़ी और विस्तृत किताबों को समझने से पहले इसकी बुनियादी बातें और उनका अर्थ मन में बैठ जाए ताकि आगे चलकर बड़ी किताबों को पढ़ने में आसानी हो सके।

हकीम सैयद अब्दुल वहाब शाह वर्तमान निवासी: इस्लामाबाद

अक्टूबर 2024

+92 347 0005578

कठिन शब्दावली

चिकित्सा (तिब्ब) में कुछ शब्दों का बार-बार उपयोग किया जाता है और वे बोले जाते हैं। चूंकि ये शब्द अरबी या फारसी भाषा के हैं, इसलिए कई लोगों को इनका अर्थ और मतलब समझ में नहीं आता है। इसलिए, सबसे पहले इनका अर्थ समझ लें:

करी) Cartilage - उपास्थि:(

'करी' को 'गुज़रूफ़' (Cartilage) भी कहा जाता है। यह एक सफेद अंग है जिसमें हड्डी (Bone) की तुलना में अधिक लचीलापन (Flexibility) और कोमलता (Softness) होती है। यह दबाने से दब जाती है, मगर दबाव (Pressure) हटने पर अपने लचीलेपन के कारण अपनी असली स्थिति में आ जाती है। सरल शब्दों में, यह एक नरम हड्डी (Soft Bone) है।

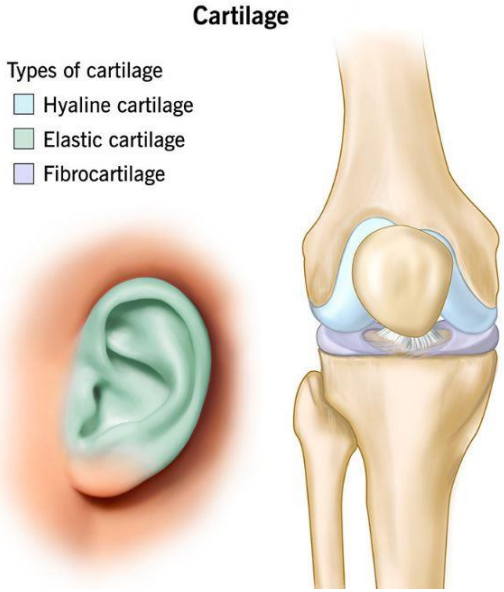

आसाब) Nerves - तंत्रिकाएं:(

आसाब (Nerves) सफेद रंग की संरचनाएं हैं जो मुड़ने में लचीली (Flexible) होती हैं, और टूटने में सख्त (Brittle) होती हैं।

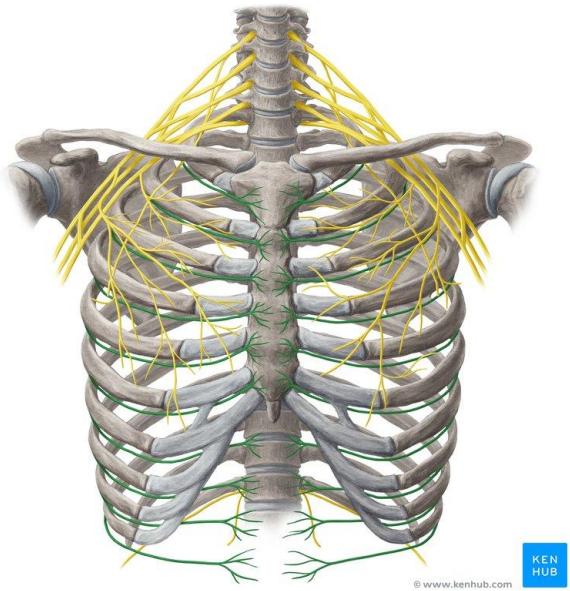

औतार) Tendons - कंडरा:(

औतार (Tendons) को 'नसें' भी कहा जाता है। ये वे संरचनाएं हैं जो कुछ अंगों के सिरों से निकलती हैं और रंग व बनावट (Color and Texture) में पट्ठों (Muscles) के समान होती हैं। ये उन अंगों से जुड़ी होती हैं जो गति (Movement) करते हैं।

रिबातात) Ligaments - स्नायुबंधन:(

'रिबात' का अर्थ है 'बंधन'। ये वे संरचनाएं हैं जो रंग और बनावट में पट्ठों (Muscles) के समान होती हैं। ये हड्डी (Bone) से शुरू होती हैं और मांस (Flesh) में समाप्त होती हैं। इनका लाभ यह है कि ये जोड़ों (Joints) की हड्डियों के दोनों सिरों को या अन्य अंगों को आपस में मिलाते और बांध देते हैं।

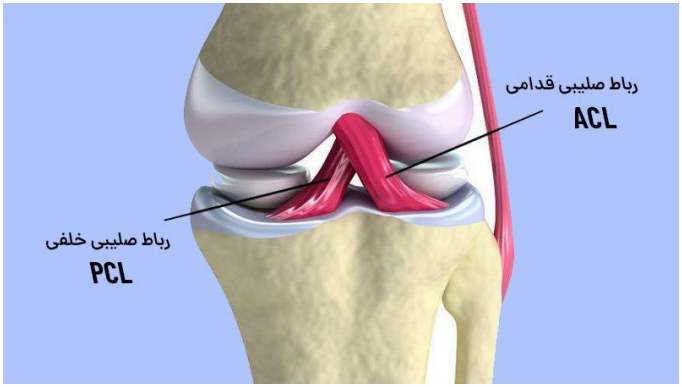

अजलात) Muscles - मांसपेशियां:(

अज़लात शुद्ध मांस (Pure Flesh) हैं, हालांकि इनके भीतर से तंत्रिकाएं (Nerves), कंडरा (Tendons) और स्नायुबंधन (Ligaments) गुजरते हैं। इनका लाभ यह है कि इन्हीं से शरीर की गति (Movement) संभव होती है। ये हड्डियों

के लिए आवरण (Covering) का काम करते हैं और शरीर की प्राकृतिक गर्मी (Natural Heat) और प्राकृतिक नमी (Natural Moisture) को सुरक्षित रखते हैं।

शराइन) Arteries - धमनियाँ :(

इनको 'उरूके ज़्वारिब' (Pulsating Vessels) यानी धड़कने वाली रगों के नाम से जाना जाता है। इनमें साफ़ खून चलता है।

वरीदें) Veins - शिराएँ :(

इनको 'उरूके ग़ैर ज़्वारिब' (Non-Pulsating Vessels) यानी शांत या न धड़कने वाली रगें कहा जाता है। इनमें भी खून चलता है।

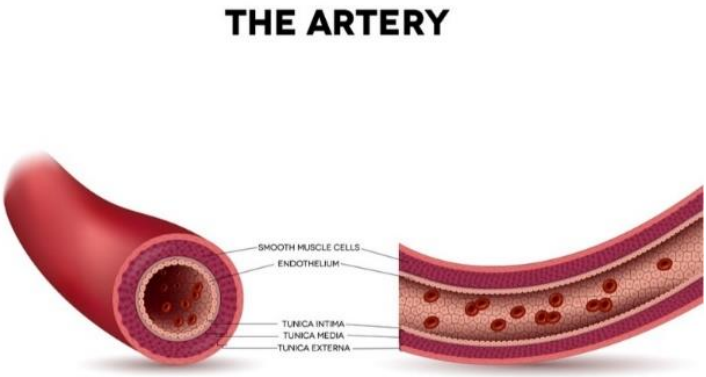

ग़िशा) Membrane - झिल्ली :(

'ग़िशा' का अर्थ है झिल्ली। यह संरचना भी तंतुओं (Tissue-like) से बनी होती है और आकार में पतली होती है। इसमें स्वयं हिलने-डुलने (गति) की शक्ति नहीं होती, अलबत्ता महसूस करने की शक्ति (Sensation) होती है। इसका लाभ यह है कि यह अपने स्राव (Secretion) के माध्यम से अंगों (Organs) की रक्षा करती है।

शहम) Fat - चर्बी :(

'शहम' का अर्थ है चर्बी। ये सफेद और बहुत ही कोमल (Soft) संरचनाएं होती हैं। ये खून की तरलता (Fluidity) और चिकनाहट से पैदा होती हैं। ये सर्दी से जम जाती हैं और गर्मी मिलने पर पिघल जाती हैं।

ग़रीज़ी :

चिकित्सा (तिब्ब-ए-पाकिस्तानी (कानून मुफर्द आज़ा)) में 'ग़रीज़ी' या 'ग़रीज़ा' शब्द का बहुत अधिक उपयोग होता है, जैसे: हरारते ग़रीज़ी (प्राकृतिक गर्मी), रुतूबते ग़रीज़िया (प्राकृतिक नमी) आदि। 'ग़रीज़ी' का अर्थ होता है: असली, प्राकृतिक, जन्मजात, कुदरती या स्वाभाविक।

अजाये रईसा (Vital Organs):

'अज़ाये रईसा' उन अंगों को कहा जाता है जिन पर जीवन का अस्तित्व और जीवन का आधार निर्भर है। यानी इनके बिना जीवित रहना कठिन बल्कि असंभव है, जैसे: दिल (हृदय), दिमाग (मस्तिष्क) और जिगर (यकृत)।

अल-कैमूस) Chyme):

यह वह तरल (Fluid) है जो आमाशय (Stomach) में भोजन पचने के बाद बनता है। भोजन का वह रूप जो पाचन (Digestion) के दूसरे चरण के दौरान पानी की तरह दिखाई देता है। साथ ही वह पदार्थ जो जिगर (Liver) और रगों में पककर दूध के झाग जैसी शक्ल अख्तियार कर लेता है। यह आमाशय में भोजन के पाचन की दूसरी मंज़िल या दूसरा चरण (Phase) है।

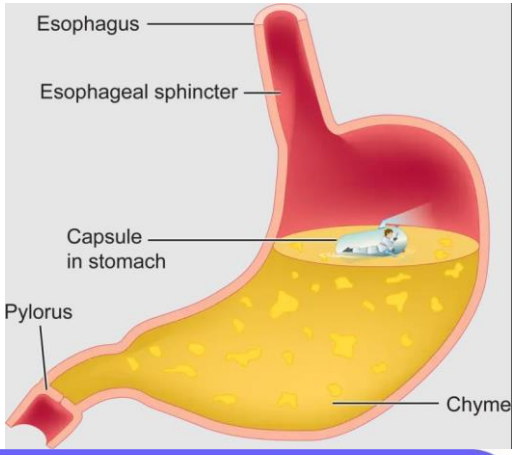
Esophagus
Esophageal sphincter
Capsule
in stomach
Pylorus
Chyme

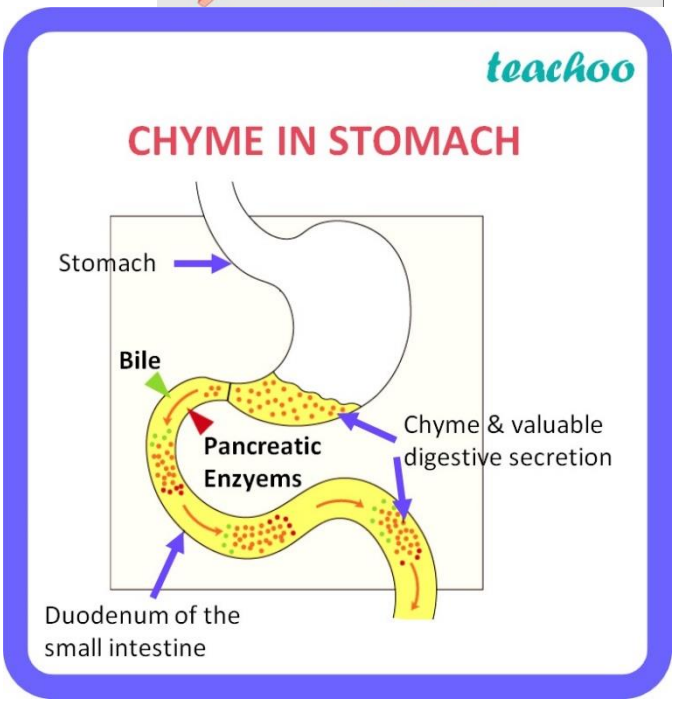
teachoo
CHYME IN STOMACH
Stomach
Bile
Pancreatic
Enzyems
Chyme & valuable
digestive secretion
Duodenum of the
small intestine

अहतिबास) Retaining - रोकना/ठहराव :(

'अहतिबास' शब्द 'हब्स' (Constriction) से निकला है, जिसका अर्थ है पोषक तत्वों (Nutrients) और अपशिष्ट पदार्थों (Waste Products) का शरीर में रुकना। जैसे 'अहतिबास-उद-दम' (रक्त का रुकना या ठहरना)।

इस्तफ़राग़) Excretion - विसर्जन/निकासी :(

'इस्तफ़राग़' का अर्थ है हानिकारक पदार्थों (Substances) और अपशिष्ट पदार्थों (Waste Products) का शरीर से बाहर निकलना।

इनक़िबाज़) Contraction - संकुचन :(

'इनक़िबाज़' का अर्थ है किसी चीज़ का सिकुड़ना (Shrinking) या तंग होना (Narrowing)। यह क्रिया मांसपेशियों (पट्ठों) में भी होती है जब वे अपनी प्राकृतिक स्थिति में सिकुड़ते हैं।

इंसान की परिभाषा

इंसान तीन चीज़ों (शरीर, रूह और नफ्स) का मिश्रण है। शरीर (जिस्म) + रूह + नफ्स = इंसान

शरीर) जिस्म (की परिभाषा :

इंसान का शरीर त्वचा (खाल), मांस, विभिन्न सरल व जटिल अंगों और हड्डियों से बनी हुई एक ऐसी मशीन है, जो वे सभी कार्य करती है जिसके लिए इसे बनाया गया है।

रूह) Soul) की परिभाषा :

धार्मिक शब्दावली में रूह से तात्पर्य 'नफ्स-ए-नातिक़ा' (बोलने वाली आत्मा) है, लेकिन चिकित्सा शास्त्र (तिब्ब-ए-पाकिस्तानी (कानून मुफर्द आज़ा)) में रूह से तात्पर्य "तिब्बी रूह" है। यह वास्तव में उन सूक्ष्म वाष्पों (لطیف بخارات/Fine Vapors) को कहते हैं जो 'अख्लात' (शरीर के द्रवों) के सूक्ष्म हिस्से से पैदा होते हैं। आधुनिक एलोपैथी शरीर में 'रूह' (Spirits) को नहीं मानती, लेकिन वे गैसों (Gases) को मानते हैं; यही गैसें जो सूक्ष्म वाष्प होती हैं, 'अरवाह-ए-तिब्बी' (चिकित्सीय रूह) कहलाती हैं।

सरल शब्दों में हम कह सकते हैं कि एक जीवित प्राणी की रूह से तात्पर्य उसकी वह जीवन शक्ति (قوتِ حیات) है जो उसे निर्जीव वस्तुओं और मृत प्राणियों से अलग बनाती है। इसके लिए अंग्रेजी में "Spirit" शब्द का प्रयोग किया जाता है। रूह न दिखने वाली एक ऐसी शक्ति का नाम है जिससे इंसान का जीवन है। इसे और आसान शब्दों में यों समझें–जैसे कंप्यूटर शरीर है और उसमें 'विंडो' (Window) उसकी रूह है, या मोबाइल शरीर है और उसमें 'सॉफ्टवेयर' (एंड्रॉयड) उसकी रूह है। जैसे कंप्यूटर विंडो के बिना और मोबाइल सॉफ्टवेयर के बिना केवल एक ढांचा मात्र रह जाते हैं और कोई काम नहीं कर सकते, वैसे ही रूह भी इंसान का 'विंडो' या 'सॉफ्टवेयर' है जो उसे जीवित कर देता है।

नफ्स) Self) की परिभाषा :

शब्दकोश के अनुसार 'नफ्स' के कई अर्थ होते हैं: जैसे रूह, जान, किसी का व्यक्तित्व (ذات), शरीर, बुद्धि, इच्छा और हृदय आदि। ऊपर आपने शरीर और रूह की परिभाषा देखी; अब यों समझें कि जब शरीर और रूह को मिलाया जाता है, तो उनके इस मेल का नाम 'नफ्स' है (भौतिक शरीर + सूक्ष्म शरीर = नफ्स)। वास्तव में यही 'इंसान' होता है। नफ्स उस शक्ति का नाम है जिससे मनुष्य बुद्धि और समझ (तमीज़) प्राप्त करता है और सचेत (شعوری) व अचेत (غیر شعوری) भावनाओं को व्यक्त करता है।

इन तीनों चीज़ों (शरीर, रूह और नफ्स) के मिश्रण का नाम 'इंसان' है। या इसे ऐसे समझ लें कि शरीर एक मशीन है, रूह इसे चलाती है और नफ्स इसका निरीक्षक (Supervisor) है, जिसके पास यह चेतना है कि उसने शरीर को अच्छे रास्ते पर चलाना है या बुरे रास्ते पर।

मानव शरीर की चिकित्सीय व्याख्या

मानव जीवन कुछ ऐसे मामलों पर टिका है जिन्हें चिकित्सा विज्ञान (इल्म-ए-तिब्ब) में 'उमूर-ए-तबीया' (प्राकृतिक कारक) कहा जाता है, जो संख्या में सात हैं:

1. अरकान (तत्व) 2. मिज़ाज (प्रवृत्ति) 3. अख्लात (द्रव/Humors) 4. मुफर्द आज़ा (सरल अंग) 5. अरवाह (जीवन शक्ति/Spirits) 6. कवा (शक्तियाँ) 7. अफ़आल (कार्य/Functions)

मानव शरीर के "अंग" (आज़ा) तीन चीज़ों के मिश्रण से बनते हैं: (अरकान, मिज़ाज, अख्लात)। और फिर ये अंग अपने कार्यों को तीन ही चीज़ों के माध्यम से पूरा करते हैं: (अरवाह, कवा, अफ़आल)। अब इन सातों में से प्रत्येक को देख लेते हैं कि वे क्या हैं।

1. अरकान (Elements - तत्व) मानव शरीर इन चार बुनियादी तत्वों (अरकान) से अस्तित्व में आता है:

आग (अग्नि) 2. हवा (वायु) 3. पानी (जल) 4. मिट्टी (पृथ्वी)

आग (Fire):

आग गर्म और खुश्क (शुष्क) है। तिब्ब-ए-पाकिस्तानी (कानून मुफर्द आज़ा) की व्याख्या के अनुसार, इसे कोशिकाओं (Cells) में बनने वाली ऊर्जा 'ATP' माना जा सकता है। (Adenosine triphosphate (ATP) एक अणु है जो जीवित कोशिकाओं में कई प्रक्रियाओं के लिए ऊर्जा प्रदान करता है।)

2- हवा (Wind/Air):

हवा गर्म और तर (नम) है। चिकित्सा विज्ञान में इसे श्वसन प्रक्रिया (Breathing process) में अदला-बदली होने वाली हवाएँ माना जा सकता है।

3- पानी (Water):

पानी सर्द (ठंडा) और तर है। चिकित्सा विज्ञान में इसे रक्त का प्लाज्मा (Blood Plasma) और कोशिकाओं के बीच का तरल (Intercellular fluid) माना जा सकता है।

4- मिट्टी (Soil/Earth):

मिट्टी सर्द और खुश्क है। यदि जैव-रसायन (Biochemistry) के तहत देखा जाए, तो इसे खनिजों (Minerals) का विकल्प कहा जा सकता है।

इन चार तत्वों (Elements) से ही ब्रह्मांड की सभी वस्तुएं–वनस्पति (Plants), पशु-पक्षी (Animals) और खनिज (Minerals) बनते हैं। चाहे वह कोई जड़ी-बूटी हो, जैसे लहसुन, प्याज, पुदीना या कोई धातु हो जैसे सोना, चांदी, लोहा आदि, सब इन्हीं चार तत्वों से बनते हैं।

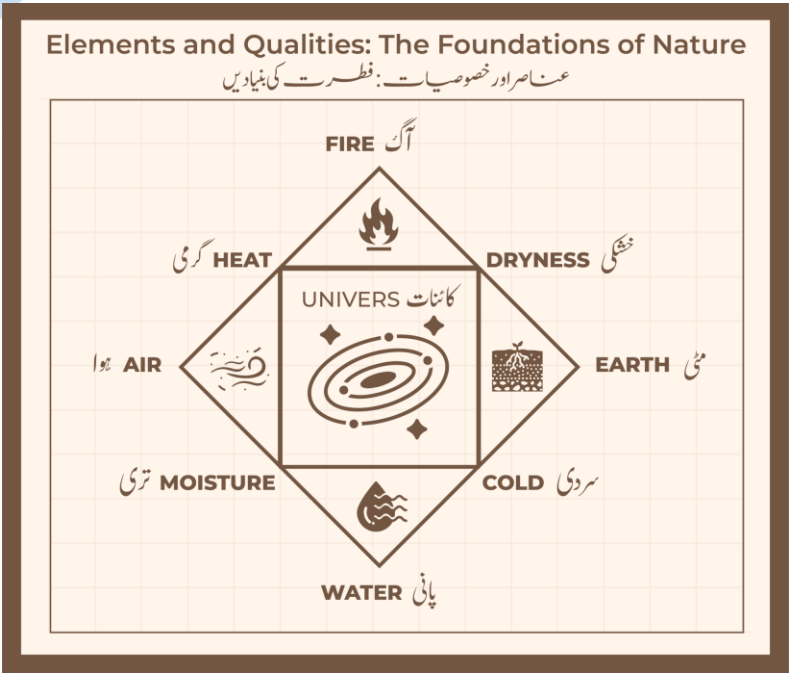

2. मिजाज (Temperament - प्रवृत्ति)

तत्वों (अरकान) के आपस में मिलने से एक विशेष प्रकृति पैदा होती है, जिसे मिज़ाज (Temperament) कहते हैं। मिज़ाज भी चार प्रकार के होते हैं:

गर्म 2. सर्द (ठंडा) 3. खुश्क (शुष्क) 4. तर (नम)

मिज़ाज मानव शरीर की वह अवस्था (Quality) है जो तत्वों (Elements) यानी बुनियादी अरकान के अत्यंत सूक्ष्म कणों में बदलने के बाद, आपस में एक-दूसरे के साथ जुड़ने (Compound formation) से पैदा होती है। इन्हीं चार मिज़ाजों के मेल से मानव शरीर में 'अख्लात' (Humors) बनती हैं।

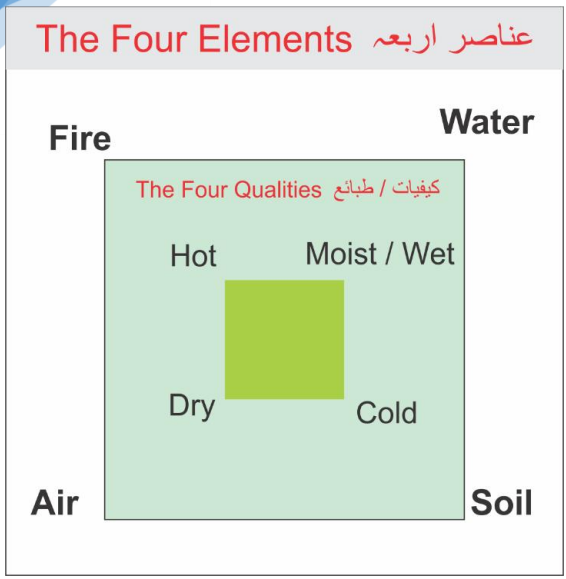

3. अख़्लात) Humors - शरीर के द्रव(

हम जो भी भोजन (ग़िज़ा) खाते हैं, शरीर में जाने के बाद उससे चार प्रकार की अख़्लात (Humors) बनती हैं। 'अख़्लात' शब्द 'ख़िल्त' (Chyle) का बहुवचन है। 'ख़िल्त' वह तरल पदार्थ है जो भोजन के पचने और उसमें बदलाव आने से शरीर में पैदा होता है, और यह चार प्रकार का होता है:

बल़ग़म (Phlegm)

सौदा (Black Bile)

स़फ़रा (Bile - पित्त)

इल्हाक़ी मादा (Humorous Substance - संयोजी पदार्थ)

ख़ून) रक्त (क्या है?

जब ऊपर बताई गई 'अख़्लात' आपस में मिलती हैं, तो उससे ख़ून बनता है। ख़ून ही मानव जीवन और स्वास्थ्य को बनाए रखने का ज़िम्मेदार है। चूंकि ख़ून अख़्लात का ही मिश्रण है, इसलिए वह अपने साथ सभी अख़्लात को लेकर

शरीर में घूमता रहता है, और जहाँ जिस अंग (Organ) को जिस ख़िल्त की ज़रूरत होती है, वहाँ उसे वह ख़िल्त भोजन के रूप में पहुँचाता है।

4. मुफर्द आजा) Simple Organs - सरल अंग(

जब ऊपर बताई गई 'अख्लात' (Humors) शरीर का रूप लेती हैं या जम जाती हैं, तो उन्हें 'मुफर्द आज़ा' कहा जाता है। इनका क्रम यह है कि अख्लात से कोशिकाएं (Cells) बनती हैं और कोशिकाओं से मुफर्द आज़ा (सरल अंग) बनते हैं। मुफर्द आज़ा की पहचान यह है कि यदि उसका कोई टुकड़ा तोड़ा जाए, तो उस टुकड़े का भी वही नाम होगा जो पूरे अंग का है, जैसे–हड्डी।

मानव शरीर में चार प्रकार के अंग (आज़ा) होते हैं:

आसाब (Nerves - तंत्रिकाएं) 2. अज़लात (Muscles - मांसपेशियां) 3. गुदद (Glands - ग्रंथियां) 4. हड्डियाँ (Bones), करियाँ (Cartilage), रिबात (Ligament), औतार (Tendons) आदि।

1. आसाब: मानव शरीर में सभी तंत्रिकाओं (आसाब) का जन्म 'ख़िल्त-ए-बल़ग़म' से होता है। आसाब का केंद्र 'दिमाग' (मस्तिष्क) है, और आसाब की खुराक बल़ग़म और रुतूबत (नमी) है। 2. अज़लात: मानव शरीर में सभी मांसपेशियों (अज़लात) का जन्म 'ख़िल्त-ए-सौदा' से होता है। अज़लात का केंद्र 'दिल' (हृदय) है, और अज़लात की उत्तरजीविता और आवश्यक खुराक सौदा है। 3. गुदद: मानव शरीर में सभी ग्रंथियों (गुदद) का जन्म 'ख़िल्त-ए-स़फ़रा' से होता है। गुदद का केंद्र 'जिगर' (यकृत) है, और गुदद की उत्तरजीविता और खुराक स़फ़रा से होती है। 4. हड्डियाँ, करियाँ, रिबात आदि: इनकी उत्पत्ति 'इल्हाक़ी मादा' (Humorous Substance) से होती है। यह हड्डियों और उनके सहायक तत्वों के रूप में मानव कंकाल (Skeletal System) बनाती है, जिस पर पूरा मानव शरीर टिका होता है।

सारांश (खुलासा):

इस पूरी चर्चा का सारांश यह है कि हम जो भी भोजन करते हैं, आमाशय (Stomach) में पचने के बाद उससे चार प्रकार की अख्लात बनती हैं। ये अख्लात रक्त (खून) का रूप लेकर पूरे शरीर में चक्कर लगाती हैं और जिस अंग की जो खुराक होती है, वह अंग रक्त से अपनी संबंधित खुराक को सोख (absorb) लेता है। इसी तरह यह चक्र चलता रहता है, जिससे मानव स्वास्थ्य और जीवन का पहिया घूमता है। यदि इसमें 'इफ़रात-ओ-तफ़रीत' यानी कमी या अधिकता हो जाए, तो उसी को बीमारी कहा जाता है।

5. अरवाह) Spirits - जीवन शक्ति(

'अरवाह' शब्द 'रूह' का बहुवचन है। रूह से तात्पर्य है: जीवन के वे सूक्ष्म अंश जो शुद्ध, हल्के और वाष्प (Vapors) के समान होते हैं और स्वयं एक तरल व नम 'ख़िल्त' (Humor) से पैदा होते हैं। यानी अरवाह वास्तव में अच्छे और साफ अख्लात (जिन्हें अख्लात-ए-महमूदा कहा जाता है) से बनने वाली भाप के समान मानव शरीर के अंग हैं, जो शरीर में विभिन्न प्रकार की शक्तियों (Forces) से जुड़े होते हैं।

मानव शरीर में तीन प्रकार की अरवाह पाई जाती हैं:

रूह-ए-नफ़्सानी 2. रूह-ए-तबीई 3. रूह-ए-हैवानी

रूह-ए-नफ़्सानी: यह तंत्रिकाओं (आसाब) में होती है, जिसका केंद्र दिमाग है।

रूह-ए-तबीई: यह ग्रंथियों (ग़ुदद) में होती है, जिसका केंद्र जिगर है।

रूह-ए-हैवानी: यह मांसपेशियों (अज़लात) में होती है, जिसका केंद्र दिल है।

लाभ:

इससे पता चला कि मानव शरीर में केवल एक ही रूह नहीं होती, बल्कि विभिन्न कार्यों के लिए विभिन्न प्रकार की अरवाह हैं। यह बिल्कुल वैसा ही है जैसे पहले उदाहरण दिया गया था कि मोबाइल एक शरीर है और उसका सॉफ्टवेयर उसकी रूह है। रूह डालने के बाद मोबाइल एक 'जीवित' मोबाइल बनता

है, लेकिन फिर भी वह सारे काम नहीं करता; अलग-अलग कामों के लिए हमें अलग-अलग रूहें (एप्लिकेशन) डालनी पड़ती हैं। जब संबंधित एप्लिकेशन इंस्टॉल होती है, तभी वह कार्य संभव हो पाता है।

इंसान में भी एक वह रूह होती है जिसे 'रूह-ए-इंसानी' कहा जाता है, और उसकी वास्तविकता क्या है, हम नहीं जानते; बस इतना जानते हैं कि यह ईश्वर का आदेश (अम्र-ए-रब्बी) है। जैसा कि पवित्र कुरान में कहा गया: "यसअलूनका अनिर-रूह, क़ुलिर-रूहु मिन अम्रि रब्बी" (वे आपसे रूह के बारे में पूछते हैं, कह दीजिए कि रूह मेरे रब का आदेश है)।

इस रूह को आप कंप्यूटर की 'विंडो' की तरह समझें, लेकिन शरीर के विभिन्न हिस्से तभी अपना-अपना काम करते हैं जब उनकी अपनी रूहें मौजूद हों। इसी आधार पर ऊपर बताई गई तीन अरवाह (नफ़्सानी, तबीई, हैवानी) मानव अंगों यानी आसाब, अज़लात और ग़ुदद को काम करने के योग्य बनाती हैं।

6. कवा) Powers - शक्तियाँ(

'कवा' शब्द 'कुव्वत' (शक्ति/Force) का बहुवचन है। मानव शरीर में तीन प्रकार की शक्तियाँ कार्य करती हैं:

1. कुव्वत-ए-नफ़्सानी (Psychic Force):

यह शक्ति तंत्रिकाओं (आसाब) में होती है, जिसका केंद्र मस्तिष्क (दिमाग) है। यह शक्ति मनुष्य की मानसिक क्षमताओं, भावनाओं (احساسات) और इच्छाशक्ति (ارادوں) को नियंत्रित करती है।

2. कुव्वत-ए-तबीई (Natural Force):

यह शक्ति ग्रंथियों (ग़ुदद) में होती है, जिसका केंद्र यकृत (جگر) है। यह शक्ति शरीर की प्राकृतिक प्रक्रियाओं जैसे पाचन (باضمہ), रक्त की शुद्धि और शरीर के आंतरिक संतुलन को बनाए रखती है।

3. कुव्वत-ए-हैवानी (Animal Force):

यह शक्ति मांसपेशियों (अज़लात) में होती है, जिसका केंद्र हृदय (دل) है। यह शक्ति शरीर को गति (حرکت) और ऊर्जा प्रदान करती है, जिससे मनुष्य विभिन्न शारीरिक गतिविधियाँ संपन्न कर सकता है।

7. अफ़आल (Functions - कार्य)

कार्यों (अफ़आल) की भी तीन स्थितियाँ होती हैं:

हरकत (गति/Activity) 2. सुकून (विश्राम/Inactivity) 3. ज़ोफ़ (कमजोरी/Debility)

1. हरकत (Movement/Activity):

जब मानव शरीर में तीनों 'अरवाह' (जीवन शक्ति) और तीनों 'कवा' (शक्तियाँ) अपना-अपना कार्य सही तरीके से करती रहती हैं, तब तक उनसे संबंधित अंग भी अपना कार्य सुचारू रूप से करता रहता है। इसी अवस्था को 'حرکت' कहा जाता है। यानी किसी सरल अंग (मुफ़रद अज़ू) द्वारा अपने कार्य को सही ढंग से अंजाम देना 'حرکت' कहलाता है।

2. सुकून (Stoppage/Rest):

जब मानव शरीर में तीनों 'अरवाह' और तीनों 'कवा' अपना कार्य सही तरीके से नहीं कर पाते, तो उनसे संबंधित अंग भी अपना कार्य ठीक से नहीं कर पाता और उसमें ठहराव आ जाता है। यानी किसी सरल अंग का अपने कार्य को सही तरीके से न कर पाना 'سکون' कहलाता है।

3. ज़ोफ़ (Weakness/Debility):

जब मानव शरीर में 'अरवाह' और शक्तियाँ कमजोर हो जाती हैं, तो उनके संबंधित अंग में भी कमजोरी या 'ज़ोफ़' आ जाता है। यहाँ यह बात नोट कर लें कि 'ज़ोफ़' वास्तव में 'حرکت' और 'سکون' के बीच की अवस्था है। यानी अंग पूरी तरह से सक्रिय (Active) भी नहीं है और न ही पूरी तरह से ठहराव (سکون) की स्थिति में गया है, बल्कि उसके कार्य करने की क्षमता में कमी आ गई है।

अंगों के प्रकार और उनके कार्य

मानव शरीर में दो प्रकार के अंग होते हैं:

साकिन अज़ा (Static Organs) 2. हयाती अज़ा (Vital Organs)

स्थिर अंग)Static Organs):

उन अंगों को कहा जाता है जो मानव कंकाल (Skeletal system) बनाते हैं, जैसे हड्डियाँ (Bones), करियाँ (Cartilage), रिबात (Ligaments) आदि। ये 'इल्हाक़ी मादा' (Connective tissue) से बनते हैं और शरीर के अन्य सभी अंग इन्हीं पर टिके होते हैं। इनका मुख्य कार्य शरीर के ढांचे को बनाए रखना है।

हयाती अज़ा) Vital Organs):

उन अंगों को कहा जाता है जिनसे मनुष्य का जीवन (Life) बना रहता है। ये मुख्य रूप से तीन हैं:

आसाब (Nerves): जिनका केंद्र मस्तिष्क (Brain) है।

अज़लात (Muscles): जिनका केंद्र हृदय (Heart) है।

ग़ुदद (Glands): जिनका केंद्र यकृत (Liver) है। यही तीन अंग–दिल, दिमाग और जिगर–'अज़ा-ए-रईसा' (Vital organs) कहलाते हैं, और इन्हें ही 'तीन मुफर्द अज़ा' (Three simple organs) भी कहा जाता है।

मुफर्द आजा) Simple Organs) के प्रकार प्रत्येक सरल अंग के दो-दो प्रकार होते हैं:

आसाब (Nerves): 1. हुक्म-रसां आसाब (Motor nerves) 2. ख़बर-रसां आसाब (Sensory nerves)

ग़ुदद (Glands): 1. नालीदार ग़ुदद (Duct glands) 2. बे-नाली ग़ुदद (Ductless glands)

अज़लात (Muscles):

1. इरादी अज़लात (Voluntary muscles) 2. ग़ैर-इरादी अज़लात (Involuntary muscles)

जैविक अंगों) Vital Organs) के कार्य

1. आसाब (Nerves) के कार्य:

आसाब मानव शरीर में 'हवास-ए-ख़मसा' (Five senses) के माध्यम से संवेदनाओं (Sensations) को इकट्ठा करके मस्तिष्क (Brain) तक पहुँचाते हैं, और मस्तिष्क से आदेश लेकर पूरे शरीर में पहुँचाते हैं। आसाब 'हराम मग़ज़' (Spinal cord) से जुड़ा वह तंत्र है जो पूरे शरीर के सभी कार्यों को नियंत्रित (Control) करने में बुनियादी भूमिका निभाता है। ये शरीर की गतिविधियों को व्यवस्थित (Organize) करते हैं। ये डोरी जैसे रेशे (Fibres) हैं जो मस्तिष्क को शरीर के अन्य तंत्रों से जोड़कर रखते हैं।

2. अज़लात (Muscles) के कार्य:

अज़लात (Muscles) मानव शरीर में गति (Movement) उत्पन्न करते हैं। यानी आसाब से जो आदेश मिलते हैं, अज़लात उन पर अमल करने के लिए हरकत करते हैं। इनका केंद्र हृदय (Heart) है। शरीर में जितनी भी हलचल होती है, जैसे चलना, बोलना, हाथ-पांव हिलाना आदि, ये सब अज़लात के कार्य हैं। मस्तिष्क (Brain) केवल महसूस (Feel) करता है, जबकि 'फैसला' दिल (Heart) करता है।

3. ग़ुदद (Glands) के कार्य:

मानव शरीर के हर हिस्से को पोषण (Nutrition) दो चीज़ों के माध्यम से मिलता है: 1. ग़ुदद (Glands), और 2. ग़िशा-ए-मुख़ाती (Mucosa)। अर्थात, शरीर के जिस अंग को जिस प्रकार के पोषण की आवश्यकता होती है, वहाँ के 'ग़ुदद' अपनी विशेष बनावट के कारण उस अंग के लिए पोषण को 'पकाकर' तैयार करते हैं। उदाहरण के लिए: यकृत (Liver) 'स़फ़रा' (Bile) बनाता है, गुर्दे (Kidneys) पेशाब (Urine) बनाते हैं, स्त्री के स्तन दूध (Milk) बनाते हैं और

पुरुष के अंडकोष (Testes) में वीर्य (Sperm) बनता है। इसी तरह हर ग्रंथि अपना विशेष स्राव (Secretion) पैदा करती है। जहाँ 'गुदद' नहीं होते, वहाँ 'ग़िशा-ए-मुख़ाती' (Mucosa) वही काम करती है जो गुदद करते हैं, जैसे मुँह की लार (Saliva), नाक का स्राव (Mucus) और शरीर का पसीना (Sweat) आदि।

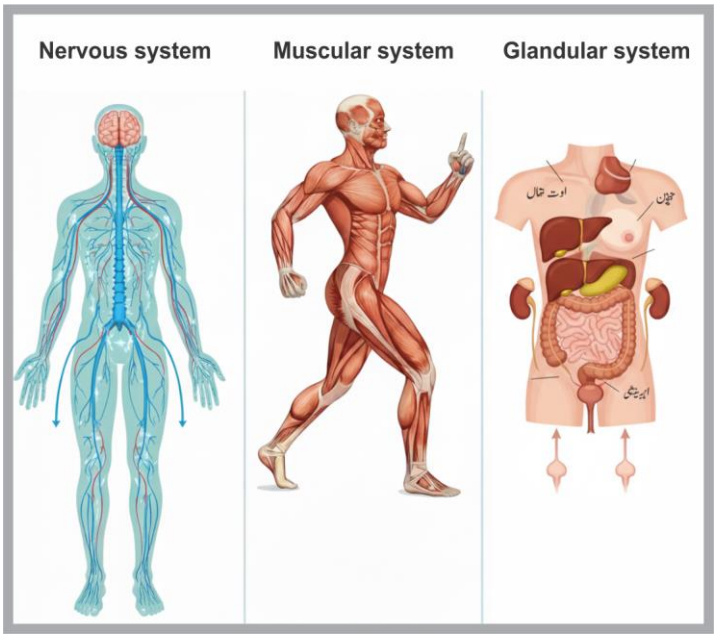

मुफ़र्द और मुरक्कब अंगों में अंतर

मुफ़र्द आज़ा (Simple Organs): उन अंगों को कहा जाता है जो एक ही प्रकार के ऊतकों (Tissues), कोशिकाओं (Cells) या तत्वों (Matter) से बने होते हैं, जैसे–दिल (Heart), दिमाग (Brain) और जिगर (Liver)।

मुरक्कब आज़ा (Complex Organs): उन अंगों को कहा जाता है जो विभिन्न प्रकार के ऊतकों (Tissues), कोशिकाओं (Cells) या तत्वों (Matter) के मेल से बने होते हैं, जैसे–आमाशय (Stomach), शिराएं (Veins) और धमनियां (Arteries) आदि।

कानून मुफर्द आज़ा (Law of Single Organs)

कानून मुफर्द आज़ा (Law of Single Organs) एक ऐसा सिद्धांत है जो अंगों के व्यक्तिगत कार्यों और उनके आपसी संबंधों की व्याख्या करता है। यह शोध (Research) यह सिद्ध करता है कि रोगों की उत्पत्ति मुफर्द आज़ा (Simple Organs) यानी मांसपेशियों (Muscles), तंत्रिकाओं (Nerves) और ग्रंथियों (Glands) में होती है। इसके बाद ही मुरक्कब आज़ा (Complex Organs) के कार्यों में कमी या अधिकता पैदा होती है। इसलिए उपचार (Treatment) में भी मुरक्कब आज़ा के बजाय मुफर्द आज़ा को ध्यान में रखना चाहिए, क्योंकि मनुष्य के सभी जटिल अंग मुफर्द आज़ा के ऊतकों (Tissues) और आधार (Foundations) से मिलकर बने होते हैं।

तिब्ब-ए-पाकिस्तानी (कानून मुफर्द आज़ा) एक आधुनिक सिद्धांत है। इस सिद्धांत से पहले रोगों का जन्म मुरक्कब आज़ा (Complex Organs) की खराबी को माना जाता था। इस सिद्धांत ने स्पष्ट किया कि रोग मुरक्कब आज़ा की नहीं, बल्कि मुफर्द आज़ा की खराबी से उत्पन्न होते हैं। उदाहरण के लिए, यदि आमाशय (Stomach) खराब हो जाए, जैसे पेट दर्द, सूजन (Inflammation), कमजोरी या बदहजमी आदि, तो इसे पूरे आमाशय की खराबी समझा जाता था। तिब्ब-ए-पाकिस्तानी (कानून मुफर्द आज़ा) के शोध से यह बात साबित हुई कि वास्तविकता ऐसी नहीं है; क्योंकि आमाशय एक मुरक्कब अज़ू (Complex Organ) है जिसमें मांसपेशियां, तंत्रिकाएं और ग्रंथियां सभी पाए जाते हैं। जब आमाशय बीमार होता है, तो वे सभी अंग बीमार नहीं होते, बल्कि कोई एक अंग (तंत्रिका, मांसपेशी या ग्रंथि) बीमार होगा, जिसकी वजह से आमाशय में तकलीफ होगी।

उदाहरण के लिए, यदि आमाशय की तंत्रिकाएं (Nerves) बीमार हो जाएं, तो इसके लक्षण अन्य तंत्रिकाओं में भी दिखेंगे और इसका प्रभाव मस्तिष्क (Brain) तक जाएगा। इसी तरह यदि आमाशय की मांसपेशियां (Muscles) बीमार हो जाएं, तो इसके लक्षण अन्य मांसपेशियों में भी होंगे और प्रभाव हृदय (Heart) तक जाएगा। और यदि आमाशय की ग्रंथियां (Glands) बीमार हो जाएं, तो इसके लक्षण अन्य ग्रंथियों, यकृत (Liver) और गुर्दों तक महसूस होंगे। इसलिए रोगों की पहचान और सटीक उपचार के लिए मुरक्कब अज़ू के बजाय मुफर्द अज़ू को आधार बनाना ही अचूक इलाज है।

पाकिस्तानी मेडिसिन के बेसिक प्रिंसिपल्स

कानून मुफ़र्द आज़ा (तिब्ब-ए-पाकिस्तानी) केवल एक चिकित्सा पद्धति नहीं है, बल्कि एक पूर्ण दर्शन (Philosophy) है जो बीमारी, स्वास्थ्य और ब्रह्मांड के आपसी संबंध को प्राकृतिक सिद्धांतों की रोशनी में बयान करता है। यह सिद्धांत मुजद्दिद-ए-तिब्ब हज़रत साबिर मुल्तानी (रह.) की अथक मेहनत और शोध का परिणाम है, जिसने पारंपरिक हिकमत और आधुनिक विज्ञान के बीच एक तार्किक पुल स्थापित किया।

रोग की शुरुआत: मुफर्द आज़ा का सिद्धांत कानून मुफ़र्द आज़ा (तिब्ब-ए-पाकिस्तानी) के अनुसार बीमारी की असली जड़ शरीर के तीन बुनियादी अंगों में होती है:

अज़लात (Muscles) 2. आसाब (Nerves) 3. ग़ुदद (Glands)

रोग इन अंगों के कार्यों के असंतुलन से शुरू होता है। यानी जब इनमें तहरीक (Stimulation), तस्कीन (Sedation) या तहलील (Decomposition) की अप्राकृतिक स्थिति पैदा हो जाए, तो यह बीमारी का कारण बनता है:

यदि किसी अंग में तहरीक (Stimulation) पैदा हो जाए, तो उसका कार्य बढ़ जाता है।

यदि किसी अंग में तस्कीन (Sedation) पैदा हो जाए, तो उसका कार्य कम हो जाता है।

यदि किसी अंग में तहलील (Decomposition) पैदा हो जाए, तो उसके पदार्थ का निकलना (Excretion) शुरू हो जाता है।

उपचार का मुख्य उद्देश्य इन्हीं अंगों के कार्यों को संतुलित (Balance) करना है, जिसके परिणामस्वरूप कोशिका (Cell) से लेकर मुख्य अंगों (Vital Organs) तक सभी शारीरिक कार्य ठीक हो जाते हैं और स्वास्थ्य बहाल होता है। हज़रत साबिर मुल्तानी (रह.) ने अपने शोध में बताया कि 'मुसकिन' (शांत/Sedated) अंग को 'तहरीक' देने से रोग समाप्त हो जाता है; क्योंकि मुसकिन अंग को सक्रिय करने से 'मुहर्रिक' (अति-सक्रिय) अंग तहलील (Decomposition) में चला जाएगा और उसका अतिरिक्त पदार्थ शरीर से बाहर निकलना शुरू हो जाएगा, जिससे मानव शरीर स्वास्थ्य की ओर अग्रसर होगा।

स्वास्थ्य और बीमारी की अवस्था

स्वास्थ्य की अवस्था (State of Health) क्या है? जब मनुष्य संतुलित आहार (Balanced diet) लेता है, तो उससे संतुलित 'अख्लात' (Balanced humors) बनती हैं। इन संतुलित 'अख्लात' से सरल अंगों (Simple organs) को संतुलित पोषण मिलता है, जिसके परिणामस्वरूप ये अंग अपना-अपना कार्य संतुलित और सही तरीके से करते हैं। ऐसी स्थिति को स्वास्थ्य की अवस्था (State of health) कहा जाता है।

बीमारी की अवस्था (State of Disease) क्या है? जब मनुष्य का आहार असंतुलित (Imbalanced) होता है, तो उससे 'अख्लात' का संतुलन बिगड़ जाता है। इसके परिणामस्वरूप शरीर के अंग अपना कार्य ठीक से नहीं कर पाते और

शरीर में विभिन्न प्रकार की तकलीफें और लक्षण (Symptoms) पैदा हो जाते हैं। ऐसी असंतुलित स्थिति को बीमारी की अवस्था (State of disease) कहा जाता है।

यह बात पहले बताई जा चुकी है कि मानव अंग तीन चीजों–तंत्रिका (Nerves), मांसपेशी (Muscles) और ग्रंथि (Glands)–का मिश्रण हैं और 'इल्हाक़ी मादा' (Connective tissue) ने इन्हें जोड़ा हुआ है। मानो सभी अंग अलग-अलग पुर्जे हैं और 'इल्हाक़ी मादा' सीमेंट (Cement) की तरह है।

जब 'अख्लात' (Humors) का संतुलन बिगड़ता है, उदाहरण के लिए यदि कोई 'ख़िल्त' अधिक हो जाती है, तो वह अपने संबंधित अंग के कार्य में तेजी पैदा कर देती है। इसकी मिसाल ऐसी है जैसे बिजली तेज होने से पंखे की रफ्तार बढ़ जाती है; वैसे ही, यदि शरीर में बल़ग़म बढ़ जाए तो मस्तिष्क (Brain) के कार्य में तेजी, सौद़ा बढ़ जाए तो हृदय (Heart) के कार्य में तेजी और स़फ़रा बढ़ जाए तो यकृत (Liver) के कार्य में तेजी आ जाती है। इस तेजी को तहरीक (Stimulation) कहा जाता है।

इसी तरह, यदि शरीर में किसी 'ख़िल्त' की कमी हो जाए, तो उससे संबंधित अंग के कार्य में कमजोरी आ जाती है। और यदि कोई 'ख़िल्त' बिल्कुल ही कम हो जाए या खत्म हो जाए, तो संबंधित अंग में तस्कीन (Sedation) आ जाएगी, यानी वह अपना काम करना बंद कर देगा।

तहरीक, तहलील और तस्कीन (Stimulation, Resolution, Sedation)

1. तहरीक (Stimulation): जब किसी अंग के कार्य में तेजी आ जाए, तो उस स्थिति को कानून मुफर्द आज़ा (Pakistani Medicine) की शब्दावली में 'तहरीक' कहा जाता है। इसका अर्थ अंग की सक्रियता (Activity) में वृद्धि होना है।

2. तहलील (Resolution / Decomposition): जब किसी अंग के कार्य में कमजोरी आ जाए, तो उस स्थिति को कानून मुफर्द आज़ा (Pakistani

Medicine) में 'तहलील' कहा जाता है। इसका अर्थ है पदार्थ का पिघलना या शरीर से बाहर निकलने (Excretion) की ओर बढ़ना।

3. तस्कीन (Sedation): जब किसी अंग के कार्य में बहुत अधिक कमजोरी या ठहराव आ जाए, तो उस स्थिति को कानून मुफर्द आज़ा (Pakistani Medicine) में 'तस्कीन' कहा जाता है।

यदि तंत्रिकाओं) Nerves) में सक्रियता) Stimulation) हो:

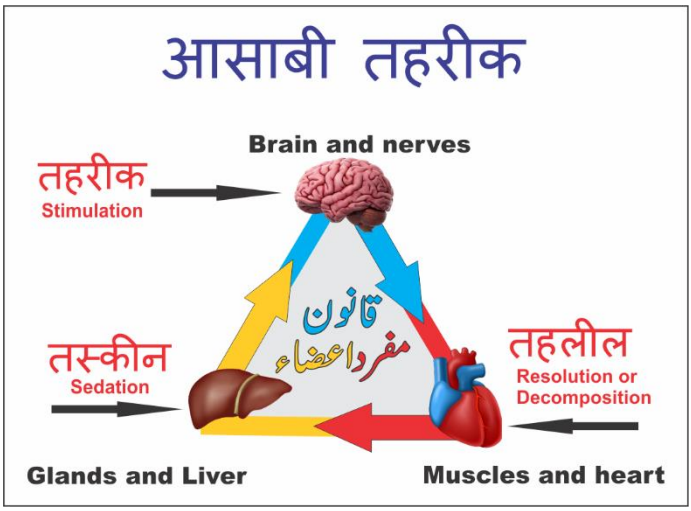

यदि तंत्रिकाओं में तहरीक (Stimulation) हो, तो इसका अर्थ यह होगा कि मानव शरीर में ख़िल्त-ए-बल़ग़म (Humor of phlegm) की अधिकता हो गई है। इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति को तंत्रिका संबंधी या बल़ग़मी रोगों (Phlegmatic diseases) का सामना करना पड़ रहा है।

इसका उपचार (Treatment) यह है कि मांसपेशियों को तहरीक (Stimulation) दी जाए। अर्थात, ऐसी ग़िज़ा (Diet) और दवाओं का उपयोग

किया जाए जिनसे मांसपेशियों की तस्कीन (Sedation) समाप्त हो जाए और उनमें सक्रियता (Stimulation) पैदा हो जाए।

यदि मांसपेशियों) Muscles) में सक्रियता) Stimulation) हो:

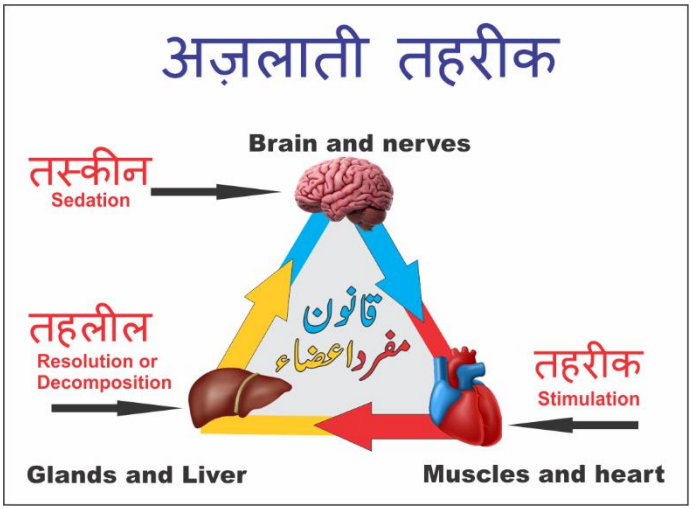

यदि मांसपेशियों में तहरीक (Stimulation) हो, तो इसका अर्थ यह होगा कि मानव शरीर में ख़िल्त-ए-सौदा (Humor of black bile) की अधिकता हो गई है। इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति को पेशी संबंधी या सौदावी रोगों (Muscular or Melancholic diseases) का सामना करना पड़ रहा है।

इसका उपचार (Treatment) यह है कि ग्रंथियों (Glands) को तहरीक (Stimulation) दी जाए। अर्थात, ऐसी ग़िज़ा (Diet) और दवाओं का उपयोग किया जाए जिनसे ग्रंथियों की तस्कीन (Sedation) समाप्त हो जाए और उनमें सक्रियता (Stimulation) पैदा हो जाए।

यदि ग्रंथियों) Glands) में सक्रियता) Stimulation) हो:

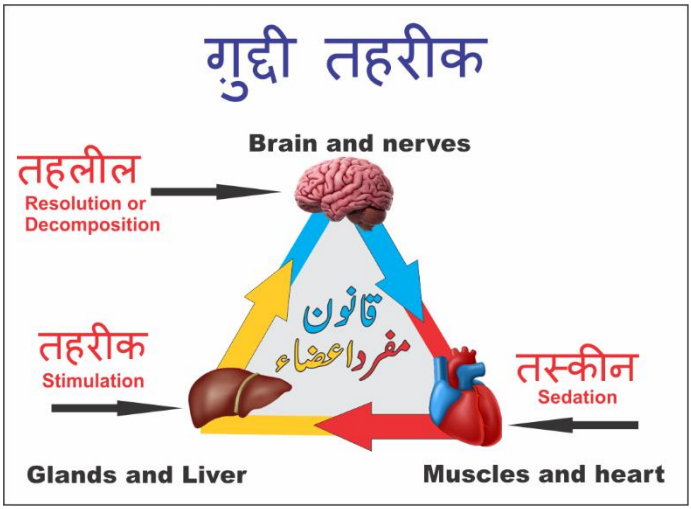

यदि ग्रंथियों में तहरीक (Stimulation) हो, तो इसका अर्थ यह होगा कि मानव शरीर में ख़िल्त-ए-स़फ़रा (Humor of yellow bile) की अधिकता हो गई है। इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति को ग्रंथियों से संबंधित या स़फ़रावी रोगों (Glandular or Bilious diseases) का सामना करना पड़ रहा है।

इसका उपचार (Treatment) यह है कि तंत्रिकाओं (Nerves) को तहरीک (Stimulation) दी जाए। अर्थात, ऐसी ग़िज़ा (Diet) और दवाओं का उपयोग किया जाए जिनसे तंत्रिकाओं की तस्کین (Sedation) समाप्त हो जाए और उनमें सक्रियता (Stimulation) पैदा हो जाए।

कानून मुफर्द आज़ा (Pakistani Medicine) में आसाबी तहरीक (Nervous stimulation) का उपचार अज़लाती तहरीक (Muscular stimulation) से, अज़लाती तहरीक का उपचार गुद्दी तहरीक (Glandular stimulation) से, और गुद्दी तहरीक का उपचार आसाबी तहरीक से किया जाता है।

दूसरे शब्दों में, बलग़म (Phlegm) का उपचार सौदा (Black bile) से, सौदा का उपचार स़फ़रा (Yellow bile) से और स़फ़रा का उपचार बलग़म से किया जाता है। इसे हम इस तरह भी कह सकते हैं: तरी (Moisture) का उपचार खुश्की (Dryness) से, खुश्की का उपचार गर्मी (Heat) से और गर्मी का उपचार तरी से किया जाता है।

इसे और भी सरल शब्दों में इस प्रकार समझें कि तहरीक (Stimulation) को तहलील (Resolution) में बदलना ही उपचार (Treatment) है। अर्थात, जिस अंग में तहरीक है, आप उससे अगले वाले अंग को सक्रिय (Stimulate) कर दें, तो तहरीक अगले अंग में चली जाएगी और पिछले अंग में 'तहलील' पैदा हो जाएगी।

यह एक चक्र (Circle) है और उपचार का प्राकृतिक तरीका (Natural way of treatment) है, क्योंकि पूरी कायनात (Universe) में यही नियम पाया जाता है। हमारे साल भर के मौसम भी इसी चक्र में चलते हैं; जब इनका संतुलन (Balance) बिगड़ता है, तब तूफान, भूकंप और आपदाएं आती हैं।

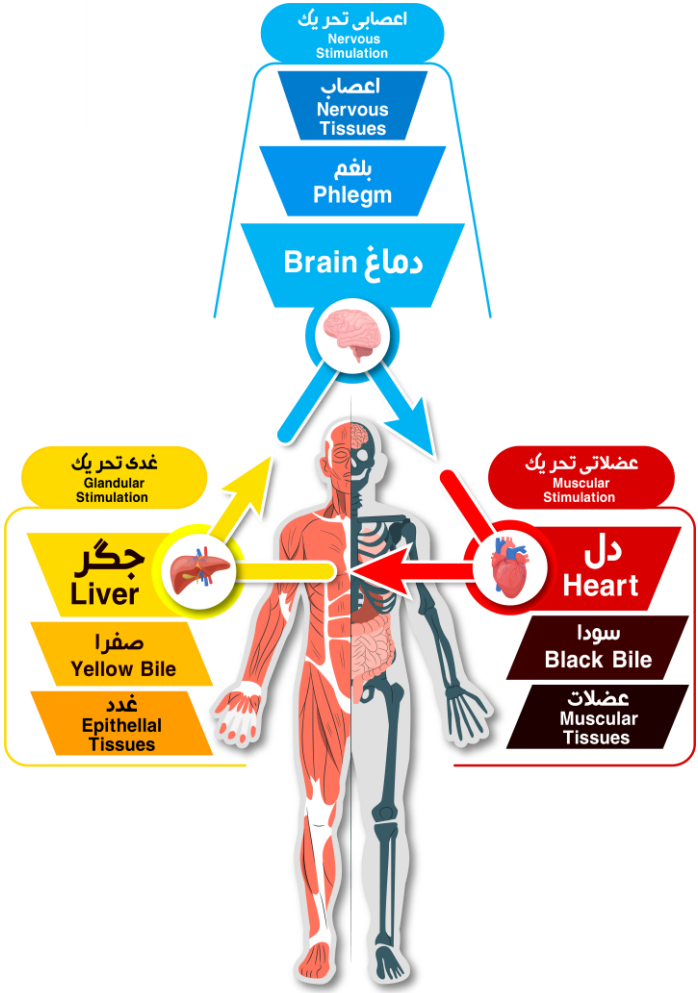
اعصابی تحریک
Nervous Stimulation
اعصاب
Nervous Tissues
بلغم
Phlegm
Brain دماغ
غدی تحریک
Glandular Stimulation
جگر
Liver
صفرا
Yellow Bile
غدد
Epithellal Tissues
عضلاتی تحریک
Muscular Stimulation
دل
Heart
سودا
Black Bile
عضلات
Muscular Tissues

आलम-ए-अकबर) Universe) और आलम-ए-असग़र) Human Body) में समानता

मानव शरीर का तंत्र ब्रह्मांड (Universe) के तंत्र से काफी मिलता-जुलता है, इसीलिए इसे आलम-ए-असग़र (Microcosm) भी कहा जाता है। जैसे हम बाहर तूफान उठते और खत्म होते देखते हैं, वैसे ही इंसान के अंदर भी तूफान आते और जाते हैं। जैसे ब्रह्मांड में हम गर्मी और बारिश देखते हैं, वैसे ही इस छोटी कायनात (शरीर) में भी गर्मी और बारिश होती है। जैसे आलम-ए-अकबर (Macrocosm) के तंत्र में विभिन्न गैसेस (Gases), खनिज (Minerals), विटामिन्स (Vitamins), हवा और बिजली मिलकर काम करते हैं, वैसे ही मानव शरीर के अंदर भी यही चीजें मिलकर शारीरिक तंत्र को चला रही हैं।

ब्रह्मांड में तहरीक, तहलील और तस्कीन हवा का चलना तहरीक (Stimulation) का रूप है, जबकि गर्मी तहलील (Resolution) का रूप है, और बारिश तस्कीन (Sedation) का रूप है। अर्थात, यदि बाहर ब्रह्मांड में तेज हवा चल रही है और तूफान उठ रहे हैं, तो यह 'तहरीक' है। यदि गर्मी बहुत अधिक हो गई है, तो चीजें पिघलना या 'तहलील' होना शुरू हो जाएंगी। और यदि बारिश हो जाए, तो उससे 'तस्कीन' पैदा होगी।

इन तीनों का क्रम (Order) भी यही है:

हवा की तेजी गर्मी से खत्म होती है।

गर्मी बारिश से खत्म होती है।

बारिश के प्रभाव हवा से खत्म होते हैं।

यदि ब्रह्मांड में हवा, गर्मी और बारिश संतुलन (Balance) में हों तो मौसम सुहावना होता है, जैसे वसंत (Spring) का मौसम। लेकिन यदि कोई भी

चीज संतुलन से कम या ज्यादा हो जाए, तो बेचैनी होती है और अपने आराम के लिए विशेष प्रबंध करना पड़ता है, जैसे गर्मियों में पंखे/AC और सर्दियों में कोट/हीटर आदि।

मानव शरीर और ब्रह्मांड मानव शरीर चूंकि ब्रह्मांड का ही हिस्सा है, इसलिए प्राकृतिक रूप से ब्रह्मांडीय नियम ही शरीर में भी लागू होते हैं। मानव शरीर में भी तहरीक (Stimulation), तहलील (Resolution) और तस्कीन (Sedation) की प्रक्रिया जारी रहती है। जब तक ये संतुलन पर हों, तब तक स्वास्थ्य (Health) बना रहता है, और यदि इनमें बहुत अधिक तेजी या कमी आ जाए, तो बीमारी बन जाती है।

याद रखें: * خشکی (Dryness) से तहरीक पैदा होती है।
گرمی (Heat) से तहलील पैदा होती है।
تری (Moisture) से तस्कीन पैदा होती है।

उपचार का नियम: खुश्की गर्मी से खत्म होती है, गर्मी तरी से खत्म होती है और तरी खुश्की से खत्म होती है। लिपि, जिस सरल अंग (Simple organ) में खुश्की (तहरीक) होगी, उसमें गर्मी (तहलील) पैदा की जाएगी जिससे खुश्की खत्म हो जाएगी। इसी तरह जिसमें गर्मी (तहलील) होगी, उसमें तरी (तस्कीन) पैदा की जाएगी जिससे गर्मी खत्म हो जाएगी। और जिसमें तरी (तस्कीन) होगी, उसमें खुश्की (तहरीक) पैदा की जाएगी जिससे तरी खत्म हो जाएगी।

रक्त के प्रभाव (Effects of Blood) रक्त चूंकि 'अख्लात' (Humors) से बनता है, इसलिए रक्त में तीनों अख्लात होती हैं, लेकिन उनकी मात्रा बराबर नहीं होती। रक्त में जिस 'ख़िल्त' की अधिकता होती है, रक्त का संचार (Blood circulation) उस ख़िल्त से संबंधित अंग की ओर बढ़ जाता है, जिससे उस अंग के कार्य में तेजी आ जाती है और इसे ही تحریک (Stimulation) कहा जाता है।

उदाहरण के लिए, यदि रक्त में ज़फ़रा (Yellow bile) की अधिकता होगी, तो रक्त यकृत (Liver) की ओर ज्यादा जाएगा, जिससे जिगर के कार्य में तेजी आएगी; इसे हम ग़ुद्दी तहरीک (Glandular stimulation) कहेंगे। रक्त में दूसरे नंबर पर जो ख़िल्त होगी, उसकी ओर रक्त का संचार थोड़ा कम होगा, इसलिए वहां कमजोरी होगी जिसे تحلیل (Resolution) कहा जाता है। और तीसरे नंबर पर जो ख़िल्त होगी, उसकी ओर रक्त संचार बिल्कुल कम होगा, जिससे वह अंग बिल्कुल सुस्त हो जाएगा, इसे तस्कीन (Sedation) कहा जाता है।

हकीम साबिर मुल्तानी (रह.) ने इसे इस तरह भी समझाया है: "रक्त जिस अंग की ओर जा रहा है वहां تہریک (Stimulation) होगी, जहां से (निकलकर) जा रहा है वहां تحلیل (Resolution) होगी और जहां से जा चुका है वहां तस्कीन (Sedation) होगी।"

कानून मुफर्द आज़ा (Law of Single Organs) में रोग का स्थान क्या है?

नज़रिया मुफर्द आज़ा (Law of Single Organs) एक ऐसा शोध (Research) है जिसने यह सिद्ध किया है कि रोगों की उत्पत्ति इन तीन चीजों–तंत्रिका (Nerves), मांसपेशी (Muscles) और ग्रंथि (Glands)–में होती है।

कानून मुफर्द आज़ा (Pakistani Medicine) के अनुसार रोग का स्थान 'मकाम-ए-तहरीक' (Point of stimulation) है। अर्थात, जिस अंग में सक्रियता (Stimulation) है, उसी को रोग का केंद्र माना जाता है।

उदाहरण के लिए, यदि 'तहरीक' आसाबी (Nervous) है, तो इसका अर्थ है कि शरीर में ख़िल्त-ए-बलग़म (Humor of phlegm) और नमी (Moisture) की अधिकता हो गई है, जिससे विभिन्न रोग या उनके लक्षण (Symptoms) पैदा हो गए हैं। इसका प्राकृतिक उपचार (Natural treatment) यह है कि इससे अगले अंग यानी मांसपेशियों (Muscles) को तहरीक (Stimulation) दे दी जाए, जिससे अगले अंग में सक्रियता और पिछले अंग (तंत्रिका) में तहलील (Resolution) पैदा हो जाएगी। सरल शब्दों में, तहरीक वाले अंग को 'तहलील' में बदलना ही उपचार है।

और यदि नब्ज़ (Pulse) जांचने पर मांसपेशियों में तहरीक (Stimulation) महसूस हो, तो इसका अर्थ है कि शरीर में ख़िल्त-ए-सौदा (Humor of black bile) और खुश्की (Dryness) की अधिकता हो चुकी है। इसका उपचार यह है कि इससे अगले अंग यानी ग्रंथियों (Glands) को तहरीक (Stimulation) दे दी जाए।

निष्कर्ष (Summary): मानव शरीर में तीन 'अख्लात' (बलग़म, सौदा, ज़फ़रा) के संतुलन बिगड़ने से रोग पैदा होते हैं। यह पता लगाने के लिए कि किस 'ख़िल्त' में समस्या है, 'मकाम-ए-तहरीक' को जानने की कोशिश की जाती है। जिस अंग में 'तहरीक' होती है, उस अंग की 'ख़िल्त' आवश्यकता से अधिक

बढ़ी हुई होती है, जबकि अन्य दो 'अख्लात' आवश्यकता से अधिक कम हो जाती हैं।

महत्वपूर्ण प्रश्न) Important Question)

सरल अंग (Simple organs) तो तीन हैं–मस्तिष्क, हृदय, यकृत (Nerves, Muscles, Glands) और 'अख्लात' भी तीन हैं–बल्ग़म, सौद्रा, ज़फ़रा; तो शरीर के बाकी अंगों में तकलीफ कैसे हो जाती है?

इसका उत्तर यह है कि तंत्रिकाओं (Nerves) का केंद्र यद्यपि मस्तिष्क (Brain) है, लेकिन तंत्रिकाओं का संबंध शरीर के बाकी सभी अंगों (जैसे–आमाशय, गुर्दे, पित्ताशय, मूत्राशय आदि) से होता है और हर अंग पर तंत्रिकाओं की एक परत (Membrane) होती है।

इसी तरह मांसपेशियों (Muscles) का केंद्र यद्यपि हृदय (Heart) है, लेकिन शरीर के बाकी अंगों पर भी एक पेशीय परत (Muscular membrane) होती है। इसी प्रकार ग्रंथियों (Glands) का केंद्र यद्यपि यकृत (Liver) है, लेकिन शरीर के बाकी अंगों पर भी ग्रंथियों की एक परत होती है।

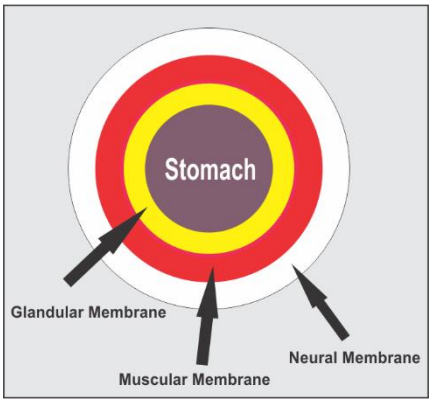

विभिन्न अंगों पर जो परतें चढ़ी हुई हैं, उनका क्रम (Order) इस प्रकार है:

सबसे ऊपर आसाब (Nerves) की परत होती है।

उसके नीचे अज़लात (Muscles) की परत होती है।

और उसके नीचे ग़ुदद (Glands) की परत होती है।

उदाहरण के लिए, मनुष्य के आमाशय (Stomach) पर एक तंत्रिका (Nerves) की परत है, एक मांसपेशी (Muscles) की परत है, और एक ग्रंथि (Glands) की परत है। तो यदि आमाशय में कोई तकलीफ हो, और नब्ज़ (Pulse) जाँचने पर पता चले कि आसाबी तहरीक (Nervous stimulation) है, तो इसका अर्थ होगा कि आमाशय में नमी (Moisture/Fluids) की अधिकता की वजह से तकलीफ है। यह तकलीफ आमतौर पर उल्टी (Vomiting) या मतली (Nausea) के रूप में होगी।

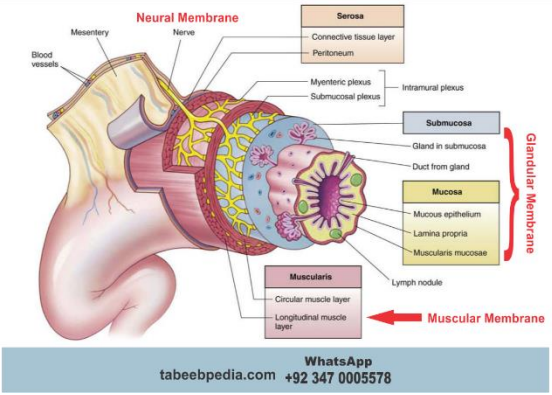

चित्र में जीआई ट्रैक्ट (GI tract) की दीवार की जो परतें दिखाई गई हैं, वे तिब्ब-ए-साबिर (Pakistani Medicine) के सिद्धांत में शामिल इन बुनियादी ऊतकों (Tissues) पर आधारित हैं:

आसाबी पर्दा (Nervous Layer): चित्र में दिखाया गया 'मायेंटेरिक प्लेक्सस' (Myenteric plexus) और 'सबम्यूकोसल प्लेक्सस' (Submucosal plexus) बुनियादी तौर पर तंत्रिका ऊतक (Nervous tissues) हैं जो जीआई ट्रैक्ट के कार्यों को नियंत्रित (Control) करते हैं।

अज़लाती पर्दा (Muscular Layer): चित्र में स्पष्ट रूप से दिखाई गई 'मस्कुलैरिस' (Muscularis) परत, जिसमें वृत्ताकार (Circular) और अनुदैर्ध्य (Longitudinal) मांसपेशियां शामिल हैं, पेशीय ऊतकों (Muscular tissues) से बनती है।

गुद्दी पर्दा (Glandular/Epithelial Layer): 'म्यूकोसा' (Mucosa) विशेष रूप से 'म्यूकस एपिथेलियम' (Mucous epithelium) और 'सबम्यूकोसा ग्रंथि' (Gland in submucosa) में ग्रंथि-नुमा उपकला ऊतकों (Epithelial tissues) की प्रचुरता होती है, जिन्हें हकीम साबिर मुल्तानी के तंत्र में "ग़ुदद-ए-नाक़िला" (Excretory glands) या गुद्दी पर्दे का केंद्र समझा जाता है।

इस प्रकार, आधुनिक शरीर रचना विज्ञान (Modern Anatomy) में वर्णित ये परतें हकीम साबिर मुल्तानी के मुफर्द आज़ा (Simple Organs) के सिद्धांत के तहत वर्णित बुनियादी परतों या ऊतकों के केंद्रों से समानता रखती हैं।

रोग की पहचान (Diagnosis):

यदि नब्ज़ (Pulse) जाँचने पर पता चले कि अज़लाती तहरीक (Muscular stimulation) है, तो इसका अर्थ होगा कि आमाशय (Stomach) में खुश्की (Dryness) और अम्लता (Acidity) की अधिकता हो गई है, जिसकी वजह से नमी (Fluids) पूरी तरह सूख चुकी है और गैस (Gas) या कब्ज (Constipation) की स्थिति पैदा हो गई है।

और यदि नब्ज़ (Pulse) जाँचने पर पता चले कि गुद्दी तहरीक (Glandular stimulation) है, तो इसका अर्थ होगा कि आमाशय (Stomach) में ऊष्मा (Heat) और पित्त (Bile/Safra) की अधिकता हो गई है, जिसकी वजह से

आमाशय में जलन (Burning), दर्द (Pain), मरोड़ (Cramps) या पेचिश (Dysentery) की स्थिति पैदा हो गई है।

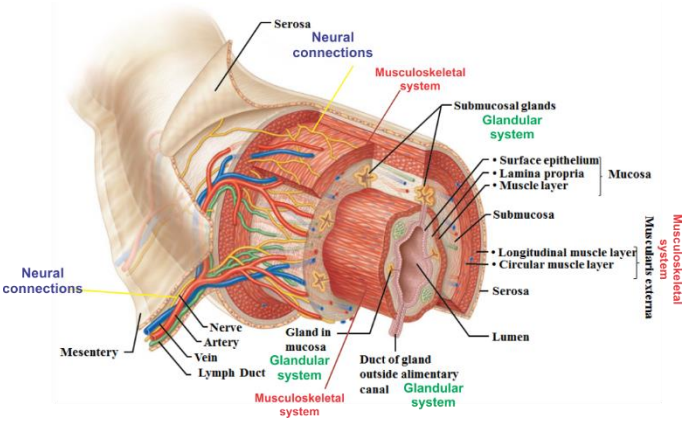

संक्षेप में यह कि शरीर के सभी अंगों पर मुफर्द आज़ा (Simple organs) की परतें चढ़ी हुई हैं। सबसे ऊपर आसाब (Nerves) की परत होती है, उसके नीचे अज़लात (Muscles) की और सबसे नीचे गुऺ (Glands) की परत होती है।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋

मुफर्द आज़ा (Simple Organs) का एक-दूसरे से संबंध

मुफर्द आज़ा (Nerves, Muscles, Glands) एक-दूसरे के साथ जुड़े (Link) होते हैं। इस संबंध को देखते हुए कुल छह तहरीकें (Stimulations) और मिजाज (Temperaments) बन जाते हैं:

1. यदि आसाब (Brain) का संबंध गुदद (Liver) के साथ हो, तो इसे "आसाबी गुद्दी" (Nervo-glandular) कहा जाता है।
2. यदि आसाब (Brain) का संबंध अज़लात (Heart) के साथ हो, तो इसे "आसाबी अज़लाती" (Nervo-muscular) कहा जाता है।
3. यदि अज़लात (Heart) का संबंध आसाब (Brain) के साथ हो, तो इसे "अज़लाती आसाबी" (Musculo-nervous) कहा जाता है।
4. यदि अज़लात (Heart) का संबंध गुदद (Liver) के साथ हो, तो इसे "अज़लाती गुद्दी" (Musculo-glandular) कहा जाता है।
5. यदि गुदद (Liver) का संबंध अज़लात (Heart) के साथ हो, तो इसे "गुद्दी अज़लाती" (Glando-muscular) कहा जाता है।
6. यदि गुदद (Liver) का संबंध आसाब (Brain) के साथ हो, तो इसे "गुद्दी आसाबी" (Glando-nervous) कहा जाता है।

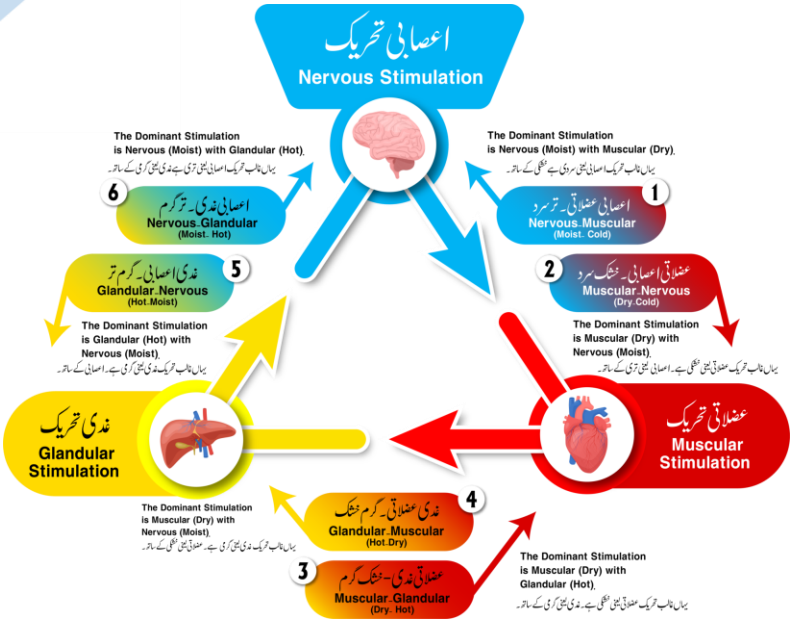

मुफर्द आज़ा के कार्य (Functions of Simple Organs)

हर मुफ़र्द अज़ू (Simple organ) दो तरह के फ़ेल (Function) सरंजाम देता है:

1. मशीनी फ़ेल (Mechanical Function)
2. कीमियावी फ़ेल (Chemical Function)

मशीनी फ़ेल: अगर कोई मुफ़र्द अज़ू अपनी 'ख़िल्त' (Humor) पैदा करने के साथ-साथ जिस्म से ख़ारिज (Excrete) भी कर रहा हो, तो इस फ़ेल को उस अज़ू का मशीनी फ़ेल कहा जाता है।

कीमियावी फ़ेल: अगर कोई मुफ़र्द अज़ू अपनी 'ख़िल्त' पैदा करने के साथ-साथ जिस्म में जमा (Accumulate) भी कर रहा हो, तो इस फ़ेल को उस अज़ू का कीमियावी फ़ेल कहा जाता है।

अगर किसी अज़ू का मशीनी फ़ेल तेज़ हो जाए तो यह जिस्म से उस 'ख़िल्त' के इख़राज (Excretion) की अलामात (Symptoms) पैदा कर देता है। मिसाल के तौर पर, आसाब (Nerves) का मशीनी फ़ेल तेज़ हो जाए तो यह बल्ग़म (Phlegm) पैदा करने के साथ-साथ उसका इख़राज भी शुरू कर देगा, जिससे नाक और आँखों से पानी और बल्ग़म का इख़राज, क़ै (Vomiting), इसहाल (Diarrhea) वग़ैरह शुरू हो जाएंगे और हैज़ा (Cholera) की सूरत बन जाएगी।

इसी तरह अगर किसी अज़ू का कीमियावी फ़ेल तेज़ हो जाए तो वह अज़ू अपनी 'ख़िल्त' को तेज़ी से जिस्म में जमा करना शुरू कर देगा। मिसाल के तौर पर, अज़लात (Muscles) का कीमियावी फ़ेल तेज़ हो जाए तो क़ल्ब (Heart) अपनी 'ख़िल्त-ए-सौदा' (Humor of black bile) पैदा करने के साथ-साथ जिस्म में जमा करना शुरू कर देगा, जिससे फोड़े-फुंसियाँ, बवासीर (Piles) से कैंसर (Cancer) तक, और क़ब्ज़ (Constipation) जैसी अलामात पैदा हो जाएंगी।

कीमियावी (Chemical Motion) और मशीनी तहरीकें (Mechanical Motion)

किसी भी अज़ू की ऐसी तहरीक (Stimulation) जिसमें वह 'ख़िल्त' को पैदा तो करे लेकिन 'ख़िल्त' को जिस्म से ख़ारिज न करे, तो वह उस अज़ू की कीमियावी तहरीक कहलाती है। इसी तरह किसी भी अज़ू की ऐसी तहरीक जिसमें वह 'ख़िल्त' को पैदा भी करे और जिस्म से ख़ारिज भी करे, तो वह उस अज़ू की मशीनी तहरीक कहलाती है।

मिसाल के तौर पर: यर्क़ान (Jaundice) जिगर की कीमियावी तहरीक है और पेचिश (Dysentery) जिगर की मशीनी तहरीक है। ज़ियाबीतस (Diabetes) दिमाग़ की कीमियावी तहरीक है और हैज़ा (Cholera) दिमाग़ की मशीनी तहरीक

है। ख़ारिश (Itching) क़ल्ब की कीमियावी तहरीक है और बवासीर-ए-ख़ूनी (Bleeding piles) क़ल्ब की मशीनी तहरीक है।

कीमियावी तहरीकें (Chemical Stimulations)

अज़लाती आसाबी (Musculo-nervous): अज़लात की कीमियावी तहरीक है।

गुद्दी अज़लाती (Glando-muscular): गुदद की कीमियावी तहरीक है।

आसाबी गुद्दी (Nervo-glandular): आसाब की कीमियावी तहरीक है।

कीमियावी तहरीक में इलाज (Treatment) की सूरत यह है कि कीमियावी तहरीक को उसी अज़ू की मशीनी तहरीक से बदल दें। मिसाल के तौर पर, "अज़लाती आसाबी" अज़लात की कीमियावी तहरीक है, इसमें इलाज की सूरत यह है कि अज़लात की इस कीमियावी तहरीक को अज़लात की मशीनी तहरीक "अज़लाती गुद्दी" (Musculo-glandular) से बदल दें।

मशीनी तहरीकें (Mechanical Stimulations)

आसाबी अज़लाती (Nervo-muscular): आसाब की मशीनी तहरीक है।

अज़लाती गुद्दी (Musculo-glandular): अज़लात की मशीनी तहरीक है।

गुद्दी आसाबी (Glando-nervous): गुदद की मशीनी तहरीक है।

मशीनी तहरीक में इलाज (Treatment) की सूरत यह है कि कीमियावी असरात (Chemical effects) को बढ़ाया जाए। मिसाल के तौर पर, "आसाबी अज़लाती" आसाब की मशीनी तहरीक है, इसमें इलाज की सूरत यह है कि आसाब की इस मशीनी तहरीक में अज़लात के कीमियावी असरात को बढ़ाया जाए यानी "अज़लाती आसाबी" (Musculo-nervous) तहरीक पैदा की जाए।

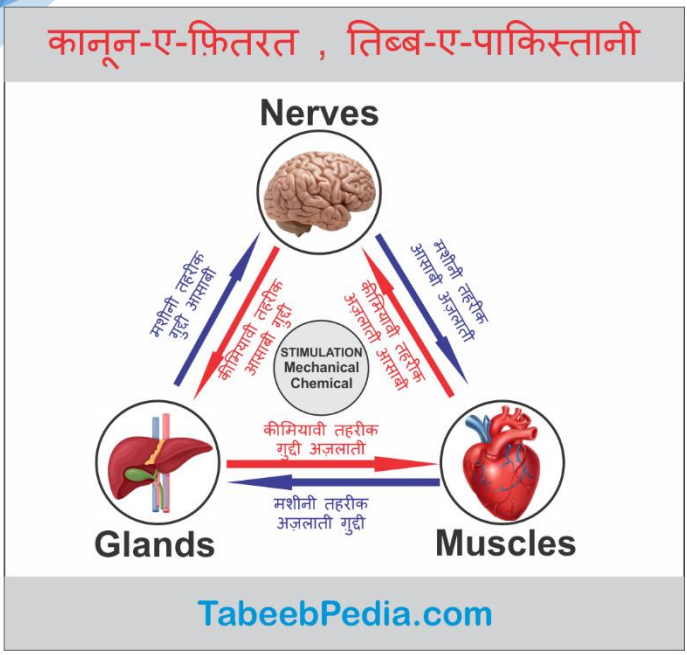

मरज़ के अस्बाब (Causes of Disease)

किसी भी मरज़ (Disease) के तीन ही अस्बाब (Causes) हैं:

कैफ़ियाती या नफ़सियाती अस्बाब (Qualitative or Psychological Causes)

माद्दी या ख़ल्ती अस्बाब (Material or Humoral Causes)

शिरकी या कीमियावी अस्बाब (Associated or Chemical Causes)

1. कैफ़ियाती या नफ़सियाती अस्बाब:

(अ) कैफ़ियाती अस्बाब (Qualitative Causes): अगर जिस्म में गर्मी (Heat), सर्दी (Cold), खुश्की (Dryness) या तरी (Moisture) की कमी या ज़्यादती से मरज़ पैदा हो, तो इसको कैफ़ियाती सबब (Qualitative cause) का मरज़ कहा जाता है।

(ब) नफ़सियाती अस्बाब (Psychological Causes): अगर जिस्म में ग़ुस्सा (Anger), या किसी ग़म (Sorrow) व ख़ुशी (Happiness) की वजह से कोई मरज़ पैदा हो, तो उसे नफ़सियाती सबब (Psychological cause) का मरज़ कहा जाता है।

2. माद्दी या ख़ल्ती अस्बाब:

(अ) माद्दी अस्बाब (Material Causes): अगर जिस्म में किसी खाने-पीने की चीज़ों, मिसाल के तौर पर ग़िज़ा (Diet), दवा (Medicine), ज़हर (Poison) से कोई मरज़ पैदा हो, तो उसे माद्दी सबब (Material cause) का मरज़ कहा जाता है।

(ब) ख़ल्ती अस्बाब (Humoral Causes): अगर जिस्म में बलग़म (Phlegm), सौदा (Black bile) या सफ़रा (Yellow bile) की ज़्यादती या कमी से कोई मरज़ पैदा हो, तो उसे ख़ल्ती सबब (Humoral cause) का मरज़ कहा जाता है।

3. शिरकी या कीमियावी अस्बाब:

शिरकी या कीमियावी अस्बाब को अस्बाब-ए-वासिला (Connecting causes) भी कहा जाता है। ये अलग से कोई अस्बाब नहीं हैं बल्कि ऊपर ज़िक्र किए गए दो अस्बाब की शिद्दत (Intensity) की सूरतें हैं।

(अ) शिरकी अस्बाब (Associated Causes): ऊपर ज़िक्र किए गए दो अस्बाब की शिद्दत की वजह से अगर अज़ू (Organ) के अफ़आल (Functions) में

तब्दीली आ जाए, यानी तहरीक (Stimulation), तहलील (Resolution) या तस्कीन (Sedation) पैदा हो जाए, तो उसे शिरकी सबब-ए-मरज़ कहा जाता है।

(ब) कीमियावी अस्बाब (Chemical Causes): ऊपर ज़िक्र किए गए दो अस्बाब की शिद्दत की वजह से अगर ख़ून (Blood) में तब्दीली आ जाए, यानी किसी ख़िल्त (Humor) की कमी-बेशी या ज़हर से अलामात ज़ाहिर हों, तो उसे कीमियावी सबब-ए-मरज़ कहा जाता है।

मरज़ की अलामात (Symptoms of Disease)

इंसानी जिस्म में जब कोई मरज़ पैदा होता है तो उसकी कुछ अलामात (Symptoms) ज़ाहिर होती हैं, जिसे आम तौर पर लोग मरज़ समझ रहे होते हैं, हालाँकि ये मरज़ नहीं बल्कि किसी मरज़ की अलामात होती हैं। वैसे तो अमराज़ (Diseases) की अलामात बहुत सारी हैं लेकिन उनमें से तीन बड़ी अलामात हैं:

1. दर्द (Pain)
2. वरम (Inflammation/Swelling)
3. बुख़ार (Fever)

ये तीनों किसी मरज़ की अलामात हैं, खुद मरज़ नहीं हैं। कानून मुफ़र्द आज़ा (Pakistani Medicine) की यही खूबी है कि इसमें अलामात का इलाज नहीं किया जाता बल्कि तशरीस (Diagnosis) के ज़रिए यह मालूम करने की कोशिश की जाती है कि ये तीन अलामात (दर्द, वरम, बुख़ार) किस मरज़ की वजह से हैं, और फिर उस मरज़ का इलाज किया जाता है न कि अलामात का।

1. दर्द (Pain)

दर्द एक ऐसी अलामत है जिसमें मरीज़ को अपने जिस्म के किसी मकाम (Location) पर तकलीफ़ होती है, वह बेचैनी महसूस करता है और अगर दर्द शदीद (Severe) हो तो उसे वह मकाम फटता हुआ महसूस होता है।

दर्द की कैफ़ियत: किसी भी चीज़ को महसूस करना आसाब (Nerves) का काम है, इसलिए किसी मकाम पर दर्द का महसूस होना इस बात की अलामत होती है कि आसाब की तरफ़ दौराने-ख़ून (Blood circulation) या तो ज़्यादा हो

गया है या कम हो गया है, यानी वह एतदाल (Balance) पर नहीं है। और कभी आसाब ज़ख़्मी हो जाएं तो भी दर्द का एहसास होता है। यह दर्द तीन किस्म का होता है: बल़ग़मी, सौद़ावी, स़फ़रावी।

2. वरम (Inflammation/Swelling)

तिब्बी ज़बान (Medical language) में वरम ऐसी हालत का नाम है जिसमें मरीज़ के किसी अज़ू (Organ) में छह अलामात नज़र आती हैं:

1. सूजन 2. दर्द 3. सुर्खी (Redness) 4. गर्मी (Heat) 5. सोज़िश (Burning sensation) 6. ख़ारिश (Itching)

वरम की कैफ़ियत: वरम का मतलब है जिस्म के किसी मकाम में उभार पैदा हो जाए या सूजन हो जाए। इस सूजन या सोज़िश की वजह उस मकाम पर ख़ून का जमा होना, या रतोबात (Fluids) की ज़्यादती या ऊतकों (Tissues) का टूट-फूट का शिकार होना होती है। यह वरम भी तीन किस्म का होता है: बल़ग़मी, सौद़ावी, स़फ़रावी।

3. बुख़ार (Fever)

बुख़ार ऐसी हालत को कहते हैं जिसमें इंसानी जिस्म का टेम्परेचर यानी हरारत (Heat) बढ़ जाती है। जिस्म में तपिश के साथ-साथ प्यास भी पैदा हो जाती है। यह हरारत आरज़ी (Temporary) होती है, इस हरारत को हरारत-ए-ग़रीबा (Foreign heat) यानी बेरूनी हरारत कहा जाता है।

बुख़ार की कैफ़ियत: इंसान के जिस्म में किसी अज़ू की तहरीक (Stimulation), तहलील (Resolution) या तस्कीन (Sedation) के मकाम पर मवाद (Matter) में तअफ़्फ़ुन (Infection/Sepsis) पैदा हो जाए तो वहां एक आरज़ी हरारत पैदा होती है। इस हरारत को मज़ीद तेज़ करने के लिए इंसानी तबीअत (Vital force) वहां दौराने-ख़ून तेज़ कर देती है। ख़ून की रफ़्तार को

अज़लात (Muscles) तेज़ करते हैं जिससे यह हरारत शिद्दत अख्तियार करके पूरे जिस्म में फैल जाती है और इसे ही हम बुख़ार कहते हैं। बुख़ार भी तीन किस्म का होता है: बल़ग़मी, सौद़ावी, स़फ़रावी।

तशरीस-ए-अमराज़ (Diagnosis of Diseases)

जब कोई इंसान बीमार होता है तो वह मुआलिज (Doctor/Physician) के पास आता है। मुआलिज का सबसे पहला काम यह होता है कि वह मरज़ की तशरीस (Diagnosis) करे। अलामात (Symptoms) को देखकर असल मरज़ तक पहुंचना और फिर उस मरज़ या मकाम-ए-मरज़ (Site of disease) का इलाज करना ही असल तरीका-ए-इलाज है। एलोपैथिक (Allopathic) यानी अंग्रेजी तरीका-ए-इलाज में मरज़ का इलाज नहीं किया जाता बल्कि अलामात को दबाने की कोशिश की जाती है। मिसाल के तौर पर जैसा कि ऊपर बताया गया कि दर्द, वरम या बुख़ार बज़ाते-खुद बीमारियां नहीं हैं बल्कि किसी और बीमारी की अलामत हैं, लेकिन अंग्रेजी तरीका-ए-इलाज में नशा-आवर या सुन्न करने वाली अदवियात (Medicines) देकर वक्ती तौर पर इन अलामात को दबा दिया जाता है, जिससे मरीज़ रिलीफ महसूस करता है, हालांकि मरज़ अब भी जिस्म में मौजूद होता है।

इस तरह अंग्रेजी डॉक्टर तीन, पांच या सात दिन की अदवियात देते हैं और जब गोली खाई जाती है तो अगले आठ घंटे तक वह दर्द या वरम दब जाता है और मरीज़ यह समझता है कि मैं ठीक हो गया हूं, हालांकि असल मरज़ का इलाज नहीं हो रहा होता। इसका नतीजा यह निकलता है कि बीमारी अपनी जगह मौजूद रहती है, जिस्म में तअफ़्फ़ुन (Sepsis/Infection) मज़ीद बिगड़ता रहता है और आखिरकार वह उज़ू (Organ) हमेशा के लिए डैमेज हो जाता है।

इसलिए हमेशा बीमारी का इलाज करना चाहिए न कि अलामत-ए-बीमारी का। अल्लाह तआला ने हकीम साबिर मुल्तानी (रह.) के ज़रिए इंसानियत पर

एहसान-ए-अज़ीम फ़रमाया और उन्होंने मरज़ की तशरीस के फितरी (Natural) तरीके मुतआरिफ़ करवाए जिनसे हम असल मरज़ का इलाज कर सकते हैं। चूंकि कानून मुफ़र्द आज़ा (Pakistani Medicine) में असल मरज़ का इलाज किया जाता है जो कभी ग़िज़ा (Diet) और कभी दवा के ज़रिए होता है, इसलिए इसमें अंग्रेजी इलाज के मुकाबले थोड़ा टाइम ज़्यादा लगता है। इसकी मिसाल ऐसी है जैसे गंदे सोफे को धोने के बजाय उस पर चादर डाल दी जाए; अंग्रेजी इलाज चादर डालकर गंदगी छुपाता है जबकि कानून मुफ़र्द आज़ा उस गंदगी को मुकम्मल साफ करता है।

तशरीस-ए-अमराज़ के तरीके (Methods of Diagnosis)

कानून मुफ़र्द आज़ा में किसी भी मरज़ की तशरीस करने के कई तरीके हैं:

नब्ज़ (Pulse) से तशरीस 2. कारूरा (Urine) से तशरीस 3. ज़बान (Tongue) से तशरीस

1. नब्ज़ से तशरीस (Diagnosis by Pulse)

दिल हर वक्त फैलता और सुकड़ता रहता है जिसे दिल की हरकत (Heart movement) कहते हैं। दिल की इस हरकत से ख़ून शरियानों (Arteries) के ज़रिए पूरे जिस्म में जाता है जिससे शरियानें भी हरकत करती हैं। शरियानों की इसी हरकत से यह जानने की कोशिश की जाती है कि मुफ़र्द आज़ा में से किस उज़ू (Organ) की तरफ़ दौराने-ख़ून (Blood circulation) ज़्यादा है और किसकी तरफ़ कम है। इसी को तशरीस ब-ज़रिए नब्ज़ कहा जाता है। नब्ज़ के ज़रिए तीन चीज़ों–कुव्वत (Power), हरकत (Movement), हरारत (Heat)–को जानने की कोशिश की जाती है और यह मालूम किया जाता है कि ख़ून का दबाव (Blood

pressure) कितना है, ख़ून में रतोबात (Fluids) कितनी हैं और ख़ून में हरारत का तवाज़ुन (Balance) क्या है।

मकाम-ए-नब्ज़ (Site of Pulse)

यह तशरीह़ जिस्म की कुछ खास शरियानों से मुमकिन है, जिनमें कलाई (Wrist), कनपटी (Temple), गर्दन (Neck) और टखने (Ankle) की शरियान शामिल है। लेकिन सबसे बेहतरीन मालूमात कलाई की शरियान (Radial artery) देती है, इसलिए आम तौर पर कलाई की शरियान को ही नब्ज़ कहा जाता है।

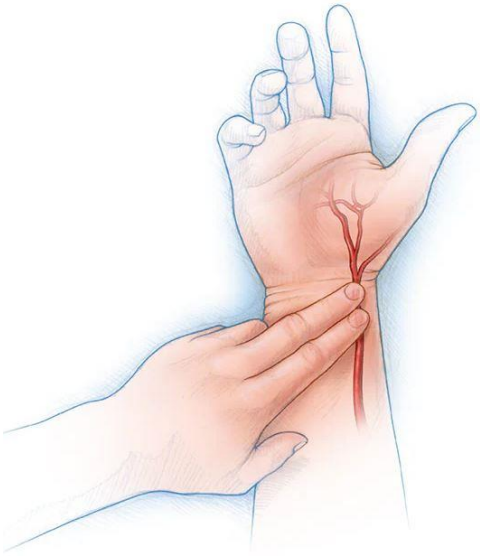

नब्ज़ देखने का तरीका (Method of Pulse Examination):

मरीज़ की कलाई (Wrist) पर अपनी चार उंगलियाँ इस तरह रखें कि आपकी शहादत वाली उंगली (Index finger) मरीज़ के अंगूठे वाली तरफ हो, कोहनी (Elbow) की तरफ न हो।

नब्ज़ पर उंगलियाँ खड़ी-खड़ी रखें, यानी उंगली के पोरों (Fingertips) का वह हिस्सा जो नाख़ून की तरफ है, उसे नब्ज़ पर रखें। नब्ज़ ऐसी हालत में चेक न करें जब मरीज़ का साँस फूला हुआ हो, बल्कि मरीज़ को दो-चार मिनट बैठने दें ताकि वह नॉर्मल हालत में आ जाए, उसके बाद नब्ज़ चेक करें।

मुफ़र्द नब्ज़) Simple Pulses)

अजलाती नब्ज (Muscular Pulse):

कलाई पर उंगलियाँ रखें, अगर नब्ज़ बिल्कुल ऊपर महसूस हो यानी हल्का सा हाथ रखते ही महसूस हो, तो यह अज़लाती नब्ज़ है। इसे सौदावी या रियाही (Gaseous) नब्ज़ भी कहा जाता है। यह नब्ज़ बता रही है कि मरीज़ के जिस्म में अज़लाती तहरीक (Muscular stimulation) है, यानी ख़िल्त-ए-सौदा (Black bile), रियाह (Gas) और खुश्की (Dryness) की ज़्यादती है।

गुद्दी नब्ज (Glandular Pulse):

अगर नब्ज़ बिल्कुल ऊपर महसूस न हो बल्कि मामूली सा दबाव देने से महसूस हो, और धागे की तरह पतली हो, तो यह गुद्दी नब्ज़ है। यह नब्ज़ बता रही है कि मरीज़ के जिस्म में गुद्दी तहरीक (Glandular stimulation) है, यानी ख़िल्त-ए-सफ़रा (Yellow bile) और गर्मी (Heat) की ज़्यादती है।

आसाबी नब्ज (Nervous Pulse):

और अगर नब्ज़ हल्का दबाव देने से भी महसूस न हो बल्कि बहुत ज़्यादा दबाव देने से बहुत नीचे महसूस हो, और फूली हुई हो, तो यह आसाबी नब्ज़ है। यह नब्ज़ बता रही है कि जिस्म में आसाबी तहरीक (Nervous stimulation) है और मरीज़ के जिस्म में सर्दी (Cold) और रतोबात (Fluids) यानी ख़िल्त-ए-बलग़म (Phlegm) की ज़्यादती है।

मुरक्कब नब्ज़ (Compound Pulse)

मुरक्कब नब्ज़ मालूम करने के लिए छह चीज़ों को देखा जाता है:

2. मकाम (Location/Position)
3. लम्बाई (Length)
4. हजम (Volume/Thickness)
5. रफ़्तार (Speed/Rate)
6. ठोकर (Strength/Impulse)
7. नर्मी-सख़्ती (Softness/Hardness)

1. अज़लाती (Muscular):

1. मकाम: ऊपर (Superficial)
2. लम्बाई: लम्बी (Long)
3. हजम: पतली (Thin)
4. रफ़्तार: तेज़ (Fast)
5. ठोकर: क़वी (Strong/Forceful)
6. सख़्ती: सख़्त (Hard)

2. गुद्दी (Glandular):

1. मकाम: दर्मियान (Middle)
2. लम्बाई: दर्मियान (Medium)
3. हजम: दर्मियान (Medium)
4. रफ़्तार: दर्मियान (Moderate)
5. ठोکर: दर्मियान (Moderate)
6. नर्मी-सख़्ती: दर्मियान (Moderate)

3. आसाबी (Nervous):

1. मकाम: नीचे (Deep)
2. लम्बाई: छोटी (Short)
3. हजम: चौड़ी (Wide/Full)
4. रफ़्तार: सुस्त (Slow)
5. ठोکर: ज़ईफ़ (Weak)
6. नर्मी: नर्म (Soft)

पल्स डायग्नोसिस के लिए छह पैरामीटर्स का ज्ञान
1
2
3
4
5
6
मकाम
लम्बाई
हजम
रफ़्तार
ठोकर
नर्मी-सख़्ती
मकाम
ऊपर
अज़लाती
दर्मियान
गुद्दी
नीचे
आसाबी
लम्बाई
लम्बी
अज़लाती
दर्मियान
गुद्दी
छोटी
आसाबी
हजम
पतली
अज़लाती
दर्मियान
गुद्दी
चौड़ी
आसाबी
रफ़्तार
तेज़
अज़लाती
दर्मियान
गुद्दी
सुस्त
आसाबी
ठोकर
क़वी
अज़लाती
दर्मियान
गुद्दी
ज़ईफ़
आसाबी
नर्मी-सख़्ती
सख़्त
अज़लाती
दर्मियान
गुद्दी
नर्म
आसाबी
www.TabeebPedia.com

१. पल्स की जगह को महसूस करें।

क्रम	नब्ज़ की स्थिति	नब्ज़ की किस्म
1	बिल्कुल ऊपर: उंगली रखते ही महसूस हो रही है। कभी-कभी आँखों से भी (थड़कती हुई) नज़र आती है।	अज़लाती (Muscular)
	दरमियान: बिल्कुल ऊपर नहीं, बल्कि हल्का सा दबाव देने पर महसूस होती है।	गुद्दी (Glandular)
	नीचे: हल्के दबाव से भी महसूस नहीं होती, बहुत ज़्यादा दबाव देने पर गहराई में महसूस होती है।	आसाबी (Nervous)

२ .नब्ज की लम्बाई को महसूस करें

क्रम	नब्ज़ की लम्बाई	नब्ज़ की किस्म
2	नब्ज़ की लम्बाई चार उंगलियाँ या उससे भी ज़्यादा लम्बी है।	अज़लाती (Muscular)
	नब्ज़ की लम्बाई दो उंगली या तीन उंगली तक है। तीन से ज़्यादा नहीं।	गुद्दी (Glandular)
	नब्ज़ की लम्बाई एक उंगली या डेढ़ उंगली है। (इसमें हरारत/गर्मी बिल्कुल नहीं होती)।	आसाबी (Nervous)

३ .नब्ज का हजम महसूस करें

क्रम	नब्ज़ का हजम	नब्ज़ की किस्म
3	नब्ज़ चौड़ी नहीं है बल्कि धागे की तरह बारीक है। (उंगली के आधे पोर से कम)।	अज़लाती
	नब्ज़ मामूली चौड़ी है, यानी दो या तीन धागों के बराबर। (उंगली के आधे पोर तक)।	गुद्दी)
	नब्ज़ ज़्यादा चौड़ी और नर्म है। (उंगली के आधे पोर से ज़्यादा)।	आसाबी

४. नब्ज की रफ़्तार महसूस करें

क्रम	नब्ज़ की रफ़्तार	नब्ज़ की किस्म
4	बहुत तेज़ रफ़्तार है। (सरी/Fast)	अज़लाती
	रफ़्तार सुस्त या दरमियानी है, मगर नब्ज़ तंग (Narrow) है।	गुद्दी
	रफ़्तार सुस्त है, मगर नब्ज़ चौड़ी है। (बती/Slow)	आसाबी

५. नब्ज की ठोकर महसूस करें

क्रम	नब्ज़ की ठोकर	नब्ज़ की किस्म
5	नब्ज़ ज़ोरदार ठोकर मारती है, गोया उंगलियों को उठा देती है। (क़वी/Strong)	अज़लाती
	ठोकर मामूली या दरमियानी है, मगर नब्ज़ तंग है। (ज़ईफ़/Weak)	गुद्दी
	ठोकर मामूली है, मगर नब्ज़ चौड़ी है। (ज़ईफ़/Weak)	आसाबी

६. नब्ज की सख़्ती को महसूस करें

क्रम	नब्ज़ की सख़्ती	नब्ज़ की किस्म
6	नब्ज़ बहुत सख़्त है। (सुल्ब/Hard)	अज़लाती
	नब्ज़ मोतदिल (Balanced/Medium) है।	गुद्दी
	नब्ज़ बहुत नर्म है। (लईन/Soft)	आसाबी

1. आसाबी गुद्दी (Nervo-glandular)

एक या दो उंगलियों के नीचे, बिल्कुल गहराई में, सुस्त, चौड़ी-मोटी और नर्म होगी। (पेशाब: सफ़ेद, हल्का ज़रदी माइल)

2. आसाबी अज़लाती (Nervo-muscular)

दो उंगलियों के नीचे, कुछ गहराई में हो, चौड़ी और रतोबात से पुर, नर्म भी हो, क़दरे सुस्त और ज़ईफ़ हो। (पेशाब: बिल्कुल सफ़ेद)

3. अज़लाती आसाबी (Musculo-nervous)

तीन-चार उंगलियों के पोरों के नीचे, मकाम में ऊपर, मोटी यानी हवा से पुर, रफ़्तार में तेज़ होगी। (पेशाब: सुर्ख सफ़ेदी माइल)

4. अज़लाती गुद्दी (Musculo-glandular)

चार उंगलियों को क्रॉस करती हुई, मकाम में ऊपर, हजम में बारीक और रफ़्तार व ठोकर में तेज़, सख़्त होगी। (पेशाब: सुर्ख, हल्का ज़रदी माइल)

5. गुद्दी अज़लाती (Glando-muscular)

दो-तीन उंगलियों के नीचे, दरमियान में, बारीक होगी और तेज़। (पेशाब: ज़र्द, हल्का सुर्ख़ी माइल)

6. गुद्दी आसाबी (Glando-nervous)

तीन या चार उंगलियों के नीचे, दरमियान में, चौड़ी-मोटी और सुस्त होगी। (पेशाब: ज़र्द, हल्का सफ़ेदी माइल)

कारूरा (पेशाब) से तशरीस

कारूरा दरअसल उस शीशी को कहते हैं जिसमें मरीज़ अपना पेशाब तबीब (Physician) को दिखाने के लिए लाता है। लेकिन अदब और घिन को मद-ए-नज़र रखते हुए पेशाब का नाम नहीं लिया जाता, सिर्फ उस बर्तन का नाम ले लेते हैं जिसमें पेशाब होता है, और इसी बर्तन या शीशी को कारूरा कहते हैं। कारूरा से तशरीस को बड़ी अहमियत हासिल है। मिसाल के तौर पर अगर एक मरीज़ आपके पास नहीं है बल्कि किसी दूसरे शहर या मुल्क में है, तो आप उसके पेशाब के रंग की तस्वीर मंगवा कर तशरीस कर सकते हैं।

शरायत (Conditions):

1. कारूरा 5 से 6 घंटे की नींद के बाद वाला होना चाहिए।
2. कारूरा की मिक़दार (Quantity) पूरी होनी चाहिए, यानी मरीज़ को जितना भी पेशाब आता है वह पूरा होना चाहिए।
3. बोतल हमेशा एक या डेढ़ लीटर वाली साफ-सुथरी होनी चाहिए। पूरा पेशाब उसमें डालना है, नमूना (Sample) नहीं लेना।
4. पेशाब लेने से पहले कोई भी दवाई नहीं खानी, चाहे वह होम्योपैथिक हो, एलोपैथिक हो या यूनानी (देसी) हो।
5. कोई भी आसाबी ग़िज़ा (Nervous diet) इस्तेमाल नहीं करनी, मसलन: हल्दी, दूध, दलिया, कस्टर्ड, सेवियां, तरबूज या कोई ऐसा मशरूब (Drink) इस्तेमाल नहीं करना।
6. उसके बाद जब तस्वीर बनाई जाए, तो वह बिल्कुल उसी रंग की हो जो असल पेशाब की रंगत है। उसमें फ़्लैश नहीं मारना, बिना फ़्लैश के तस्वीर निकालनी है ताकि असल रंगत नज़र आए।

7. पेशाब को ज़्यादा देर रखकर तस्वीर नहीं निकालनी। दो घंटे से पहले-पहले तस्वीर निकालनी है। अगर तबीब के पास लेकर जाना है तो भी वह दो घंटे से ज़्यादा पुराना नहीं होना चाहिए, वरना उसका रंग बदल जाएगा।

कारूरा के मुफ़र्द तीन रंग:

1. आसाबी मिज़ाज में पेशाब का रंग सफ़ेद होता है।
2. अज़लाती मिज़ाज में पेशाब का रंग सरसों के तेल की तरह (Reddish/Dark) होता है।
3. गुद्दी मिज़ाज में पेशाब का रंग पीला होता है।

कारूरा के छह मुरक्कब रंग:

1. आसाबी अज़लाती (Cold-moist): इस तहरीक में पेशाब पानी की तरह सफ़ेद और मिक़दार में बहुत ज़्यादा होता है।
2. अज़लाती आसाबी (Cold-dry): इस तहरीक में पेशाब का रंग सुर्ख़ सियाही माइल (Reddish-black) होता है।
3. अज़लाती गुद्दी (Hot-dry): इस तहरीक में पेशाब का रंग सुर्ख़ ज़रदी माइल (Reddish-yellow) होता है।
4. गुद्दी अज़लाती (Dry-hot): इस तहरीक में पेशाब का रंग ज़र्द सुर्ख़ी माइल (Yellowish-red) होता है।
5. गुद्दी आसाबी (Moist-hot): इस तहरीक में पेशाब का रंग ज़र्द सफ़ेदी माइल (Yellowish-white) होता है।
6. आसाबी गुद्दी (Hot-moist): इस तहरीक में पेशाब का रंग सफ़ेद ज़रदी माइल (Whitish-yellow) होता है।

मशीनी तहरीक और कीमियाई तहरीक के असरात

(Effects of Mechanical and Chemical Stimulation)

जो रंग ज़्यादा नुमाया (Prominent) होगा वह तहरीक का पहला मिज़ाज (Primary Temperament) होगा और बदन के तमाम आज़ा (Organs) इसी तहरीक में चल रहे होंगे। जो रंग कम होगा, वह तहरीक का दूसरा रंग होगा। जो रंग बिल्कुल नज़र न आए वह सुकून (Rest) में होगा और तहरीक से कटा हुआ होगा।

मसलन: अगर कारूरा (Urine) में सुर्ख रंग (Red color) ज़्यादा हो और सफ़ेद या नीलाहट माइल सफ़ेद (Bluish-white) नज़र आए तो अज़लात (Muscles) में तहरीक तेज़ होगी, दिल के अफ़आल (Functions) में शिद्दत होगी, और सौदा (Melancholic humor) व खुश्की बढ़ेगी।

सफ़ेदी माइल रंग (Whitish color) मशीनी तहरीक से मुतास्सिर (Affected) अज़ू को ज़ाहिर करता है, जबकि जो रंग कमज़ोर होता जा रहा हो वह कीमियाई तहरीक को ज़ाहिर करता है। अगर ज़र्द रंग नज़र न आए तो समझ लें कि वह अज़ू तहरीक में नहीं, बल्कि मुकम्मल सुकून में है।

मुख्तसर बयान (Summary)

1. सुर्ख रंग (Red color) → अज़लात में तहरीक तेज़, खुश्की ज़्यादा।

जिस्म में असरात: तुर्शी (Acidity), रियाह (Flatulence), खुश्की, सर्दी, सौदा की ज़्यादती।

2. ज़र्द रंग (Yellow color) → ग़ुदद (Glands) में तहरीक, गर्मी ज़्यादा।

जिस्म में असरात: जलन (Burning sensation), बेचैनी (Restlessness), गर्मी, सफ़रा (Bile) की ज़्यादती।

3. सफ़ेद रंग (White color) → आसाब (Nerves) में तहरीक, सर्दी ज़्यादा।

जिस्म में असरात: खारी-पन (Alkalinity), तरी (Moisture), सर्दी, बल्ग़म (Phlegm) की ज़्यादती।

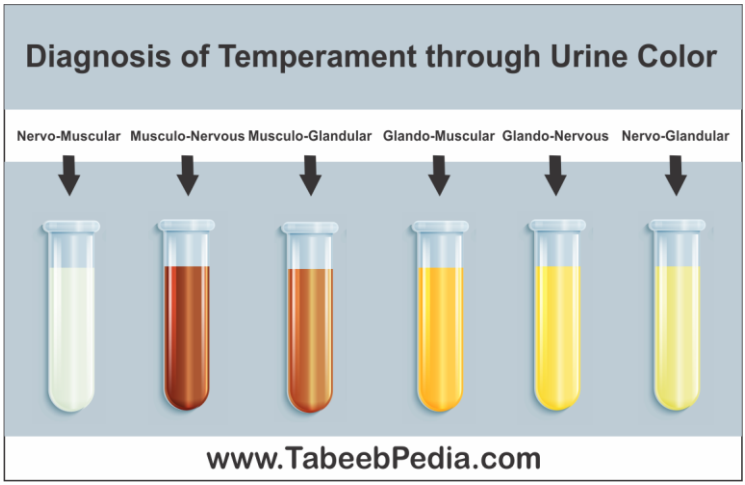

मीठे सोडे से पेशाब के ज़रिए तशरीस (Diagnosis via Baking Soda)

मरीज़ का पेशाब किसी जार में 100 ml लें। फिर इसमें 3 ग्राम सोडा डालें। अब इसके अंदर जो कीमियाई रद्दे-अमल (Chemical reaction) होगा उसे नोट करें:

1. अगर पेशाब में मीठा सोडा डालने से इंतहाई शदीद (Extreme) रद्दे-अमल हो, शदीद तरीन उबाल आए, बहुत ज़्यादा झाग पैदा हो और पेशाब बर्तन की सतह से बाहर निकलने की कोशिश करे, तो यह शदीद तरीन तेज़ाबियत (Acidity) का पता देता है। जिस्म में खुश्की की ज़्यादती होगी, कब्ज़ होगी और इसका मिज़ाज अज़लाती होगा।

2. अगर पेशाब में मीठा सोडा डालने से रद्दे-अमल तो होता है, उबाल भी आता है, लेकिन इतना नहीं आता कि पेशाब बाहर निकलने की कोशिश करे, तो यह सफ़राविय्यत (Biliary/Heat) का पता देता है। जिस्म में हरारत की ज़्यादती होगी, सफ़रा की ज़्यादती होगी, सोज़ाकी ज़हर (Gonorrheal toxin) होगा, आंतों की सोज़िश (Inflammation) होगी और इसका मिज़ाज गुद्दी होगा।

3. अगर पेशाब में मीठा सोडा डालने से कोई रद्दे-अमल न हो और कोई कीमियावी अमल न हो, सोडा नीचे तह में जाकर बैठ जाए, तो यह आसाबियत (Nervous/Alkalinity) का पता देता है। जिस्म में बल्ग़म की ज़्यादती है, पेशाब ज़्यादा आता है, ब्लड प्रेशर लो रहता है और इसका मिज़ाज आसाबी होगा।

यह तरीका दरअसल पेशाब की pH मालूम करने का एक रिवायती और सादा तरीका है। तेज़ाब (Acid) और असास (Base) का बाहमी अमल कार्बन डाइऑक्साइड गैस पैदा करता है जिससे झाग बनती है। अज़लाती मिज़ाज में चूंकि तेज़ाबियत (Acidity) इंतिहा पर होती है, इसलिए रद्दे-अमल भी शदीद तरीन होता है।

बराज़ (पाख़ाना) से तशरीस (Diagnosis via Stool)

पाख़ाने के एतबार से इंसान की चार कैफ़ियतें हैं, जिनमें से एक सेहत की हालत है यानी पाख़ाना बाक़ायदगी से नॉर्मल हालत में खारिज हो। जबकि तीन हालतें बीमारी की हैं:

1. इसहाल या दस्त (Diarrhea) 2. पेचिश या मरोड़ (Dysentery) 3. कब्ज़ (Constipation)

2. इसहाल या दस्त (Diarrhea)

इसहाल आसाबी तहरीक (Nervous stimulation) की अलामत हैं। यानी जब आंतों के आसाबी निज़ाम में तेज़ी पैदा होती है तो पाख़ाना निहायत रक़ीक़ (Liquid) और पानी की तरह पतला खारिज होता है और रंग भी अक्सर सफ़ेद या सब्ज़ (Green) होता है।

3. पेचिश या मरोड़ (Dysentery)

पेचिश गुद्दी तहरीक (Glandular stimulation) की अलामत हैं। यानी जब आंतों के गुद्दी निज़ाम में तेज़ी पैदा होती है तो पाख़ाना आंतों में मरोड़, दर्द और तकलीफ़ के साथ बार-बार आता है और कभी इसमें ख़ून की आमिज़िश (Blood mixture) भी होती है।

4. कब्ज़ (Constipation)

कब्ज़ अज़लाती तहरीक (Muscular stimulation) की अलामत है। यानी जब मैदा (Stomach) और आंतों के अज़लात (Muscles) में तेज़ी पैदा होती है तो कब्ज़ की कैफ़ियत पैदा हो जाती है। कभी-कभी इतनी सख़्त कब्ज़ हो जाती है

कि पाख़ाना खुश्की की वजह से लकड़ी या पत्थर की तरह सख़्त हो जाता है और उसका खारिज होना ही मुश्किल हो जाता है।

कैफियत	तहरीक	कवाम (Texture)	मिज़ाज
इसहाल (दस्त)	आसाबी	रकीक / पानी की तरह	तरी, सर्दी
पेचिश (मरोड़)	गुद्दी	बार-बार, दर्द के साथ	गर्मी, खुश्की
कब्ज़	अज़लाती	सख़्त / खुश्क	खुश्की, सर्दी

Condition	Excitement	Consistency	Temperament
Diarrhea	Neural	Thin/Watery	Moist/Cold
Dysentery	Glandular	Frequent/Colicky	Hot/Dry
Constipation	Muscular	Hard/Dry	Dry/Cold

मुँह का ज़ायका और तशरीस (Diagnosis by Taste)

1. आसाबी या बलग़मी तहरीक में मुँह का ज़ायका मीठा, फीका या कसीला होता है।

2. अज़लाती या सौद्दावी तहरीक में मुँह का ज़ायका कड़वा या तुर्श (खट्टा) होता है।

3. गुद्दी या सफ़रावी तहरीक में मुँह का ज़ायका नमकीन या चरपरा (Spicy/Pungent) होता है।

ज़बान से तशरीस (Diagnosis by Tongue)

1. अगर ज़बान बिल्कुल सफ़ेद हो, और इस पर सफ़ेद तह जमी हुई हो तो यह आसाबी तहरीक की अलामत है।

2. अगर ज़बान दरमियान से सफ़ेद और साइडों से सुर्ख (लाल) हो तो यह अज़लाती तहरीक की अलामत है।

3. अगर ज़बान बिल्कुल साफ़-सुथरी और सुर्ख हो तो यह ग़ुद्दी तहरीक की अलामत है।

टेबल:

मेयार (Criteria)	आसाबी (Nervous)	अज़लाती (Muscular)	ग़ुद्दी (Glandular)
मुँह का ज़ायका	मीठा, फीका या कसीला	कड़वा या तुर्श	नमकीन या चरपरा
ज़बान की रंगत	बिल्कुल सफ़ेद (सफ़ेद तह के साथ)	दरमियान से सफ़ेद, किनारे सुर्ख	बिल्कुल साफ़ और सुर्ख

जिस्म की रंगत से तशरीह़ (Diagnosis by Body Color)

1. अगर इंसान के जिस्म, चेहरे, आँखों और होंठों का रंग **सफ़ेद** हो, तो यह **आसाबी तहरीक** की अलामत है।
2. अगर इंसान के जिस्म, चेहरे, आँखों और होंठों का रंग **सुर्ख़ सियाही माइल** (Reddish-black) हो, तो यह **अज़लाती तहरीक** की अलामत है।
3. अगर इंसान के जिस्म, चेहरे, आँखों और होंठों का रंग **ज़र्द** (Yellow) हो, तो यह **गुद्दी तहरीक** की अलामत है।

बल़ग़म से तशरीह़ (Diagnosis by Phlegm)

1. **आसाबी तहरीक** में बल़ग़म सफ़ेद रंग की होती है और आसानी से खारिज (निकालना) हो जाती है।
2. **अज़लाती मिज़ाज** में बल़ग़म गाढ़ी, मटियाले रंग की होती है और काफी मुश्किल से खारिज होती है।
3. **गुद्दी मिज़ाज** में बल़ग़म ज़र्द रंग की होती है और थोड़ा ज़ोर लगाने से खारिज होती है।

बालों से तशरीह़ (Diagnosis by Hair)

1. **बढ़ना:** बाल अगर जल्द उगें तो यह खुश्की की अलामत है। बालों की कसरत (ज़्यादती) गर्मी पर दलालत करती है और बालों की क़िल्लत (कमी) रतूबत (Moisture) पर दलालत करती है।

2. **मोटाई:** बालों की ग़लज़त यानी मोटा होना 'बुखारात-ए-दुखानिया' (Smoky vapors) की कसरत पर दलालत करता है, जबकि बालों का बारीक होना इनकी क़िल्लत पर दलालत करता है।

3. **बनावट:** बालों का घुंघराला होना गर्मी-खुश्की पर और सीधा होना सर्दी-तरी पर दलालत करता है।

4. **रंगत:** बालों का काला होना गर्मी पर और प्याज़ी (Light brownish/Fair) रंग होना सर्दी पर दलालत करता है। यही वजह है कि गर्म इलाकों के लोगों के बाल काले और ठंडे इलाकों के लोगों के बाल प्याज़ी रंग के होते हैं। बालों की सफ़ेदी सर्दी पर दलालत करती है, जिसके साथ कभी तरी और कभी खुश्की होती है।

ग़िज़ाओं का मिज़ाज (Temperament of Foods)

ग़िज़ाओं का मिज़ाज और उनकी तफ़सील यह एक अलग इल्म है जिस पर हज़ारों सफ़हात की किताबें लिखी गई हैं, यहाँ एक सतर में इख़्तेसार के साथ एक कुलिया बता देता हूँ, और अक्सर यह कुलिया दुरुस्त ही होता है, कभी इसके बरअक्स भी हो सकता है।

1। जितनी भी ग़िज़ाएँ या फल हैं, अगर उनका ज़ायका मीठा, फीका या कसीला हो और रंग सफ़ेद या नीला हो ऐसी चीज़ें आम तौर पर आसाबी मिज़ाज रखती हैं।

2। जितनी भी ग़िज़ाएँ या फल हैं, अगर उनका ज़ायका तुर्श या कड़वा हो, और रंग सुर्ख या सियाह हो ऐसी चीज़ें आम तौर पर अज़लाती मिज़ाज रखती हैं।

3। जितनी भी ग़िज़ाएँ या फल हैं अगर उनका ज़ायका नमकीन या चरपरा हो, और रंग ज़र्द हो तो ऐसी चीज़ें आम तौर पर गुद्दी मिज़ाज रखती हैं।

मवालीद-ए-सलासा का मिज़ाज (Temperament of the Three Kingdoms)

मवालीद का लफ़्ज़ मौलूद यानी पैदाइश से है मवालीद-ए-सलासा से मुराद आम तौर पर तीन चीज़ें ली जाती हैं: जमादात, नबातात, हैवानात। मजमूई लिहाज़ से आम तौर पर इनका मिज़ाज यह होता है:

1। जमादात (Minerals)

जमादात उन चीज़ों को कहा जाता है जो जामिद हैं और उनमें बज़ाहिर कोई हिस्स-ओ-हरकत नहीं है जैसे पत्थर और धातुएँ वग़ैरह। तिब्बी लिहाज़ से आम तौर पर इनका मिज़ाज सर्द खुश्क होता है, और अज़लाती तहरीक पैदा करती हैं।

2। नबातात (Plants)

जमादात से ऊपर नबातात होती हैं जो अगरचे हैवान तो नहीं लेकिन जमादात के मुक़ाबले में उनके अंदर कुछ हिस्स-ओ-हरकत पाई जाती है, जैसे दरख़्त, फ़सलें और सब्ज़ियाँ वग़ैरह। आम तौर पर इनका मिज़ाज तर सर्द, या तर गर्म होता है और आसाबी तहरीक पैदा करती हैं।

3। हैवानात (Animals)

नबातात की इंतहाई तरक़्क़ी-याफ़्ता शक्ल हैवानात हैं, इनमें रूहे-हैवानी पाई जाती है और जीते-जागते जिस्म होते हैं, जैसे जानवर, परिंदे, कीड़े-मकोड़े वग़ैरह। आम तौर पर इनका मिज़ाज गर्म खुश्क होता है और गुद्दी तहरीक पैदा करते हैं।

1

आसाबी तहरीक का तशरीसी चार्ट बराए कानून मुफ़्रद अज़ा आसाबी तहरीक (आतशकी ज़हर। अल्कली।) (Nervous Tissue)	
तशरीस के तरीके	तशरीस की अलामात (लक्षण)
जिस्मानी कैफियत	बलग़म की ज़्यादती। नज़ला-ज़ुकाम की रंगत का सफ़ेद आना। क़िल्लत-उद-दम (खून की कमी)। ब्लड प्रेशर का लो रहना। मोटापा। दांतों का हिलना। सुस्ती व काहिली। नज़र की कमज़ोरी।
मुँह से तशरीस	ज़ायका फीका / मीठा। ज़बान पर सफ़ेद तह। दांतों का हिलना। मसूड़ों की खराबी। ज़बान पर सफ़ेद दाने जो ज़ोफ़-ए-हाज़मा की अलामत हैं।
हाथ-पाँव से तशरीस	हाथ-पाँव में ग़ैर-इरादी हरकतें जो रअशा (कंपकंपी) की अलामत हैं। नाखून सफ़ेद या पीले होना खून की कमी की अलामत है। नाखून पर सफ़ेद निशान कैल्शियम की कमी की अलामत है।
अमराज़-ए-मैदा की तशरीस	भूख का खत्म हो जाना या न लगना। बंद हैज़ा। बद-हज़मी। दस्त। संग्रहणी। क़ै (उल्टी)। दर्द-ए-मैदा। मैदा का अल्सर।
जोड़ों का दर्द	वजअ-उल-मफ़ासिल (बड़े जोड़ों का दर्द): आराम करने से ज़्यादा और हरकत करने से कम होना।

तशरीस के तरीके	तशरीस की अलामात (लक्षण)
ज़ियाबीतस से तशरीस	असली शुगर: ज़्यादा कमज़ोरी और जिस्म का गलना। वज़न का गिरना। मरीज़ के पेशाब पर चींटियों का आना। पेशाब का सफ़ेद, बार-बार और कसरत से आना। बाज़ औक़ात पेशाब का कंट्रोल खत्म हो जाना।
दमा से तशरीस	इस तहरीक में तरी यानी बलग़म बढ़ जाने से दमा की कैफियत पैदा होती है, फेफड़ों में बलग़म की भरमार होती है।
कारूरा (पेशाब) टेस्ट	सुबह के कारूरा में सुर्ख लिटमस पेपर डालने से रंग नीला होना आसाबी तहरीक है। मीठा सोडा डालने से कोई उबाल न आना भी आसाबी तहरीक की पहचान है।
स्पर्म से तशरीस	स्पर्म आतशकी ज़हर से मुतास्सिर होते हैं। जिरयान। मर्दाना कमज़ोरी। स्पर्म का कमज़ोर, टेढ़े या दूसरे (Abnormal) होना।
खवातीन के अमराज़	हैज़ का कम आना या लेट होना। बंदिश-ए-हैज़ के साथ जिस्म का फूलना। ल्यूकोरिया में सफ़ेद रतूबत का निकलना।

2

अज़लाती तहरीक का तशरीसी चार्ट बराए कानून मुफ़्रद अज़ा अज़लाती तहरीक (बवासीरी ज़हर। सौदावियत। खुश्की। तेज़ाबियत।) (Muscular Tissue)	
तशरीस के तरीके	तशरीस की अलामात (लक्षण)
जिस्मानी कैफियत	जिस्म में खुश्की। एसिडिटी। डकारें। तबख़ीर (गैस)। कब्ज़। रतूबात का जमना। जिस्मानी रंगत: सुर्ख या सियाही माइल (लाल या काली झलक)।
मुँह से तशरीस	मुँह का ज़ायका तुर्श (खट्टा) या नमकीन। ज़बान पर सुर्ख दाने। ज़बान पर कट (दरारें) होना।
हाथ-पाँव से तशरीस	हाथ-पाँव का गर्म रहना सोज़िश-ए-मैदा की अलामत। हाथ-पाँव में जलन तेज़ाबियत की अलामत। खुश्की के कारण नाखूनों का झड़ना। नाखून पर काली लकीरें सौदा की अलामत।
अमराज़-ए-मैदा की तशरीस	दर्द-ए-मैदा। नफ़ख़-ए-मैदा (पेट फूलना)। फतक़ (Hernia)। जूअ-उल-कल्ब (अत्यधिक भूख)। खारिश-ए-मैदा। क़ौलंज (Colic)। बवासीर बादी। क़ुरूह-ए-मैदा (अल्सर)। यूरिक एसिड।
जोड़ों का दर्द	हजर-उल-मफ़ासिल: जोड़ों का पत्थर की तरह सख्त हो जाना। रतूबात का खुश्क होना। दबाने से दर्द का अहसास होना।

तशरीस के तरीके	तशरीस की अलामात (लक्षण)
ज़ियाबीतस और दमा	गैस और तेज़ाबियत से पेशाब ज़्यादा आना और रंगत में सुर्खी होना। फेफड़ों में खुश्की और सोज़िश से बलग़म का जमना। सांस लेते समय सीटी की आवाज़ आना। खुश्क और लंबी खांसी।
मैदा का अल्सर	पाख़ाने की रंगत सियाही या सुर्खी माइल। एहतेलाम (Nightfall)। कब्ज़। रीह (गैस)। तबख़ीर और डकारें।
कारूरा (पेशाब) टेस्ट	सुबह के कारूरा में नीला लिटमस पेपर डालने से रंग सुर्ख होना अज़लाती तहरीक है। मीठा सोडा डालने पर तेज़ी से उबाल आना भी अज़लाती नब्ज़ की पहचान है।
स्पर्म से तशरीस	इस तहरीक में सौदावियत (खुश्की) की वजह से स्पर्म पैदा होकर मर जाते हैं।
खवातीन के अमराज़	खुश्की के कारण कसरत-ए-हैज़ (ज़्यादा ब्लीडिंग)। हार्मोनल मसाइल। बाएं पिस्तान (Breast) में गिलटी (Lump)। ल्यूकोरिया में लेसदार रतूबत का निकलना।

3

गुद्दी तहरीक का तशरीसी चार्ट बराए कानून मुफ़्रद अज़ा गुद्दी तहरीक (सोज़ाकी ज़हर। सोडियम। सफ़राविय़त। जलन। इंतशार-ए-खून) (Epithelial Tissue)	
तशरीस के तरीके	तशरीस की अलामात (लक्षण)
जिस्मानी कैफियत	सफ़रा की ज़्यादती। पेशाब में जलन। दिल की घबराहट। खून की तेज़ी के कारण हाई ब्लड प्रेशर (इंतशार-ए-खून) का होना।
मुँह से तशरीस	मुँह का ज़ायका कड़वा या चरपरा। ज़बान पर पीले दाने। कैल्शियम की कमी से दांतों का टूटना। चेहरे पर नुकीले और पीप (Pus) वाले दाने। यरकान (पीलिया) की सूरत में चेहरे और आँखों में पीलापन।
हाथ-पाँव से तशरीस	हाथ-पाँव में पसीना आना। गुर्दे और मसाने (Bladder) की गर्मी से हाथ-पाँव में हरारत (तपिश) महसूस होना।
अमराज़-ए-मैदा की तशरीस	जलन-ए-मैदा। जुआ-उल-ग़शी। मरोड़। खूनी पेचिश। वरम-ए-अम्आ (आंतों की सूजन)। कांच निकलना (Prolapse)। सफ़रावी या खूनी क़ै (उल्टी)।
जोड़ों का दर्द	नक़रस: छोटे जोड़ों का दर्द। हरकत करने और चलने-फिरने से दर्द का महसूस होना।

तशरीस के तरीके	तशरीस की अलामात (लक्षण)
ज़ियाबीतस और दमा	शुगर-ए-काज़िब (False Diabetes) जो असल में गुर्दों की सोज़िश है। पेशाब का रंग ज़र्द और जलन होना। फेफड़ों के गुदद (Glands) में सोज़िश से बलग़म का बनना और तकलीफ़ से निकलना।
मैदा का अल्सर	मैदा में हरारत और सोडियम की ज़्यादती। सोज़ाक (Gonorrhea)। ज़कावत-ए-हिस (Hypersensitivity)। सुरअत-ए-इन्ज़ाल (Premature Ejaculation)।
कारूरा (पेशाब) टेस्ट	सुबह के कारूरा में नीला और सुर्ख लिटमस पेपर डालने से रंग तब्दील न हो तो गुद्दी तहरीक है। मीठा सोडा डालने पर उबाल आहिस्ता और कम आए तो नब्ज़ गुद्दी है।
स्पर्म से तशरीस	गुद्दी तहरीक में स्पर्म पैदा होकर कुछ ज़िंदा रह जाते हैं और ज़्यादातर मुर्दा हो जाते हैं।
खवातीन के अमराज़	मैंसेस का तकलीफ़, जलन और दर्द से आना। सोज़िश-ए-रहम (Uterus inflammation)। ओवरी सिस्ट (पानी की थैलियाँ)। ल्यूकोरिया में बदबूदार ज़र्द रतूबत का निकलना।

इंसानी जिस्म पर तहरीक के असरात के मक़ामात (Locations of Stimulation Effects)

1। आसाबी अज़लाती (Nervous-Muscular) आसाबी अज़लाती तहरीक में दाएं सर से लेकर दाएं कंधे तक किसी मक़ाम पर तकलीफ़ होती है। इसमें सर का दायां हिस्सा, दायां कान, आँख, दाईं नाक, दायां चेहरा और दाएं तरफ के दांत व मसूड़े और दाईं तरफ की गर्दन शामिल है। दायां कंधा इसमें शामिल नहीं है।

2। अज़लाती आसाबी (Muscular-Nervous) अज़लाती आसाबी तहरीक में दाएं कंधे से लेकर जिगर (Liver) तक किसी मक़ाम पर तकलीफ़ होती है। इसमें दायां कंधा, दायां बाज़ू, दायां सीना, दायां फेफड़ा और दायां मैदा (Stomach) शामिल है। जिगर इसमें शामिल नहीं है।

3। अज़लाती ग़ुद्दी (Muscular-Glandular) अज़लाती ग़ुद्दी तहरीक में जिगर से लेकर पाँव की उंगलियों तक किसी मक़ाम पर तकलीफ़ होती है। इसमें जिगर, दाईं आंतें, दायां गुर्दा, मसाना (Bladder), ख़सिया (Testicle), मक़अद (Anus) और दाईं पूरी टांग उंगलियों तक शामिल है।

4। ग़ुद्दी अज़लाती (Glandular-Muscular) ग़ुद्दी अज़लाती तहरीक में सर से लेकर बाएं कंधे तक किसी मक़ाम पर तकलीफ़ होती है। इसमें सर का बायां आधा हिस्सा, बायां कान, बाईं आँख, बाईं नाक, बायां चेहरा और बाएं तरफ के दांत व मसूड़े और बाईं गर्दन शामिल है। बायां कंधा इसमें शामिल नहीं है।

5। ग़ुद्दी आसाबी (Glandular-Nervous) ग़ुद्दी आसाबी तहरीक में बाएं कंधे से लेकर तिल्ली (Spleen) तक किसी मक़ाम पर तकलीफ़ होती है। इसमें बायां कंधा, बायां बाज़ू, बायां सीना, बायां फेफड़ा और मैदा शामिल हैं। तहाल यानी तिल्ली इसमें शामिल नहीं है।

6। आसाबी गुद्दी (Nervous-Glandular) आसाबी गुद्दी तहरीक में तिल्ली से लेकर बाईं टांग और पाँव तक किसी मक़ाम पर तकलीफ़ होती है। इसमें तिल्ली, लबलबा (Pancreas), बाईं तरफ की आंतें, बायां गुर्दा, बायां ख़सिया और बाईं पूरी टांग पाँव की उंगलियों तक शामिल है।

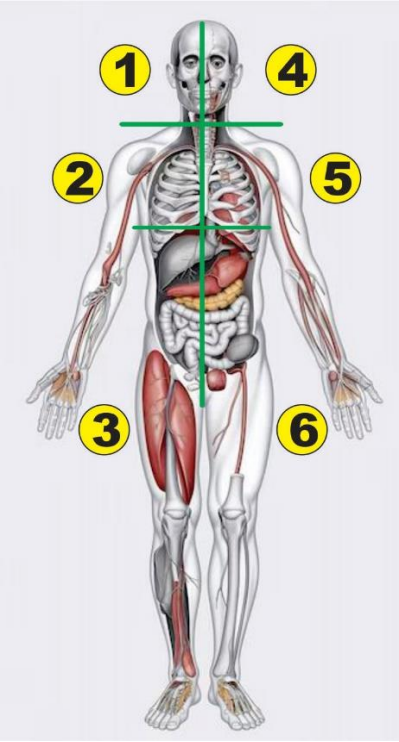

इलाज का उसूल (Principle of Treatment)

तिब्ब-ए-यूनानी या कानून मुफ़्रद अज़ा में इलाज का उसूल "इलाज बिल-ज़िद्द" (Opposite Treatment) है, यानी जिस्म में जिस ख़ल्त (Humor) की ज़्यादती हो गई है, उसकी मुख़ालिफ़ (विपरीत) ख़ल्त को बढ़ा दिया जाएगा।

मिसाल के तौर पर, अगर जिस्म में बलग़म की ज़्यादती हो जाए, तो इलाज का उसूल यह है कि आप ख़ल्त-ए-सौदा को बढ़ाएं, क्योंकि ख़ल्त-ए-बलग़म पानी और तरी को बढ़ाती है, और ख़ल्त-ए-सौदा खुश्की और रियाह (Gas) को बढ़ाती है। लिहाज़ा ख़ल्त-ए-सौदा को बढ़ाने से तरी और पानी की ज़्यादती, सौदा की खुश्की और रियाह से नॉर्मल हो जाएगी।

इसी तरह अगर जिस्म में ख़ल्त-ए-सौदा की ज़्यादती हो जाए, तो जिस्म में खुश्की और रियाह का इज़ाफ़ा हो जाता है। इसका उसूल-ए-इलाज यह है कि आप ख़ल्त-ए-सफ़रा को बढ़ा दें। ख़ल्त-ए-सफ़रा की गर्मी जिस्म से खुश्की और रियाह को नॉर्मल कर देगी।

इसी तरह अगर जिस्म में ख़ल्त-ए-सफ़रा की ज़्यादती हो जाए तो गर्मी बढ़ जाती है। इसका उसूल-ए-इलाज यह है कि आप ख़ल्त-ए-बलग़म को बढ़ा दें। बलग़म की तरी और सर्दी सफ़रा को नॉर्मल कर देगी।

दरजात-ए-मरज और दरजात-ए-दवा (Stages of Disease and Medicine)

मरज़ के दरजात (Stages of Disease) जब भी कोई मरज़ लाहिक होता है तो वह एक ही तरह का नहीं होता, बल्कि मरज़ या तो शदीद होगा, या शदीद-तर होगा, या मामूली होगा। कानून मुफ़्रद अज़ा में मरज़ के भी छह दरजात मुक़र्रर किए गए हैं:

मदारिज-ए-मरज़:

1। लज्जत 2। हब्स 3। क़ब्ज़ 4। सोज़िश 5। वरम 6। ज़ोफ़ (कमज़ोरी)

लज्जत: यह किसी भी मरज़ का इब्तदाई (शुरुआती) दर्जा है। इसमें सिर्फ "कैफ़ियात" मुतास्सिर होती हैं। हब्स: यह लज्जत से अगला दर्जा है। जब मरज़ इस दर्जे में होता है तो "अख़लात" मुतास्सिर होती हैं। क़ब्ज़: यह हब्स से अगला दर्जा है। जब मरज़ यहाँ पहुँच जाए तो "अज़ा" (Organs) मुतास्सिर होते हैं। सोज़िश: यह क़ब्ज़ से अगला दर्जा है। इसमें "अरवाह" (Vapors/Spirits) मुतास्सिर होती हैं। वरम: यह सोज़िश से अगला दर्जा है। इसमें "क़ुव्वत" (Power/Energy) मुतास्सिर होती है। ज़ोफ़: यह सबसे ऊँचा दर्जा है। इसमें "अफ़आल" (Functions) मुतास्सिर होते हैं और मुताल्लिका अज़ू का काम रुक जाता है।

अहम नोट:

मरज़ के इन छह दरजात को छह नब्ज़ों या छह तहरीकों के मुक़ाबले में न समझा जाए। हर एक तहरीक में उस तहरीक से मुताल्लिका मरज़ के यह छह दरजात होंगे।

दवा के दरजात (Stages of Medicine) हकीम साबिर मुल्तानी रहमतुल्लाह अलैह ने कानून मुफ़्रद अज़ा का फ़ार्माकोपिया (Pharmacopoeia) तैयार करके इंसानियत की खिदमत में पेश किया है। इसकी खूबी यह है कि इसमें छह तहरीकों के लिए छह तरह की अदविया (दवाएं) जमा की गई हैं, और फिर हर तहरीक में मरज़ के दर्जे को देखते हुए छह मदारिज-ए-अदविया भी कायम किए गए हैं।

मदारिज-ए-अदविया:

1। मोहर्रिक (Stimulant): अगर मरज़ लज्जत के दर्जे का हो तो दवा "मोहर्रिक" देंगे। 2। शदीद (Intense): अगर मरज़ हब्स के दर्जे का हो तो दवा "शदीद" देंगे।

3। मुलय्यन (Laxative): अगर मरज़ क़ब्ज़ के दर्जे का हो तो दवा "मुलय्यन" देंगे।

4। मुसहिल (Purgative): अगर मरज़ सोज़िश के दर्जे का हो तो दवा "मुसहिल" देंगे।

5। इक्सीर (Elixir): अगर मरज़ वरम के दर्जे का हो तो दवा "इक्सीर" देंगे।

6। मुक़व्वी (Tonic): अगर मरज़ ज़ोफ़ के दर्जे का हो तो दवा "मुक़व्वी" देंगे।

तहरीक और सोजिश में मामूली फ़र्क

जैसा कि ऊपर बयान हो चुका कि मक़ाम-ए-तहरीक (Stimulation point) ही मरज़ है, और उसूल-ए-इलाज यह है कि उससे अगले अज़ू यानी जिसमें तस्कीन (Rest) है उसे तहरीक दे दी जाए। यहाँ यह सवाल ज़हन में आता है कि अगर जिस मक़ाम पर तहरीक हो वह मरज़ है तो फिर हालत-ए-सेहत (Health state) में किसी भी मक़ाम पर तहरीक, तहलील या तस्कीन नहीं होनी चाहिए?

इसका जवाब यह है कि हालत-ए-सेहत में तहरीक मोतदिल (Balanced) होती है और बदलती रहती है, जिसकी वजह से मक़ाम-ए-तहलील और तस्कीन पर भी एतदाल (संतुलन) होता है। लेकिन जब तहरीक ज़्यादा तेज़ हो जाए और फिर एक जगह पर रुक जाए, यानी मक़ाम-ए-तहरीक, तहलील व तस्कीन तब्दील न होते रहें, तो तब मक़ाम-ए-तहरीक पर सोज़िश (Inflammation) पैदा हो जाती है और यह मरज़ बनता है। यानी तहरीक जब तक सोज़िश न बने उस वक्त तक बीमारी नहीं बनती।

फ़ार्माकोपिया कानून मुफ़्रद अज़ा

Tib e Pakistani की यह खूबी है कि यहाँ जैसे मिज़ाज की छह तहरीकात हैं, वैसे ही हर तहरीक की बीमारी के भी छह दर्जे हैं, और हर तहरीक में बीमारी के दर्जे के मुताबिक दवाओं के भी छह दर्जे हैं। यानी बीमारी जिस दर्जे की हो, उसी दर्जे के लिए दवा मुक़र्रर की गई है।

1 नंबर: आसाबी अजलाती (Nervous-Muscular)

नाम	नुस्खा	खुराक
मोहर्रिक 1	कलमी शोरा 30 ग्राम + तुख्म-ए-कासनी 50 ग्राम	1 से 3 ग्राम
शदीद 1	कलमी शोरा 30 ग्राम + तुख्म-ए-कासनी 50 ग्राम + जोखार 40 ग्राम	1 से 3 ग्राम
मुलय्यन 1	कलमी शोरा 30 ग्राम + तुख्म-ए-कासनी 50 ग्राम + जोखार 40 ग्राम + गुल-ए-सुर्ख ईरानी 120 ग्राम	1 से 3 ग्राम
मुसहिल 1	कलमी शोरा 30 ग्राम + तुख्म-ए-कासनी 50 ग्राम + जोखार 40 ग्राम + गुल-ए-सुर्ख ईरानी 120 ग्राम + काला दाना 240 ग्राम	1 से 3 ग्राम

नाम	नुस्खा	खुराक
इक्सीर 1	कुश्ता कलई + तबाशीर + इलायची कलां, हर एक 10 ग्राम + कुश्ता नक़रा 3 ग्राम	1 ग्राम
तरयाक 1	अफ़ीम 1 ग्राम + लोबान कौड़िया 10 ग्राम + क़ंद सफ़ेद 10 ग्राम	आधा ग्राम
मुक़व्वी 1	गाओज़बान, अब रेशम (100-100 ग्राम), बुरादा संदल सफ़ेद (50 ग्राम), इलायची सब्ज़ (10 ग्राम), अर्क़ गुलाब (2 किलो), आबे अनार शीरीं (आधा किलो), चीनी (2 किलो)। काढ़ा बनाकर ख़मीर तैयार करें।	एक चम्मच सुबह शाम
दीगर (Other)	जोशांदा 1: बही दाना, ख़ब्बाज़ी, कासनी, खीरे के बीज। रोग़न 1: मीठा तेलिया, काफ़ूर, बादाम तेल, कस्टर ऑयल। सुरमा 1: सुरमा सियाह और कलमी शोरा।	हस्ब-ए-ज़रूरत

2 नंबर: अज़लाती आसाबी

नाम	नुस्खा	खुराक
मोह़र्रिक 2	मग़ज़ करंजवा 50 ग्राम + आमला 50 ग्राम	1 से 3 ग्राम
शदीद 2	मग़ज़ करंजवा 50 ग्राम + आमला 50 ग्राम + फिटकरी 100 ग्राम	1 से 3 ग्राम
मुल़य्यन 2	मग़ज़ करंजवा 50 ग्राम + आमला 50 ग्राम + फिटकरी 100 ग्राम + हलीला सियाह बिरयां (भुनी हुई काली हरड़) 200 ग्राम	1 से 3 ग्राम
मुसहिल 2	मग़ज़ करंजवा 50 ग्राम + आमला 50 ग्राम + फिटकरी 100 ग्राम + हलीला सियाह बिरयां 200 ग्राम + हरड़ जलापा 200 ग्राम	1 से 3 ग्राम

नाम	नुस्खा	खुराक
इक्सीर 2	सम्मुल-फ़ार (Sammul-Far) 1 ग्राम + कुश्ता चाँदी 20 ग्राम (दो घंटे खरल करें)	1 चावल के बराबर
तरयाक 2	सुरमा सियाह 10 ग्राम + छिलका रीठा 90 ग्राम	1 ग्राम
मुक़व्वी 2	पोस्ट हलीला ज़र्द, पोस्ट हलीला काबली, काली हरड़ बिरयां, आमला, बिसफ़ाइज, उस्तुकुद्दूस, किशमिश, मुनक़्क़ा (हर एक 20 ग्राम) + कुश्ता फ़ौलाद 10 ग्राम। सफ़ूफ बनाकर रोग़न-ए-बादाम 100 ml और चीनी 1 किलो में मिक्स करें।	5 से 10 ग्राम
दीगर (Other)	रोग़न 2: तिल का तेल 70 ग्राम + रोग़न-ए-संदल 10 ग्राम। सुरमा 2: सुरमा सियाह और फिटकरी बराबर वज़न, खूब खरल करें।	हस्ब-ए-ज़रूरत

3 नंबर: अज़लाती गुद्दी

नाम	नुस्खा	खुराक
मोह़र्रिक 3	लौंग 10 ग्राम + दालचीनी 30 ग्राम	1 माशा
शदीद 3	लौंग 10 ग्राम + दालचीनी 30 ग्राम + जावित्री 20 ग्राम	1 माशा
मुल़य्यन 3	लौंग 10 ग्राम + दालचीनी 30 ग्राम + जावित्री 20 ग्राम + मुसब्बर 60 ग्राम	1 माशा
मुसहिल 3	लौंग 10 ग्राम + दालचीनी 30 ग्राम + जावित्री 20 ग्राम + मुसब्बर 60 ग्राम + हंज़ल (तुम्मा) 40 ग्राम	1 माशा

नाम	नुस्खा	खुराक
इक्सीर 3	मरमक्की 30 ग्राम + शिंगरफ़ (मुदब्बर/शुद्ध किया हुआ) 10 ग्राम	1 रत्ती
तरयाक 3	अजवाइन देसी 250 ग्राम + तेज़ाब-ए-गंधक 50 ग्राम। तेज़ाब में गंधक डालकर 20 दिन रख दें, फिर अच्छी तरह खरल करें।	2 चावल के बराबर
मुक़व्वी 3	कुचला मुदब्बर, जायफल, जावित्री, लौंग, दालचीनी, ख़ुलंजान, बालछड़, अफ़संतीन (हर एक 10 ग्राम)। सफ़ूफ बनाकर एक पाँव शहद में माजून बना लें।	1 से 3 ग्राम
दीगर (Other)	जोशांदा 3: ज़ूफ़ा, सबूस-ए-गंदम, परशियावशान (6-6 ग्राम) + अंजीर 2 अदद। रोग़न 3: रोग़न-ए-तल्ख़ (कड़वा तेल) 140 ml + रोग़न-ए-दालचीनी 10 ml। सुरमा 3: कड़वे तेल का धुआं (काजल) 9 mg + नीला थोथा 1 mg।	हस्ब-ए-ज़रूरत

4 नंबर: गुद्दी अजलाती

नाम	नुस्खा	खुराक
मोहर्रिक 4	अजवाइन देसी 40 ग्राम + तेज़पात 40 ग्राम	1 ग्राम
शदीद 4	अजवाइन देसी 40 ग्राम + तेज़पात 40 ग्राम + राई 40 ग्राम	1 ग्राम
मुल्यन 4	अजवाइन देसी 40 ग्राम + तेज़पात 40 ग्राम + राई 40 ग्राम + गंधक आमला सार 120 ग्राम	1 ग्राम
मुसहिल 4	अजवाइन देसी 40 ग्राम + तेज़पात 40 ग्राम + राई 40 ग्राम + गंधक आमला सार 120 ग्राम + मग़ज़ जमाल गोटा 10 ग्राम	1 ग्राम

नाम	नुस्खा	खुराक
इक्सीर 4	पारा 10 ग्राम + गंधक 70 ग्राम (दोनों को अच्छी तरह खरल करें)।	1 रत्ती
तरयाक 4	मिर्च सुर्ख 50 ग्राम + राई 100 ग्राम।	2 चावल के बराबर
मुक़व्वी 4	मुरब्बा आमला खुश्क 100 ग्राम + ज़ंजबील, पुदीना, अजवाइन देसी, फ़िलफ़िल सियाह, मस्तगी रूमी, फ़िलफ़िल दराज़, अक़रक़रहा, बादियान, ज़ीरा सियाह (हर एक 25 ग्राम) + जाफ़रान 9 ग्राम + चीनी 670 ग्राम + शहद 335 ग्राम। क़वाम बनाकर माजून तैयार करें।	10 ग्राम
दीगर (Other)	जोशांदा 4: अजवाइन देसी 3 ग्राम, तेज़पात और राई 6-6 ग्राम। रोग़न 4: रोग़न-ए-तारपीन 140 ml + रोग़न-ए-क़रन्फ़ुल (लौंग तेल) 10 ml। सुरमा 4: मामीराँ चीनी 10 ग्राम + मग़ज़ नीम 10 ग्राम।	हस्ब-ए-ज़रूरत

5 नंबर: गुद्दी आसाबी

नाम	नुस्खा	खुराक
मोहर्रिक 5	ज़ंजबील 50 ग्राम + नौशादर ठिकरी 20 ग्राम	1 ग्राम
शदीद 5	ज़ंजबील 50 ग्राम + नौशादर ठिकरी 20 ग्राम + काली मिर्च 10 ग्राम	1 ग्राम
मुलय्यन 5	ज़ंजबील 50 ग्राम + नौशादर ठिकरी 20 ग्राम + काली मिर्च 10 ग्राम + सना मक्की 80 ग्राम	1 ग्राम
मुसहिल 5	ज़ंजबील 50 ग्राम + नौशादर ठिकरी 20 ग्राम + काली मिर्च 10 ग्राम + सना मक्की 80 ग्राम + रेवंद असारा 40 ग्राम	1 ग्राम

नाम	नुस्खा	खुराक
इक्सीर 5	हड़ताल वरकिया 10 ग्राम + ज़ंजबील 40 ग्राम + काली मिर्च 30 ग्राम	1 रत्ती
तरयाक 5	नीला थोथा 10 ग्राम + जमाल गोटा 10 ग्राम + शीर-ए-मदार (आक का दूध) 10 ml + राई 150 ग्राम + सुहागा 70 ग्राम	2 चावल के बराबर
मुक़व्वी 5	मग़ज़ चिलग़ोज़ा, पिस्ता, अखरोट, फ़ुन्दुक़, तिल सफ़ेद, मग़ज़ खरबूजा, तुख़्म-ए-खीरा, पनबा दाना, मग़ज़ बादाम, तुख़्म-ए-गाजर, तुख़्म-ए-पियाज़, सालब मिस्री (हर एक 20 ग्राम)। कुल वज़न का तीन गुना शहद मिलाकर क़वाम तैयार करें।	10 ग्राम
दीगर (Other)	जोशांदा 5: अफ़तीमून, सौंफ़, सोंठ (6-6 ग्राम)। रोग़न 5: रोग़न बेदअंजीर (Arandi oil) 240 ml + सत अजवाइन 10 ml। सुरमा 5: काली मिर्च 10 ग्राम, नौशादर 20 ग्राम, हल्दी 70 ग्राम को अर्क़-ए-बादियान में खरल करें।	हस्ब-ए-ज़रूरत

6 नंबर: आसाबी गुद्दी

नाम	नुस्खा	खुराक
मोह़र्रिक 6	सुहागा बिरयां (भुना हुआ) 70 ग्राम + मुलैठी 70 ग्राम	1 से 3 ग्राम
शदीद 6	सुहागा बिरयां 70 ग्राम + मुलैठी 70 ग्राम + शीर-ए-मदार (आक का दूध) 5 ml	1 से 3 ग्राम
मुल़य्यन 6	सुहागा बिरयां 70 ग्राम + मुलैठी 70 ग्राम + शीर-ए-मदार 5 ml + रेवंद चीनी 40 ग्राम	1 से 3 ग्राम
मुसहिल 6	सुहागा बिरयां 70 ग्राम + मुलैठी 70 ग्राम + शीर-ए-मदार 5 ml + रेवंद चीनी 40 ग्राम + सक़मूनिया 50 ग्राम	1 से 3 ग्राम

नाम	नुस्खा	खुराक
इक्सीर 6	हजरुल यहूद 10 ग्राम + कहरबा 10 ग्राम + नौशादर 10 ग्राम + इलायची खुर्द 10 ग्राम + चीनी 40 ग्राम	1 रत्ती
तरयाक 6	हल्दी 100 ग्राम + शीर-ए-मदार 10 ml	2 चावल के बराबर
मुक़व्वी 6	मैदा गंदम, मग़ज़ कद्दू, मग़ज़ तरबूज (500-500 ग्राम), गोंद कीकर (100 ग्राम), देसी घी (200 ग्राम), गाय का दूध (2 किलो)। मैदा को घी में भूनकर मग़ज़ और दूध शामिल करें और माजून तैयार करें।	10 ग्राम
दीगर (Other)	जोशांदा 6: मुलैठी, रेशम साफ़, गाओज़बान, ख़तमी, गुल-ए-सुर्ख (5-5 ग्राम), बर्ग-ए-बांसा 10 ग्राम। रोग़न 6: रोग़न-ए-कद्दू 90 ml + सत पुदीना 10 ml। सुरमा 6: समंदर झाग 10 ग्राम + सुहागा 10 ग्राम।	हस्ब-ए-ज़रूरत

अदवियाती इस्तलाहात

1. मोहर्रिक (Stimulant): मोहर्रिक ऐसी दवा को कहते हैं जो किसी मुफ़्रद अज़ू (Single organ) को सुकून की हालत से निकाल कर काम (Action) में ले आए। यह उस अज़ू के जिस्म में सुकड़न (Contraction) पैदा करती है।

2. शदीद (Intense): मोहर्रिक दवा से थोड़ा तेज़ असर रखने वाली दवा को शदीद कहते हैं।

3. मुलय्यन (Laxative): मुलय्यन वह दवा होती है जिसमें मोहर्रिक और शदीद असर के साथ-साथ फ़ुज़लात (Waste materials) को जिस्म से बाहर निकालने की कुव्वत भी हो।

4. मुसहिल (Purgative): मुसहिल दवा में मोहर्रिक, शदीद और मुलय्यन असर के अलावा इदरार (Excretion/Flow) की कुव्वत भी होती है। इलाज में पहले हल्की दवाएं इस्तेमाल करें, बाद में ज़रूरत के मुताबिक शदीद, मुलय्यन और मुसहिल इस्तेमाल करें।

5. मुक़व्वी (Tonic): मुक़व्वी ऐसी चीज़ों को कहते हैं जो किसी अज़ू की तरफ खून को आहिस्ता-आहिस्ता जज़्ब कराना शुरू कर दें। इसमें ग़िज़ाएं (जैसे गोश्त), दवाएं (जैसे फौलाद) और ज़हर (जैसे कुचला) तक शामिल हैं।

6. इक्सीर (Elixir): इक्सीर उस दवा को कहते हैं जो न सिर्फ फ़ौरन खून में जज़्ब होकर अपना असर शुरू कर दे बल्कि लंबे समय तक अपना शिफ़ाई असर जिस्म में कायम रखे। यह पुरानी बीमारियों जैसे शुगर, कब्ज़ और चंबल (Psoriasis) वगैरह में काम आती है।

7. तरयाक (Antidote): तरयाक उस दवा को कहते हैं जो किसी ज़हर के असर को खत्म कर दे या किसी हालत को एकदम नई हालत में तब्दील कर दे। जैसे अल्कली (Khhaar) के मुक़ाबले में तेज़ाबियत (Acidity) तरयाक है।

8. लबूब (Laboob): लबूब 'लुब' की जमा है, जिसका मतलब है मग़ज़ या गूदा। इसमें दवाओं के मग़ज़ (बादाम, पिस्ता वगैरह) और परिंदों के मग़ज़ शामिल होते हैं। हर किस्म का लबूब 'गुद्दी आसाबी' (Glandular-Nervous) असर रखता है।

9. हलवा (Halwa): दवासाज़ी में हलवा उस दवा-नुमा ग़िज़ा को कहते हैं जिसका मुख्य हिस्सा मैदा, घी और शक्कर होता है। इन्हें ज़्यादातर सर्दियों में बतौर टॉनिक इस्तेमाल किया जाता है।

10. खमीरा (Khamira): खमीरा एक ऐसा मुरक्कब है जिसमें कुछ समय बाद खमीर (Fermentation) पैदा हो जाता है। इसके तमाम हिस्से 'आसाबी अज़लाती' असर रखते हैं। इसकी ज़रूरत तब पड़ती है जब जिस्म में रतूबात (Fluids) की कमी हो जाए।

11. इत्रीफ़ल (Itrifal): यह दरअसल आयुर्वेदिक 'त्रिफला' का अरबी नाम है। इसमें हलीला, बलीला और आमला बराबर वज़न में होते हैं। इत्रीफ़ल 'अज़लाती आसाबी' असर रखता है। यह दिमाग़ी और बलग़मी रोगों के लिए बेहतरीन है।

12. माजून (Majun): माजून वह गाढ़ा मुरक्कब है जो 'अज़लाती गुद्दी' दवाओं को पीसकर शहद या चीनी के क़वाम (चाशनी) में मिलाकर तैयार किया जाता है।

13. जवारिश (Jawarish): यह फारसी लफ़्ज़ 'गवारिदन' (हज़म होना) से निकला है। अक्सर जवारिशें 'गुद्दी अज़लाती' दवाओं से तैयार की जाती हैं और मैदा व आंतों को ताकत देती हैं।

14. जोशांदा (Decoction): जोशांदा से मुराद दवाओं को पानी में उबालना है। इसकी ज़रूरत तब पड़ती है जब मरीज़ सूखी दवा या गोली न खा सकता हो या गले में ख़राश और सोज़िश हो।

15. फ़रज़जा (Pessary): फ़रज़जा वह खास दवा की बत्ती (Suppository) है जिसे औरत अपने अंदरूनी अंगों की सोज़िश खत्म करने के लिए इस्तेमाल करती है।

16. तिला (Tila/Liniment): तिला वह तेल वाली मुलायम दवा होती है जो किसी अज़ू पर बाहर से लगाई जाती है। इसकी ज़रूरत चोट लगने या ढीलेपन (Weakness of organ) को दूर करने के लिए पड़ती है।

कुछ परीक्षित नुस्खे (सिद्ध औषधियाँ)

बवासीर नाशक औषधि (ترياق بواسير) रीठा का छिलका 12 ग्राम, तारा मीरा 60 ग्राम, आक का दूध 3 ग्राम। खुराक: चने के बराबर गोली।

ग्रंथि उत्तेजक (محرک غدد) जमाल गोटा 3 दाना, सफेद नमक 50 ग्राम, गंधक 100 ग्राम। खुराक: आधा ग्राम से 1 ग्राम तक।

अवशोषक ग्रंथि उत्तेजक (محرک غدود جازبہ) मुलय्यन नंबर 2, 3 और 4 बराबर मात्रा में। खुराक: 1 से 2 ग्राम।

निकास ग्रंथि उत्तेजक (محرک غدد ناقلہ) मुलय्यन नंबर 5, औषधि नंबर 6 और क्षारीय साल्ट बराबर मात्रा में। खुराक: 1 से 3 ग्राम।

महा विषनाशक (ترياق اكبر) हल्दी 36 ग्राम, राई 24 ग्राम, रीठा छिलका 12 ग्राम। खुराक: 1 ग्राम।

हब्बे साबिर (حب صابر) गंधक, राई और इंद्रायण (तुम्बा) बराबर मात्रा में। खुराक: चने के बराबर गोली।

नवीन हब्बे साबिर (حب صابر جدید) गंधक, राई, इंद्रायण, अजवाइन और मैग्नीशिया साल्ट बराबर मात्रा में। खुराक: चने के बराबर गोली।

दमा और श्वास रोग के लिए (برائے دمہ) इंद्रायण, लाल मिर्च और मुनक्का बराबर मात्रा में। यह फेफड़ों में जमे कफ को बाहर निकालता है। खुराक: 1 से 2 गोली।

पित्त नाशक (ترياق صفرا) आक का दूध, नौसादर, भुना हुआ सुहागा प्रत्येक 60 ग्राम, हल्दी 120 ग्राम। खुराक: चने के बराबर गोली।

मस्तिष्क वर्धक (مقوی دماغ) धनिया, खसखस, बादाम की गिरी, बिनौला की गिरी बराबर मात्रा में। अधिक कमजोरी होने पर लौह भस्म (फौलाद) मिला दें। खुराक: 6 ग्राम सुबह और शाम।

सौंफ का अर्क/इक्सीर (اکسیر بادیان) हल्दी और सौंफ बराबर मात्रा में। खुराक: 1 से 2 ग्राम।

पथरी नाशक काढ़ा (پتھری تور جوشاندہ) सरफूका, कुलथी, कासनी के बीज, खरबूजे के बीज, गोखरू प्रत्येक 24 ग्राम। 750 मिलीलीटर पानी और शक्कर मिलाकर उबाल लें। खुराक: दिन में दो बार।

यकृत शोधक (اکسیر جگر) नौसादर, कलमी शोरा और रेवंद खताई बराबर मात्रा में। खुराक: आधा ग्राम।

हब्बे शिफा (حب شفاء) काली मिर्च 10 ग्राम, काला धतूरा 30 ग्राम, रेवंद चीनी 20 ग्राम, गोंद कतीरा 20 ग्राम। खुराक: काली मिर्च के बराबर छोटी गोली।

औषधि की परिभाषा

औषधि और उपचार के सिद्धांतों के संदर्भ में चिकित्सा पद्धति कानून मुफ़्रेद अज़ा (طب پاکستانی) के संस्थापक हकीम साबिर मुल्तानी की एक विशेष और महत्वपूर्ण व्याख्या यहाँ दी गई है।

औषधि एक ऐसा शब्द है जो इस दुनिया के हर सजीव और निर्जीव जीव पर लागू होता है। इन वस्तुओं को चिकित्सा की भाषा में तीन स्रोत कहा जाता है। वस्तुओं का यह वर्गीकरण उन्हें समझने के लिए कई प्रकार से आसानी पैदा करता है।

पहला: उनके गुणों, प्रभावों और तत्वों को निर्धारित करने के तरीके सामने आ जाते हैं।

दूसरा: विकास के सिद्धांत के अनुसार उनका श्रेणीकरण हो जाता है।

तीसरा: मानव स्वभाव के कार्यों और लाभों का ज्ञान प्राप्त होता है।

ये तीन स्रोत इस प्रकार विभाजित हैं:

1. खनिज पदार्थ
2. वनस्पतियां
3. जीव-जंतु

लाभ की दृष्टि से हम इन सभी को औषधि कहते हैं। वास्तव में औषध विज्ञान से तात्पर्य उस ज्ञान से है जिसके माध्यम से चिकित्सकों ने औषधियों के कार्यों और उनमें मौजूद प्रभावशाली तत्वों की पुष्टि की है। इसमें मनुष्य के अंगों के यांत्रिक कार्यों और रक्त के रासायनिक प्रभावों की व्याख्या की गई है।

चिकित्सा के आधार पर वर्गीकरण

चिकित्सकों ने कार्यों और गुणों के आधार पर इन वस्तुओं को तीन मुख्य रूपों में विभाजित किया है:

1. भोजन
2. औषधि
3. विष

चूंकि पूर्ण भोजन, पूर्ण औषधि और पूर्ण विष के अलावा कुछ ऐसी अवस्थाएं भी होती हैं जो एक-दूसरे का मिश्रण होती हैं, इसलिए इनकी कुल छह श्रेणियां बन जाती हैं:

1. पूर्ण भोजन: वह वस्तु है जो शरीर में जाने पर खुद बदल जाती है लेकिन शरीर में कोई परिवर्तन पैदा नहीं करती। यह स्वयं शरीर का हिस्सा बन जाती है। जैसे रोटी, मांस और दूध।
2. औषधीय भोजन: वह वस्तु है जो शरीर में जाने पर बदल जाए और उसके बाद शरीर को प्रभावित करे। इसका अधिक हिस्सा शरीर का भाग बन जाता है। जैसे फल आदि।
3. भोज्य औषधि: वह वस्तु है जो शरीर में जाने पर बदल जाए और उसके बाद शरीर को प्रभावित करे। इसका कुछ हिस्सा शरीर का भाग बनता है और अधिक हिस्सा बाहर निकल जाता है। जैसे सूखे मेवे और घी।
4. पूर्ण औषधि: वह वस्तु है जो शरीर में जाने पर शरीर में बदलाव पैदा करे और अंत में शरीर का हिस्सा बने बिना बाहर निकल जाए।
5. विषैली औषधि: वह वस्तु है जो शरीर से कम प्रभावित हो और शरीर को अधिक प्रभावित करके नुकसान पहुँचाए।

6. पूर्ण विष: वह वस्तु है जो स्वयं शरीर से प्रभावित न हो लेकिन शरीर में अपना प्रभाव पैदा करके रोग का कारण बने। जैसे संखिया और सांप का विष।

खाने और पीने वाली वस्तुओं के प्रभाव की स्थितियां

खाने-पीने की चीजों के शरीर पर असर करने के तरीके निम्नलिखित हैं:

यदि कोई वस्तु केवल अपने पदार्थ से प्रभाव डाले तो उसे भोजन कहते हैं। यदि वह केवल अपनी गुणवत्ता (तासीर) से असर करे तो वह औषधि है। यदि उसका प्रभाव पदार्थ और गुणवत्ता दोनों के आधार पर हो, तो पदार्थ अधिक होने पर उसे भोज्य औषधि और गुणवत्ता अधिक होने पर औषधीय भोजन कहते हैं।

यदि कोई वस्तु केवल अपने विशेष स्वरूप से प्रभाव डाले तो उसे विशेष गुण वाली वस्तु (ज़ुलख़ासा) कहते हैं जिसकी दो स्थितियां हैं: पहली, अनुकूल विशेष गुण (विषनाशक) और दूसरी, प्रतिकूल विशेष गुण जैसे विष। यदि पदार्थ और विशेष स्वरूप दोनों से असर करे तो उसे विशेष भोजन और यदि गुणवत्ता व विशेष स्वरूप से असर करे तो उसे विशेष औषधि कहते हैं।

भोजन, औषधि और विशेष गुण के प्रभाव की वास्तविकता

दुनिया की चीजों को भोजन, औषधि और विशेष गुणों में विभाजित करके उनके कार्यों को इस तरह समझाने की कोशिश की गई है कि रोगों के समय उनके स्वभाव और आवश्यकता के अनुसार इस्तेमाल किया जा सके। इसी का नाम औषधकोश (फार्माकोपिया) है। इसलिए हम इस सच्चाई को शोध के साथ पेश कर रहे हैं। याद रखें कि आवश्यकता और स्वभाव के अनुकूल वस्तुओं का उपयोग करना ही इस विद्या का कमाल है।

भोजन की वास्तविकता

हर व्यक्ति रोजाना खाता है और इसे अच्छी तरह समझता है। चिकित्सा की भाषा में इसकी परिभाषा इस तरह की जाती है कि भोजन वह वस्तु है जो शरीर में अपने पदार्थ के कारण प्रभाव डालती है। औषधि की तरह इसका असर शरीर को केवल गरम या ठंडा करना नहीं होता, बल्कि इसका पदार्थ मानव शरीर में रक्त बनकर अंगों का हिस्सा बन जाता है। इसके विपरीत, औषधि का शरीर मानव बदन में खर्च नहीं होता। शरीर में केवल उसकी गुणवत्ता यानी गर्मी या सर्दी पैदा होती है, जिसके बाद वह औषधि मल-मूत्र, सांस या पसीने के जरिए शरीर से बाहर निकल जाती है।

भोजन के प्रकार

भोजन की निम्नलिखित दो श्रेणियां हैं:

1. हल्का भोजन: ऐसा हल्का भोजन जिससे पतला रक्त पैदा हो, जैसे अनार का रस।
2. भारी भोजन: ऐसा भारी भोजन जिससे गाढ़ा और भारी रक्त पैदा हो, जैसे गाय का मांस और बैंगन आदि।

फिर प्रत्येक की दो स्थितियां हैं: पहला, उत्तम रस बनाने वाला, दूसरा, दूषित रस बनाने वाला। और फिर प्रत्येक की दो और स्थितियां हैं: अधिक पोषण देने वाला और कम पोषण देने वाला।

उत्तम रस बनाने वाला: ऐसा भोजन जिससे शरीर के लिए बेहतरीन दोष (खल्त) पैदा हो, जैसे भेड़ का मांस, उबला हुआ अंडा आदि।

दूषित रस बनाने वाला: ऐसा भोजन जिससे ऐसा दोष पैदा हो जो शरीर के लिए अधिक उपयोगी न हो, जैसे नमकीन सूखी मछली, मूली आदि।

अधिक पोषण देने वाला: ऐसा भोजन जिसका अधिकांश हिस्सा रक्त बन जाए, जैसे अधपके अंडे की जर्दी, मांस का रस आदि।

कम पोषण देने वाला: ऐसा भोजन जिसका बहुत कम हिस्सा रक्त बन सके, जैसे पालक का साग आदि।

औषधि की वास्तविकता

औषधि की परिभाषा यह की गई है कि इसके उपयोग से शरीर की अवस्थाओं में परिवर्तन आए यानी गर्मी, सर्दी, तरी या खुश्की पैदा हो, जैसे काली मिर्च आदि। हालांकि ये भोजन के साथ खाई जाती हैं, लेकिन वास्तव में ये एक औषधि हैं। कार्यों के आधार पर औषधियों का विभाजन निम्नलिखित है:

औषधियों के दो प्रकार हैं: सूक्ष्म और स्थूल औषधि।

सूक्ष्म औषधि: ऐसी औषधि जिसके कण शरीर में जाने के बाद बहुत जल्द अलग हो जाएं और तुरंत शरीर में सोख लिए जाएं।

स्थूल औषधि: ऐसी औषधि जिसके कण शरीर में जाने के बाद जल्दी अलग न हों और तुरंत शरीर में न सोखें जाएं।

औषधियों के स्तर

जो भी औषधियां इस्तेमाल की जाती हैं, वे मानव शरीर में एक जैसी स्थिति पैदा नहीं करतीं। उनमें से कुछ अधिक गरम-ठंडी और कुछ कम होती हैं, जिनका विवरण निम्नलिखित है:

संतुलित औषधि: ऐसी औषधि जो शरीर में पहुँचकर कोई अतिरिक्त प्रभाव पैदा न करे, यानी उसकी तासीर मानव शरीर के स्वभाव से आगे न बढ़े।

प्रथम स्तर की औषधि: ऐसी औषधि जिसकी गर्मी या सर्दी का प्रभाव शरीर में इतना कम हो कि वह महसूस न किया जा सके।

द्वितीय स्तर की औषधि: ऐसी औषधि जिसकी गर्मी या सर्दी का प्रभाव शरीर में महसूस हो लेकिन नुकसान न पहुँचा सके।

तृतीय स्तर की औषधि: ऐसी औषधि जिसकी गर्मी या सर्दी का प्रभाव शरीर में यहाँ तक हो कि वह हानिकारक हो लेकिन जानलेवा न हो।

चतुर्थ स्तर की औषधि: ऐसी औषधि जिसकी गर्मी या सर्दी का प्रभाव शरीर में इस सीमा तक हो कि वह जानलेवा साबित हो सके।

विशिष्ट प्रभाव (जुलख़ासा)

वस्तुओं के इस स्वरूप को समझना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि अलग-अलग स्वभाव और समान स्वभाव वाली औषधियों को केवल इसी एक तरीके से समझा जा सकता है। यह जानना चाहिए कि विशिष्ट प्रभाव न तो पदार्थ के कारण होता है और न ही अवस्थाओं (गर्मी-सर्दी) के कारण, बल्कि यह प्रभाव उस वस्तु की वास्तविकता के साथ विशेष रूप से जुड़ा होता है। इसे औषधि का प्राकृतिक स्वरूप (सूरत-ए-नौइया) कहते हैं।

हर औषधि अपना अलग प्राकृतिक स्वरूप रखती है। जैसे सांप और बिच्छू के काटने से शरीर पर जो प्रभाव होता है और मनुष्य की मृत्यु हो जाती है, यह प्रभाव केवल अवस्थाओं (गर्मी, सर्दी, तरी, खुश्की) के कारण नहीं हो सकता। न ही यह केवल पदार्थ के कारण हो सकता है। यदि इन ज़हरीले जीवों के प्रभाव को

केवल गर्मी या सर्दी मान लिया जाए, तो आग और पानी से भी यही प्रभाव पैदा होना चाहिए क्योंकि आग से अधिक कोई चीज़ गर्म नहीं और पानी से अधिक कोई चीज़ ठंडी नहीं। बल्कि आग और पानी का प्रभाव सांप के ज़हर से भी अधिक होना चाहिए क्योंकि उनमें गर्मी और सर्दी इन जीवों की तुलना में कहीं अधिक होती है।

इसलिए इन जीवों के प्रभाव को न तो केवल औषधि का कार्य कह सकते हैं और न ही भोजन का। भोजन तो किसी भी स्थिति में ज़हर हो ही नहीं सकता। इसी कारण यह मानना पड़ता है कि गुणवत्ता और पदार्थ के अलावा कोई तीसरी चीज़ भी है जो प्रभाव डालती है। यही वह प्राकृतिक स्वरूप है जिससे हर चीज़ की पहचान बनती है। इसी कारण हम सांप को सांप और बिच्छू को बिच्छू समझते हैं। ऐसी चीज़ें जिनका प्रभाव गुणवत्ता और पदार्थ से नहीं बल्कि उनकी विशेष पहचान और स्वरूप से होता है, उन्हें विशिष्ट प्रभाव वाली वस्तुएं (ज़ुलख़ासा) कहते हैं।

यह परिभाषाएं पूर्ण भोजन, पूर्ण औषधि और पूर्ण विशिष्ट प्रभाव वाली वस्तुओं की हैं। लेकिन कुछ चीज़ों में औषधि और भोजन दोनों के गुण होते हैं। यानी उनका प्रभाव गुणवत्ता और पदार्थ दोनों से होता है। जैसे बादाम की गिरी, इससे शरीर में गर्मी भी पैदा होती है और यह रक्त बनकर शरीर का पोषण भी करती है। कुछ चीज़ों में औषधि, भोजन और विशिष्ट गुण तीनों होते हैं। जैसे शराब, इससे गर्मी भी पैदा होती है, रक्त भी बनता है और इसके विशेष गुण से खुशी भी महसूस होती है। इसी तरह यदि तीनों चीज़ें एक साथ पाई जाएं तो उसे विशिष्ट औषधीय भोजन कहा जाएगा। इनमें जो चीज़ मात्रा में अधिक होगी, उसका नाम पहले लिखा जाएगा।

भोजन, औषधि और विशिष्ट प्रभाव के कार्यों का अंतर

भोजन का कार्य वास्तव में सक्रिय नहीं बल्कि निष्क्रिय होता है। भोजन पर शरीर की मशीनरी असर करती है, वह स्वयं मशीनरी पर असर नहीं करता। भोजन से शरीर का पोषण और विकास होता है, इसे भोजन का प्रभाव ही कहना चाहिए। अक्सर यह आपत्ति की जाती है कि भोजन गुणवत्ता से खाली होता है और केवल पदार्थ से असर करता है, जबकि मांस और रोटी से खून पैदा होता है जिसका स्वभाव गर्म-तर है।

हकीकत यह है कि भोजन जब रक्त में बदल जाता है तो उसका पुराना स्वरूप कायम नहीं रहता, जबकि औषधि से जो अवस्था पैदा होती है उसमें औषधि का स्वरूप कायम रहता है। संतुलित औषधि (दवा-ए-मोतदिल) का प्रभाव समझने से यह बात स्पष्ट हो जाती है। संतुलित औषधि जब शरीर का हिस्सा बनती है तो वह मानव स्वभाव से बाहर की कोई स्थिति पैदा नहीं करती, इसलिए उससे संतुलन नहीं बिगड़ता।

संतुलित औषधि का अर्थ यह नहीं है कि उसकी गर्मी-सर्दी बराबर होगी। हर संतुलित औषधि में भी गुणों की कमी-बेसी होती है, लेकिन वह मानव स्वभाव के बहुत करीब होती है। यही बात भोजन में भी पाई जाती है। उसमें भी गुण मौजूद हैं लेकिन वे मानव स्वभाव की सीमा से बाहर नहीं हैं। इसीलिए हर भोजन के भी स्वभाव लिखे जाते हैं। हम मनुष्य को जितना भी भोजन खिला दें, उसकी अवस्थाएं मानवीय स्वभाव में बहुत कम बदलाव लाती हैं। बस यही भोजन और औषधि का अंतर है।

यदि हम किसी भोजन का निरंतर उपयोग करें तो वह स्वभाव में बदलाव ला सकता है। इसका कारण यह है कि शुद्ध और पूर्ण भोजन (जैसे मांस, रोटी, दूध) बहुत कम मिलते हैं। अधिकांश भोजन अपने अंदर औषधीय प्रभाव रखते हैं। जैसे दूध एक हल्का भोजन है लेकिन इसमें घी, पनीर, मिठास और पानी शामिल

हैं जिनके अपने-अपने प्रभाव हैं। इसलिए इलाज में औषधियों के साथ भोजन के स्वभाव को भी ध्यान में रखना पड़ता है।

भोजन, औषधि और विष के प्रभाव

जिस तरह संतुलित औषधि और भोजन का अधिक उपयोग उनके कार्यों की सीमा को पार नहीं करता, उसी तरह चारों श्रेणियों की औषधियां अपने स्तर से बढ़कर पूर्ण विष में नहीं बदल सकतीं। चौथी श्रेणी की औषधियां विषैली औषधियां कहलाती हैं, लेकिन वे पूर्ण विष नहीं हैं। विषैली औषधि का प्रभाव हमेशा उसकी अवस्थाओं (गर्मी-सर्दी) से प्रकट होता है, जबकि पूर्ण विष का प्रभाव उसके विशिष्ट स्वरूप (प्राकृतिक पहचान) से होता है।

जैसे जमालगोटा चौथी श्रेणी की दवा है, इसे विषैली दवा कहते हैं, लेकिन यह पूर्ण विष नहीं है क्योंकि इसका प्रभाव तब तक नहीं होता जब तक यह शरीर में अपनी गर्मी या तीव्रता पैदा न करे। इसके विपरीत संखिया (आर्सेनिक) पूर्ण विष है। जब यह ज़हरीली मात्रा में लिया जाए तो तुरंत मृत्यु हो जाती है। संखिया की अपनी गर्मी जमालगोटा के मुकाबले कुछ भी नहीं है, बल्कि प्रयोग बताते हैं कि संखिया की खुराक से शरीर ठंडा हो जाता है और बुखार उतर जाता है। यही स्थिति कपूर और अफीम में भी देखी जा सकती है।

वस्तुओं के प्रभाव का परिणाम

इस शोध से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि भोजन अपने पदार्थ के कारण रक्त में रासायनिक रूप से मिलकर प्रभाव दिखाता है। औषधियां अपनी विशेष गुणवत्ता के कारण शरीर के अंगों पर यांत्रिक प्रभाव डालती हैं और उनके कार्यों में तेज़ी पैदा कर देती हैं। औषधियां जब तक शरीर से बाहर नहीं निकल जातीं, उनका प्रभाव जारी रहता है। विष (ज़हर) अपने विशेष स्वरूप के कारण शरीर से प्रभावित नहीं होते, बल्कि वे अंगों में ऐसा असाधारण परिवर्तन पैदा कर

देते हैं कि मृत्यु हो जाती है। यही कारण है कि कुछ ज़हर तुरंत मौत का कारण बनते हैं।

वस्तुओं के प्रभावों के प्रकार

इस प्रकार हमें वस्तुओं के तीन प्रकार के प्रभावों को स्वीकार करना होगा। पहला, वे वस्तुएं जिनका प्रभाव रक्त में शामिल होने के बाद होता है जैसे भोजन आदि। दूसरा, ऐसी वस्तुएं जिनका प्रभाव पहले शरीर के अंगों पर होता है और उसके बाद उनका असर रक्त में शामिल होता है जैसे औषधियां आदि। तीसरा, ऐसी वस्तुएं जिनका प्रभाव केवल अंगों तक ही सीमित रहता है और फिर तुरंत मृत्यु हो जाती है जैसे विष (जहर) आदि। यह अलग बात है कि हम विषों को प्रयोगों के बाद उनकी सुरक्षित मात्रा में इस्तेमाल करके लाभ उठा लें, लेकिन उनकी प्रकृति विषैली ही रहेगी।

प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रभाव (بالفعل اور بالقوی)

ये तीनों स्थितियां वास्तव में दो अवस्थाओं में विभाजित की जा सकती हैं।

अंगों पर प्रभाव: जिन्हें हम यांत्रिक (मशीनी) प्रभाव कहते हैं, उन्हें चिकित्सकों ने प्रत्यक्ष प्रभाव (بالفعل) लिखा है। अर्थात अंगों के साथ संपर्क होते ही औषधि के प्रभाव शुरू हो जाते हैं।

दोषों पर प्रभाव: जिन्हें हम रासायनिक प्रभाव भी कहते हैं, उन्हें चिकित्सकों ने परोक्ष प्रभाव (بالقوی) लिखा है। अर्थात रक्त में वस्तुओं के शामिल होने पर उनके प्रभाव प्रकट होते हैं। इन्हें प्राथमिक प्रभाव और द्वितीयक प्रभाव भी कह सकते हैं। इन्हीं स्थितियों को क्रिया और प्रतिक्रिया भी कहा जा सकता है।

अंगों पर औषधियों के प्रभाव

इन तथ्यों से सिद्ध हुआ कि हर वस्तु जो मानव शरीर में प्रवेश करती है या उस पर प्रभाव डालती है, वह कम या अधिक शरीर के अंगों पर अवश्य प्रभाव डालती है। अंतर केवल इतना है कि भोजन के प्रभाव अक्सर महसूस नहीं होते क्योंकि शरीर उन्हें सहन कर लेता है, लेकिन असामान्य भोजन का शारीरिक प्रभाव अवश्य महसूस होता है। इसी तरह औषधियां पचने की मात्रा तक अक्सर महसूस नहीं होतीं। पचने और शरीर का हिस्सा बनने पर उनके प्रभाव प्रकट होते हैं। लेकिन तेज और तीव्र औषधियां और विष अपना प्रभाव इस्तेमाल के साथ ही शरीर के अंगों पर दिखाना शुरू कर देते हैं।

जहाँ भी प्रभाव होता है, शरीर की प्रकृति उसके असामान्य प्रभावों के विरुद्ध प्रतिक्रिया करती है। यानी उनके इस्तेमाल से वहां तेजी, सूजन, सुन्न होना, बुखार या कमजोरी जैसे प्रभाव प्रकट होते हैं। शरीर की प्रकृति का यह अहसास औषधियों के कार्यों का मुकाबला है। औषधि के उपयोग की कुशलता यह है कि जिस अंग के लिए दवा इस्तेमाल की जाए, वह उसी अंग पर असर करके अपना कार्य दिखाए। यही चिकित्सक की कुशलता है कि वह औषधियों के गुणों और प्रभावों को समझे। इसी में औषधि की खुराक का रहस्य है और इसी में उपचार के राज छिपे हैं।

औषधि और भोजन का चयन

चूंकि शरीर के अंगों के कार्य उनकी अवस्थाओं, स्वभाव और दोषों (अखलात) के अधीन हैं, इसलिए जब शरीर के अंगों का संतुलन बिगड़ जाता है (चाहे कारण आंतरिक हो या बाहरी), तो उनके कार्य खराब हो जाते हैं। इसी स्थिति का नाम रोग है। जो औषधियां और भोजन शरीर के बिगड़े हुए अंगों की अवस्थाओं और दोषों को ठीक करके उनके कार्यों को संतुलित कर दें, उससे रोग दूर हो जाएगा। इसी प्रक्रिया का नाम उपचार की कला है।

सिद्ध औषधियों (مجربات) की वास्तविकता

रोग और उपचार की परिभाषा के बाद सिद्ध औषधियों को समझना कठिन नहीं है। अर्थात जो भी एकल या मिश्रित औषधि मानव शरीर की अस्वाभाविक स्थिति को दूर कर दे और बार-बार के प्रयोगों व निरीक्षणों के बाद उसका परिणाम शत-प्रतिशत सही निकले, वही सिद्ध औषधि है। हालांकि एक चिकित्सक के लिए यह अनिवार्य है कि वह उस सिद्ध औषधि का रोगी के रोग, लक्षणों और स्वभाव के साथ सही तालमेल बिठा सके। जो व्यक्ति ऐसी योग्यता रखता है, वही वास्तविक चिकित्सक है। इस बात को हृदयंगम कर लें कि चिकित्सक के अलावा कोई भी व्यक्ति रोगों के लिए सिद्ध औषधियाँ निर्धारित नहीं कर सकता। क्योंकि चिकित्सक के लिए मानव शरीर की वास्तविकता, अंगों की रचना, उनके कार्य, रोगों के स्वभाव और लक्षणों व कारणों से पूरी तरह अवगत होना आवश्यक है।

एक अनभिज्ञ व्यक्ति के लिए चिकित्सक के कर्तव्यों का पालन करते हुए रोगों के लिए किसी सिद्ध नुस्खे का उपयोग करना कठिन है। यही कारण है कि मामूली जानकारी रखने वाले दवा विक्रेता या स्वयं को चिकित्सक समझने वाले लोग महान आचार्यों की सिद्ध औषधियों से भी लाभ नहीं उठा पाते। वे हमेशा यही शिकायत करते सुने जाते हैं कि अमुक नुस्खा इस्तेमाल किया था मगर लाभ नहीं हुआ, या अमुक औषधि व्यर्थ है। वास्तविकता यह होती है कि उन्हें न तो औषधि की शक्ति का पता होता है और न ही उसके विज्ञान का ज्ञान। यही कारण है कि आजकल नुस्खे इकट्ठे करने का रोग बढ़ा हुआ है। ऐसे ही लोग अपना उपचार मार्ग छोड़कर कभी एलोपैथी और कभी होम्योपैथी का सहारा लेते हैं, लेकिन सच तो यह है कि ऐसे गैर-चिकित्सक हमेशा असफल रहते हैं।

सिद्ध औषधियों के सही उपयोग का रहस्य

यह सत्य है कि सिद्ध औषधियाँ उसी स्थिति में निश्चित रूप से लाभकारी हो सकती हैं जब उन्हें सही स्थान पर उपयोग किया जाए। जैसा कि हम लिख चुके हैं, चिकित्सक ही इनका सही प्रयोग कर सकता है क्योंकि रोग, स्वभाव, लक्षण और कारणों के साथ-साथ औषधियों के प्रभाव और गुण उसके मस्तिष्क में उपस्थित होते हैं। इसलिए स्थितियों के अनुसार चिकित्सक का विवेक तुरंत सही औषधि, भोजन और उपचार पद्धति निर्धारित कर देता है, जिसका परिणाम निश्चित रूप से आरोग्य होता है। किसी भी सिद्ध नुस्खे को निर्धारित करने से पहले निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना अनिवार्य है:

रोग की प्रकृति 2. रोग का स्वभाव 3. लक्षण 4. कारण 5. रक्त की रासायनिक स्थिति 6. रोगी की आयु और आदतें 7. क्षेत्र और मौसम 8. रोगी का खान-पान 9. मनोवैज्ञानिक प्रभाव 10. किसी औषधि या नशे की लत।

विषैली औषधियों के प्रयोग से दूर रहें

इन दस नियमों को ध्यान में रखते हुए ऐसी सिद्ध औषधि निर्धारित करें जो इन सब पर लागू होती हो। पहले यह प्रयास करें कि किसी भोजन के उपयोग या परहेज से ही स्थिति सुधर जाए। यदि ऐसा न हो तो किसी एकल (मफ्रेद) सिद्ध औषधि से लाभ उठाएं। यदि वह भी संभव न हो तो सिद्ध मिश्रित औषधि से उपचार करें। इसमें यह भी प्रयास हो कि औषधियाँ दो-तीन या अधिक से अधिक पांच-छह से ज्यादा न हों। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि औषधियों में तीव्र विष, सुन्न करने वाली दवाओं और भस्मों (कुश्ता) से दूर रहें। इनका उपयोग केवल अत्यंत आवश्यकता के समय करें, जब कोई दूसरी औषधि या भोजन काम न कर रहा हो।

विषैली औषधियों को केवल विशेषज्ञ ही तैयार कर सकता है। सुन्न करने वाली दवाओं के साथ दूध की बड़ी मात्रा अनिवार्य है, और भस्मों के साथ घी व मक्खन का उपयोग अत्यंत आवश्यक है। सबसे जरूरी बात यह है कि इन तीव्र और विषैली दवाओं की खुराक लंबे समय के अंतराल के बाद देनी चाहिए और हर खुराक का असर देखने के बाद ही दूसरी खुराक की अनुमति देनी चाहिए। हानिकारक लक्षणों के बावजूद इनका उपयोग करना नुकसानदेह होता है। जैसे 'बीश' एक तीव्र विष है जो बुखार उतारने के लिए उपयोग किया जाता है। इसकी कुछ ही खुराकों से बुखार उतर जाता है, लेकिन इसका उपयोग तब तक उचित नहीं जब तक अन्य सुरक्षित औषधियाँ उपलब्ध हों। यह भी याद रखें कि कोई भी औषधि तब तक उपयोग करना उचित नहीं है जब तक वह ऊपर बताए गए दस नियमों पर खरी न उतरती हो।

आयुर्वेद में सिद्ध औषधियों का उपयोग

आयुर्वेद में रोगों का आधार दोष, प्रकृति और शरीर के कार्यों पर रखा गया है। वात, पित्त और कफ ये तीन दोष (स्वस्थ तत्व) हैं। जब तक ये प्रकृति (स्वभाव) के अनुसार संतुलित रहते हैं, तब तक शरीर के कार्य सही चलते हैं। लेकिन जब ये बिगड़ जाते हैं, तो शरीर में रोग पैदा हो जाते हैं, जिसकी तीन स्थितियां होती हैं:

1. इन दोषों की प्रकृति खराब हो जाती है।
2. दोषों की मात्रा में कमी या अधिकता हो जाती है।
3. दोष अपना स्थान बदल लेते हैं।

उदाहरण के तौर पर पित्त का स्थान यकृत (लीवर) है, लेकिन यदि वहां कफ या वात की अधिकता हो जाए, तो रोग उत्पन्न होता है। इसी तरह कफ का

स्थान मस्तिष्क है, यदि वहां वात या पित्त बढ़ जाए, या वात का स्थान हृदय है और वहां कफ या पित्त बढ़ जाए, तो परिणाम रोग होता है।

पित्त को गर्म, वात को वायु (जिसका स्वभाव खुश्क है) और कफ को तर (गीला) कहा जाता है। ये किसी भी स्थिति में अकेले नहीं पाए जाते, बल्कि हमेशा मिश्रित रूप में रहते हैं। यदि इनमें से कोई एक कम हो जाता है तो दूसरा बढ़ जाता है, कभी दो बढ़ जाते हैं और तीसरा कम हो जाता है। इसी तरह ये अपना स्वभाव बनाते हैं। जैसे पित्त-वात (गर्म-खुश्क) और पित्त-कफ (गर्म-तर) आदि।

उपचार की स्थिति में वात, पित्त और कफ की प्रकृति को ठीक किया जाता है, उनकी कमी या अधिकता को संतुलित किया जाता है या उन्हें उनके सही स्थान पर वापस लाया जाता है, जिससे शरीर के कार्य ठीक हो जाते हैं। मगर आज के समय के कई वैद्य दोषों के कार्यों से पूरी तरह अवगत नहीं हैं। वे केवल रोगों के नाम सुनते हैं और उनके अनुसार बनी-बनाई औषधियां दे देते हैं, जिससे इस विद्या का नाम खराब होता है।

यह जानना चाहिए कि आयुर्वेद एक नियमित और सैद्धांतिक उपचार पद्धति है, जो पूरी तरह नियमों के अधीन काम करती है। इसमें सभी रोगों, लक्षणों और कारणों को दोषों के अधीन रखा गया है और उन्हीं के माध्यम से उन्हें समझा और ठीक किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, सिरदर्द तब तक कोई स्पष्ट रोग नहीं है जब तक यह न पता चले कि वह कफ के कारण है या पित्त के कारण। शरीर के कार्यों के बिगाड़ को दोषों के साथ समझना ही इस पद्धति की विशेषता है।

होम्योपैथी में सिद्ध औषधियों का उपयोग

होम्योपैथी में लक्षणों के आधार पर उपचार किया जाता है। जहाँ तक इसके लक्षणों का संबंध है, वे पूरी तरह व्यवस्थित, वैज्ञानिक और नियमों के अधीन प्राप्त किए जाते हैं। इसका सिद्धांत यह है कि स्वस्थ मनुष्य में औषधियों को अधिक मात्रा में देकर जो लक्षण पैदा होते हैं, यदि किसी रोगी में वैसे ही लक्षण पाए जाएं, तो वही औषधि उसे बहुत कम मात्रा में दी जाती है।

इन लक्षणों में शारीरिक और मानसिक स्थितियां, पूर्व के हालात, गति और स्थिरता के कार्य, स्थान और समय, आयु और आदतें, रोग की तीव्रता और कमजोरी जैसी तमाम बातों को ध्यान में रखा जाता है। इस प्रकार रोगी की पूरी स्थिति सामने आ जाती है और उपचार में निश्चित सफलता की संभावनाएं पैदा हो जाती हैं। होम्योपैथी की हर एकल औषधि लक्षणों के अनुसार एक सिद्ध औषधि है और यही इसकी विशेषता है।

जो लोग सही अर्थों में होम्योपैथी के जानकर नहीं हैं, उन्होंने लक्षणों को नजरअंदाज करके रोगों के नाम पर उपचार करना शुरू कर दिया है। यहाँ तक कि आजकल की होम्योपैथी पुस्तकों में भी यही स्थिति दिखाई देती है। उदाहरण के लिए, बुखारों के नाम तय कर दिए गए हैं जैसे टीबी, टाइफाइड और मलेरिया आदि, और उनके नीचे औषधियाँ लिख दी गई हैं। यह तरीका होम्योपैथी के नियमों के विरुद्ध है। बुखार की तपिश मात्र एक लक्षण है, इसके साथ अन्य लक्षणों को जोड़कर ही सही उपचार किया जा सकता है।

इसी तरह जुकाम, खांसी, दमा, निमोनिया, कब्ज, बवासीर, मधुमेह, स्वप्नदोष, शारीरिक कमजोरी, लकवा और हृदय व मस्तिष्क की कमजोरी जैसे रोगों के नाम के नीचे औषधियाँ लिख देना होम्योपैथी के मूल सिद्धांतों के बिल्कुल विपरीत है। इसी तरह होम्योपैथी में मानव शरीर के सभी लक्षणों को सोरा, सिफलिस और साइकोसिस में विभाजित किया गया है, मगर अक्सर उपचार के

समय इन्हें ध्यान में नहीं रखा जाता। बल्कि मिले-जुले लक्षण लेकर उपचार किया जाता है जिससे अक्सर गलतियाँ होती हैं। लक्षण लेने में क्रिया (Action) के लक्षणों को प्रतिक्रिया (Reaction) के साथ मिला दिया जाता है जो एक गंभीर त्रुटि है।

चिकित्सा पद्धति कानून मुफ्रेद अज़ा (طب پاکستانی) में सिद्ध औषधियों की विशेषता

चिकित्सा पद्धति कानून मुफ्रेद अज़ा (طب پاکستانی) में सिद्ध औषधियों (मुजर्रबात) को तैयार करने, उनके विश्लेषण, मिश्रण और रोगों व स्वभाव के साथ उनके तालमेल में ऐसी कुशलता और प्राकृतिक नियमों का उपयोग किया गया है जिसका दसवां हिस्सा भी किसी अन्य चिकित्सा पद्धति में नहीं मिलता। यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है, बल्कि यह तर्क, अवलोकन और दर्शन की पराकाष्ठा है। छोटे से छोटा अनुभव भी तर्क और दर्शन के बिना समझना कठिन है। तर्क (दलीलों) और दर्शन (सत्य की खोज) के लिए एक ऐसा मस्तिष्क होता है जो बुद्धि के अधीन विचार करता है। यह आवश्यक नहीं है कि विचार केवल वही करें जो तर्क और दर्शन के विशेषज्ञ हों, बल्कि हर बुद्धिमान व्यक्ति सोच-विचार करता है। लेकिन यदि बुद्धिमान व्यक्ति तर्क और दर्शन के सिद्धांतों को जानता हो, तो वह अपने मस्तिष्क का सही उपयोग कर सकता है।

यही कुशलता चिकित्सा पद्धति कानून मुफ्रेद अज़ा (طب پاکستانی) के अनुभवों और निरीक्षणों में पूरी तरह पाई जाती है। इन्हीं अनुभवों और सत्य की पहचान के आधार पर इसके नियम और सिद्धांत तैयार किए गए हैं, जो पूरी तरह प्रकृति

के कानून और कुदरत के तरीकों के अनुकूल हैं। सिद्ध औषधियों (मुजर्रबात) का संबंध भी अनुभवों से है, इसलिए इस पद्धति की औषधियाँ प्रकृति के अनुसार होने के कारण वह पूर्णता रखती हैं जो कहीं और नहीं मिलती।

चिकित्सा पद्धति कानून मुफ्रेद अज़ा (طب پاکستانی) में सिद्ध औषधियों का विभाजन

इस पद्धति में सिद्ध औषधियों को तीन भागों में बांटा गया है:

1. भोज्य सिद्ध औषधियाँ (आहार द्वारा उपचार)
2. एकल औषधियाँ
3. मिश्रित औषधियाँ
4. भोज्य सिद्ध औषधियाँ यानी आहार द्वारा उपचार

चिकित्सा पद्धति कानून मुफ्रेद अज़ा (طب پاکستانی) में भोजन द्वारा उपचार एक ऐसी विशेषता है जो किसी अन्य पद्धति में नहीं मिलती। यह एक ऐसा उपचार मार्ग है जिस पर न कोई प्रतिबंध लगाया जा सकता है और न कोई सरकार इसे रोक सकती है। भोजन द्वारा उपचार की तीन स्थितियां हैं:

1. भोजन के उपयोग को रोक देना।
2. भोजन के प्रकार को बदल देना।
3. भोजन के विशेष तत्वों का उपयोग कराना।

भोजन के उपयोग को रोक देना:

यदि कोई चिकित्सक या आम व्यक्ति भी इन तथ्यों को समझ ले तो उसका उपचार चमत्कार बन जाता है। भोजन के विषय में सत्य यह है कि वह

शक्ति का मित्र भी है और शत्रु भी। स्वास्थ्य की स्थिति में सही तरीके से लिया गया भोजन शक्ति देता है, इसलिए वह मित्र है। लेकिन रोग की स्थिति में गलत तरीके से लिया गया भोजन बहुत बड़ा शत्रु है। जब शरीर में दूषित पदार्थ और संक्रमण मौजूद हो, तो भोजन उस संक्रमण को बढ़ाने में मदद करता है। इससे शरीर पर दबाव बढ़ जाता है। यह दूषित पदार्थ शरीर के लिए न केवल बेकार है बल्कि हानिकारक भी है, इसलिए इसे बढ़ाना बहुत बड़ी गलती है। ऐसी स्थिति में भोजन को तब तक बंद रखना चाहिए जब तक पेट का संक्रमण और दूषित पदार्थ कम न हो जाए।

ऐसी स्थिति में कुछ लोग भूख बर्दाश्त नहीं कर पाते। उनके लिए शहद का हल्का गर्म पानी, सब्जियों या मांस का शोरबा, बिना दूध वाली चाय या दूध का पानी (फटा हुआ दूध) देते रहना चाहिए। इससे भूख की बेचैनी कम हो जाती है। जब भोजन मिलना बंद होता है तो अंगों पर से बोझ कम हो जाता है और वे अपना कार्य सही ढंग से करने लगते हैं। इसके बाद शरीर की आंतरिक शक्ति (कुदरती व्यवस्था) रक्त के दबाव को ठीक कर देती है और रोग में बहुत जल्द लाभ होने लगता है। इसके बाद यदि दवा की आवश्यकता भी हो, तो बहुत थोड़ी दवा से तुरंत आराम मिल जाता है।

भोजन के प्रकार को बदल देना:

इस स्थिति में भोजन की गुणवत्ता, मात्रा और उपयोग करने का तरीका बदल दिया जाता है। भोजन को रोगों और लक्षणों के विपरीत इस प्रकार व्यवस्थित करना चाहिए कि वह शरीर की जरूरत के अनुसार काम करे। इससे एक तरफ सुस्त अंग जागृत हो जाते हैं और रक्त में जरूरी सुधार शुरू हो जाता है। अंगों के कार्यों में संतुलन आने से रक्त का संचार ठीक हो जाता है और धीरे-धीरे स्वास्थ्य प्राप्त होता है।

भोजन के विशेष तत्वों का उपयोग कराना:

इसमें भोजन के केवल उन्हीं विशेष अंगों को उपयोग किया जाता है जिनकी शरीर में कमी हो। उदाहरण के तौर पर पनीर का पानी (माउल जबीन), दूध, पानी या मक्खन और घी, या केवल पनीर और दही आदि का लगातार सेवन कराया जाए। इसी तरह केवल मांस का शोरबा या भुना हुआ मांस और कबाब, या सब्जियों का शोरबा और भुनी हुई सब्जियां। इसी नियम पर दालें भी इस्तेमाल कराई जा सकती हैं। विशेष रूप से हलवा और फिरनी भी दी जा सकती है। मगर ध्यान रहे कि एक समय में एक ही प्रकार का भोजन देना चाहिए और उसके साथ रोटी, चावल, दलिया या ब्रेड बिल्कुल नहीं होनी चाहिए। ऐसी खुराक से एक तरफ खास तरह की शक्ति और पोषण मिलना शुरू होता है और दूसरी तरफ सुस्त अंग जागकर अपना काम संतुलित कर लेते हैं।

इस प्रकार के उपचार में वही भोजन उपयोग किया जाता है जो हम दैनिक जीवन में खाते हैं। इसमें अधिकांश औषधीय भोजन हैं, जैसे गर्म मसाले जो खाने में डाले जाते हैं, या अदरक, टमाटर, हरा व सूखा धनिया और पुदीना आदि।

हमारे दैनिक आहार और उनके प्रभाव

हमारे दैनिक भोजन में निम्नलिखित वस्तुएं शामिल हैं:

1. हर प्रकार का दूध, बकरी से लेकर भैंस तक।
2. हर प्रकार का मांस, जिसमें पक्षी, मछली और अंडे भी शामिल हैं।
3. हर प्रकार के फल, सूखे मेवे, सब्जियां, दालें और अनाज। इसी तरह हर प्रकार की मिठाइयां, मुरब्बे और दलिया आदि। पेय पदार्थों में शरबत, अर्क, नींबू सोडा और चाय आदि का उपयोग किया जा सकता है।

हमारे अनुभवों के अनुसार, इस विधि से हर प्रकार के रोगी ठीक किए जा सकते हैं। साधारण रोग जैसे जुकाम, खांसी और बुखार तो कुछ ही दिनों में ठीक हो जाते हैं। हमने कठिन रोगों जैसे तपेदिक (टीबी), लकवा, मधुमेह (शुगर) और शारीरिक कमजोरी जैसे रोगों का उपचार बड़ी सफलता से किया है। जो व्यक्ति भोजन के गुणों से परिचित है, वह बुद्धि और विवेक से काम लेकर इन अनुभवों से आसानी से लाभ उठा सकता है। एलोपैथी के मुकाबले भोजन द्वारा उपचार (غذائی مجربات) में बहुत अधिक सफलता प्राप्त की जा सकती है।

चिकित्सा पद्धति कानून मुफ़्रेद अज़ा (طب پاکستانی) में भोजन के मसले पर सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उपचार के दौरान सबसे पहले भोजन के बोझ को शरीर और अंगों से दूर करना पड़ता है। इसकी तीन स्थितियां हैं:

पहली: न पचने वाले भोजन के अंश को शरीर से खत्म करना जो सड़न या खमीर की शक्ल अख्तियार कर चुका है। क्योंकि यदि रोगी को नया भोजन दिया जाएगा, तो वह पुराने सड़े हुए पदार्थ से मिलकर खुद भी खराब हो जाएगा। यहाँ तक कि कभी-कभी दवा भी इस सड़न में मिलकर अपना असर खो देती है। इसलिए सबसे पहले शरीर से इस गंदगी के बोझ को खत्म करना जरूरी है।

दूसरी: अनावश्यक भोजन को रोकना, यानी ऐसा भोजन जिसका रोग दूर करने से कोई संबंध नहीं है बल्कि उससे रोग बढ़ना निश्चित है। ऐसे भोजन को रोकना बहुत जरूरी है, वरना सबसे अच्छी दवा भी बेअसर हो जाती है।

तीसरी: लाभदायक दवा का उपयोग भोजन के स्वभाव के अनुसार होना चाहिए। जो चिकित्सक इन तथ्यों को ध्यान में रखते हैं, उनके रोगियों को निश्चित रूप से आरोग्य प्राप्त होता है। यह इस पद्धति की विशेषता है जो एलोपैथी में नहीं मिलती।

एकल औषधियों द्वारा उपचार (مفرداتی علاج)

जब भोजन द्वारा उपचार से प्रकृति काबू में न आए और अंगों के कार्य ठीक न हों, विशेष रूप से शरीर के स्वभाव और दोषों का संतुलन न बन सके, तो भोजन के बजाय औषधियों से उपचार करना अनिवार्य हो जाता है। शरीर और रक्त में जिस तीव्रता की अवस्था और अंगों के कार्यों में जिस तेज़ी की आवश्यकता होती है, वह केवल भोजन से पैदा करना कठिन है। लेकिन औषधियों के साथ भोजन के नियमों का पालन करने से बहुत जल्द सफलता मिलती है।

औषधियों द्वारा उपचार में यह तथ्य सर्वमान्य है कि एकल औषधियों (एक समय में एक ही जड़ी-बूटी) से उपचार करना अधिक उत्तम और श्रेष्ठ है। एकल औषधि से उपचार का उद्देश्य यह है कि किसी रोग और उसके सभी लक्षणों को केवल एक ही दवा से दूर करने का प्रयास किया जाए। यानी रोग की स्थिति और उसके सभी लक्षण, चाहे वे रासायनिक हों या यांत्रिक, और विशेष रूप से शरीर के जहरीले पदार्थ केवल एक ही औषधि के उपयोग से दूर हो जाएं।

ऐसी अनगिनत औषधियां हैं जो अकेले ही अपने अंदर रोगनाशक और विषनाशक प्रभाव रखती हैं। लेकिन इनसे वही चिकित्सक पूरी तरह लाभ उठा सकता है जिसे जड़ी-बूटियों के विज्ञान (علم المفردات) पर असाधारण पकड़ हो। एक विशेष बात यह है कि एकल औषधियों से जहाँ लाभ निश्चित होता है, वहां उनके गलत उपयोग से कोई बड़ा नुकसान भी नहीं होता। इसलिए कोशिश यही होनी चाहिए कि एकल औषधियों द्वारा उपचार को प्राथमिकता दी जाए।

चिकित्सा पद्धति कानून मुफ्रेद अज़ा (طب پاکستانی) और औषधियों का विश्लेषण

इस पद्धति के नियम के अनुसार हर एकल औषधि चार तत्वों और अवस्थाओं का मिश्रण होती है। इनके अलावा हर औषधि में ऐसे सूक्ष्म तत्व होते हैं जो मिलकर पदार्थ और शरीर का स्वरूप धारण करते हैं, इन्हें तत्व

(Elements) कहना बेहतर है। इससे हम आधुनिक विज्ञान के बहुत करीब हो जाते हैं।

इस पद्धति की कुशलता यह है कि औषधियों में पाए जाने वाले इन प्रभावशाली तत्वों को अलग करके उपचार में उपयोग किया जाता है। इस प्रकार आवश्यकता के अनुसार सक्रिय तत्वों और विशेष सत् (जौहर) का उपयोग करके चिकित्सा विज्ञान में पूर्णता प्राप्त की गई है, जो एलोपैथी में बिल्कुल नहीं पाई जाती। वास्तविकता यह है कि वे यह कुशलता पैदा ही नहीं कर सकते क्योंकि वे अवस्थाओं, स्वभाव के प्रभावों और तत्वों के प्राचीन विज्ञान से पूरी तरह अवगत नहीं हैं।

<u>औषधियों के विश्लेषण का उपयोग</u>

औषधियों के सक्रिय तत्वों को कई तरीकों से प्राप्त करके उपयोग किया जाता है। जैसे: कुछ औषधियों को पानी में भिगोकर उनका अर्क प्राप्त करना, कुछ को पानी में उबालकर काढ़ा (जोशांदा) बनाना। इसी तरह औषधियों का लुआब, गोंद और अन्य सक्रिय अंशों से लाभ उठाया जाता है। कभी औषधियों के सक्रिय तत्वों को अर्क के रूप में अलग किया जाता है, कभी उनके नमक, रूह और सुगंधित तेल निकाले जाते हैं। कुछ औषधियों से सिरका या तेजाब बनाना, कुछ से उनकी मिठास अलग करके चीनी बनाना और फिर शरबत तैयार करना, कुछ औषधियों को पानी में घोंटकर उनका दूध (शहीरा) बनाना आदि शामिल हैं।

<u>एकल औषधि और उसके तत्व (जौहर) में अंतर</u>

आमतौर पर यह एक गलतफहमी पाई जाती है कि औषधि का जो निचोड़ या सत् निकाला जाता है, वही उस दवा का एकमात्र प्रभावशाली हिस्सा है। ऐसा हरपिज़ नहीं है। औषधि के ये विभिन्न रूप उसके अलग-अलग तत्वों को प्रकट करते हैं। किसी औषधि के निचोड़ का प्रभाव उसके सत् या तत्व से बहुत हद तक अलग हो सकता है। यह सही है कि उनके बुनियादी प्रभाव मिलते-जुलते हैं,

लेकिन उनके काम करने के तरीके और रासायनिक क्रियाओं में अंतर होता है। जैसे किसी हिस्से में खटास अधिक होती है, किसी में क्षार (अल्कली) का असर होता है और किसी में चूना या लोहे का प्रभाव अधिक होता है।

जैसे दूध का उदाहरण हमारे दैनिक जीवन में मौजूद है। चिकित्सक कभी दही का उपयोग कराता है और कभी दही का पानी उपयोगी समझता है। इसी तरह कभी मक्खन, कभी घी और कभी दूध का पानी इस्तेमाल कराना पड़ता है। यही स्थिति पनीर की भी है। दूध का पाउडर भी एक अलग चीज़ है, इसे शुद्ध दूध नहीं समझना चाहिए क्योंकि इसे सुखाने की प्रक्रिया में पानी के साथ इसके बहुत से नमक और तत्व उड़ जाते हैं और यह केवल एक खुश्क पदार्थ रह जाता है। विदेश से आने वाले सूखे दूध में चिकनाई और पचाने वाले नमक की कमी हो जाती है और इसमें कैल्शियम (चूना) बढ़ जाता है। इसलिए इसके उपयोग से शरीर में बदहजमी और खुश्की पैदा हो जाती है। यह छोटे बच्चों को बहुत नुकसान पहुँचाता है, इसलिए इसे बच्चों से दूर रखना चाहिए। हाँ, जिन रोगियों में कैल्शियम की कमी हो, वे इसका उपयोग कर सकते हैं।

औषधि और उनके घटकों का उपयोग

एकल औषधियों (मफ्रेद जड़ी-बूटी) को आप जिस रूप में चाहें उपयोग कर सकते हैं, जैसे चूर्ण (सफ़ूफ), घोल या गोलियाँ (हबूब)। लेकिन एकल औषधि के जिन घटकों या अंशों को जिस रूप में अलग किया गया है, उन्हें उसी रूप में उपयोग कराना चाहिए। यदि उन्हें किसी अन्य रूप में उपयोग किया गया तो उनके कार्य और प्रभाव बदल जाएंगे। उनके उपयोग में इस अंतर को ध्यान में रखें।

एकल औषधि में उसके कई प्रभावशाली तत्व (जौहर) अन्य तत्वों और सामग्री के साथ इस तरह घुले होते हैं कि उनके कार्यों में अत्यधिक तेज़ी नहीं आती और नुकसान का खतरा नहीं रहता, क्योंकि उनके साथ सुधार करने वाले

तत्व (मुस्लेह) भी मौजूद होते हैं। लेकिन औषधि का मुख्य सक्रिय तत्व अपने आप में बहुत तेज़ होता है, इसलिए उसके गलत उपयोग से नुकसान का डर रहता है। एकल औषधियों द्वारा उपचार का यह क्षेत्र अपने अंदर वह कुशलता रखता है जिसका दसवां हिस्सा भी एलोपैथी में नहीं पाया जाता।

3. मिश्रित औषधियों द्वारा उपचार (علاج بالمركبات)

मिश्रित औषधियों (मुरक्बबात) की परिभाषा कुछ इस प्रकार है:

प्रकृति में पाए जाने वाले खनिज, वनस्पतियां और जीव-जंतु, जिनमें दवा बनाने की प्रक्रिया से पहले कोई बदलाव नहीं किया गया हो, उन्हें चिकित्सा की भाषा में एकल औषधि (मफ्रेद दवा) कहा जाता है। जब इन प्राकृतिक और मौलिक एकल औषधियों को आपस में मिलाया जाता है, तो उसे 'मिश्रित' (मुरक्बब) कहा जाता है। यह मिश्रण दो या दो से अधिक औषधियों का हो सकता है।

जैसा कि एकल औषधियों के वर्णन में स्पष्ट किया गया है, हर प्राकृतिक औषधि वास्तव में अवस्थाओं और तत्वों से मिलकर बनी है, लेकिन हम उन्हें एकल औषधि ही कहते हैं। हम रोगों के उपचार में एकल औषधियों और उनके रासायनिक सक्रिय तत्वों, दोनों का उपयोग करते हैं।

मिश्रित औषधियों (मुरक्बबात) का वर्गीकरण

मिश्रित औषधियाँ दो प्रकार की होती हैं:

पहला: साधारण मिश्रण (आमेज़ा): जब दो या दो से अधिक औषधियों को बिना किसी रासायनिक बदलाव के आपस में मिला दिया जाए, तो उसे साधारण मिश्रण कहते हैं। इसके लिए यह जरूरी है कि इसके घटकों को किसी न किसी तरीके से दोबारा अलग किया जा सके।

दूसरा: रासायनिक मिश्रण (इम्तेज़ाज): दो या दो से अधिक औषधियों का ऐसा मेल जिसमें रासायनिक प्रक्रिया (इस्तहाला) के जरिए उन्हें इस तरह एक जान कर दिया जाए कि फिर उनके घटकों को अलग न किया जा सके। यानी ऐसे मिश्रण जिन्हें तैयार करने के लिए आग की गर्मी या विपरीत औषधियों की आपसी प्रतिक्रिया का उपयोग किया गया हो और वे मिलकर एक नया रूप धारण कर लें।

(قانون مفرد اعضاء) طب پاکستانی के मिश्रित नुस्खे

इस पद्धति में दो प्रकार के मिश्रण तैयार किए जाते हैं:

1. साधारण मिश्रण: जैसे चूर्ण (सफ़ूफ), गोलियाँ (हबूब), चटनी और चाटने वाली दवाएं (लऊक) आदि।

2. रासायनिक मिश्रण: जैसे अर्क, शरबत, माजून और खमीरा आदि।

चिकित्सा पद्धति कानून मुफ्रेद अज़ा (طب پاکستانی) के सिद्ध नुस्खे

इस सच्चाई को अच्छी तरह समझ लें कि सिद्ध नुस्खे (मुजर्रबात) उन्हीं को कहा जाता है जो बार-बार के अनुभवों, निरीक्षणों, दलीलों और बुद्धि की कसौटी पर सही साबित हुए हों। एलोपैथी के कुछ शौकीन, जिन्हें इस पद्धति की खूबियों का ज्ञान नहीं है, वे इसके नुस्खों को बेमानी और अर्थहीन समझते हैं और कहते हैं कि यह चिकित्सा पद्धति गैर-वैज्ञानिक है। लेकिन हकीकत यह है कि इस पद्धति में ऐसे-ऐसे सिद्ध नुस्खे पाए जाते हैं जिनका जवाब आज भी किसी दूसरी चिकित्सा पद्धति के पास नहीं है।

सिद्ध नुस्खों की तकनीकी विशेषताएं

चिकित्सा पद्धति कानून मुफ्रेद अज़ा (طب پاکستانی) ने एक तरफ रोगों, लक्षणों, अंगों के कार्यों और रक्त के स्वभाव व दोषों (अखलात) का वर्गीकरण

किया है, तो दूसरी तरफ एकल और मिश्रित औषधियों के प्रभावों और लाभों को भी उन्हीं के अनुसार विभाजित कर दिया है। इसका उद्देश्य यह है कि रोग और औषधि के बीच तालमेल बिठाने में आसानी हो जाए और कम ज्ञान रखने वाला व्यक्ति भी इनसे लाभ उठा सके। इसके अलावा लंबे अनुभवों के आधार पर ऐसी विशेष शब्दावलियां (Terms) तैयार की गई हैं जिनका संबंध सीधे शरीर के अंगों से है। जब इन विशेष शब्दों का नाम लिया जाता है, तो उनसे संबंधित अंगों के रोग तुरंत ध्यान में आ जाते हैं। ये तकनीकी शब्द इस पद्धति की महानता का प्रमाण हैं। जो चिकित्सक इन पर पकड़ रखते हैं, उन्हें न केवल अपने काम में महारत हासिल होती है बल्कि उनके क्लिनिक (मतब) भी अत्यंत सफल रहते हैं। यह सब इस पद्धति का अनमोल खजाना और कला की पराकाष्ठा है।

मानव शरीर के तीन विष

मनुष्य के शरीर में तीन प्रकार के विष पाए जाते हैं:

1. आतिशकी विष (सिफलिस)
2. बवासीरी या सौदावी विष
3. सुजाकी विष (गोनोरिया)

मानव विष की उत्पत्ति

शरीर में विष पैदा होने के तीन मुख्य कारण हैं:

1. अंगों का विकार:

जब मानव शरीर में कोई रोग पैदा होता है, तो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्युनिटी) और आंतरिक जीवन शक्ति (वाइटल फोर्स) उसे दूर करने का प्रयास करती है। जब यह शक्ति कमजोर होने लगती है, तो उस रोग का विष रक्त में इकट्ठा होना शुरू हो जाता है। यहाँ तक कि वह शरीर पर हावी हो जाता है और धीरे-धीरे शरीर को नष्ट कर देता है।

2. छुआछूत (संक्रमण):

दूसरी स्थिति यह है कि यही विष किसी दूसरे स्वस्थ शरीर पर असर डाले और उस शरीर में भी बिल्कुल उसी प्रकार के जहरीले प्रभाव और लक्षण पैदा कर दे।3. वंशानुगत (विरासत):

तीसरी स्थिति यह है कि जिस मनुष्य में विष पाया जाए, उसकी संतान में भी वही जहरीले प्रभाव और लक्षण पाए जाएं। ये लक्षण बिल्कुल वही होते हैं जो पिता में मौजूद थे।

तीन मानवीय विष की व्याख्या

यहाँ यह बात नोट कर लें कि आतिशक (सिफलिस रोग) अलग चीज़ है और आतिशकी विष अलग चीज़ है। इसी तरह बवासीर अलग है और बवासीरी विष अलग है। सुजाक (गोनोरिया रोग) अलग है और सुजाकी विष अलग है।

याद रखें, आतिशक, बवासीर और सुजाक ये शुरुआती लक्षण हैं जो शरीर पर दिखाई देते हैं। लेकिन जब ये लक्षण लगातार बने रहते हैं और सही उपचार नहीं होता, तो सड़न और खमीर से ऐसा विकार पैदा होता है कि ये रोग विष का रूप धारण कर लेते हैं। जब ये तीनों विष बन जाते हैं, तो इनका सबसे अधिक प्रभाव प्रजनन अंगों (Genitals) पर होता है।

1. आतिशकी विष:

आतिशक वास्तव में बलगमी पदार्थ होता है जिसमें विकार आने के बाद आतिशकी विष पैदा होता है। जब तंत्रिका तंत्र (नर्वस सिस्टम) में तेज़ी आती है और वहां सड़न पैदा होती है, तो वह आतिशकी विष में बदल जाता है।

आतिशकी विष के लक्षण:

शरीर पर सफेद छाले, सफेद दाग, ब्रेन हैमरेज, पुरानी खांसी, पुराना नजला-जुकाम, शुगर और पेशाब की अधिकता।

2. बवासीरी विष:

बवासीर वास्तव में सौदावी पदार्थ (खुश्की) है, जिसमें विकार आने के बाद बवासीरी विष पैदा होता है। यह हृदय और मांसपेशियों में तेज़ी पैदा करता है और वहां उठने वाला खमीर ही बवासीरी विष में बदल जाता है।

बवासीरी विष के लक्षण:

शरीर में अत्यधिक खुश्की पैदा होना जैसे सूखा नजला, दमा, वजन का कम होना, शरीर में खुजली, बवासीर और शरीर के निचले हिस्से का लकवा।

3. सुजाकी विष:

सुजाक वास्तव में सफ़रावी पदार्थ (पित्त) होता है जो सड़न पैदा करके सुजाकी विष का रूप ले लेता है। यह यकृत (लीवर) और ग्रंथियों में तेज़ी पैदा करता है और वहां का विकार सुजाकी विष में बदल जाता है।

सुजाकी विष के लक्षण:

पित्त की थैली में पथरी, लीवर में सूजन, गुर्दों में पथरी, पेशाब का कम आना, उच्च रक्तचाप (हाई ब्लड प्रेशर) और प्रोस्टेट ग्रंथि की सूजन।

नोट:

इन तीनों रोगों का प्रभाव पूरे शरीर में होता है, लेकिन इनका सबसे अधिक शिकार प्रजनन अंग होते हैं।

शरीर की उत्तेजना	एसिड या अम्ल	विष का प्रकार
नाड़ी-मांसपेशी उत्तेजना	नाइट्रिक एसिड	आतिशकी विष
मांसपेशी-नाड़ी उत्तेजना	एसिटिक एसिड	क्षय रोग या टीबी का विष
मांसपेशी-ग्रंथि उत्तेजना	सल्फ्यूरिक एसिड	बवासीरी विष
ग्रंथि-मांसपेशी उत्तेजना	सल्फ्यूरिक और नमक का एसिड	फेफड़ों की टीबी का विष
ग्रंथि-नाड़ी उत्तेजना	हाइड्रोक्लोरिक एसिड	सुजाकी विष
नाड़ी-ग्रंथि उत्तेजना	कार्बोलिक एसिड	कोढ़ या कुष्ठ का विष

مفردات جدیدہ

جدید سائنسی تحقیقات پر مبنی جڑی بوٹیوں کے تعارف اور فوائد پر
بہترین کتاب، جس میں جڑی بوٹیوں کا مزاج، طب قدیم اور جدید
سائنسی ریسرچ کے مطابق ان کے فوائد و استعمال کو لکھا گیا ہے۔

تالیف:

حکیم سید عبدالوہاب شاہ شیرازی